हिंदी व्याकरण भारती

Teacher's Manual
6–8

BLUE SKY
BOOKS INTERNATIONAL
2647, Roshan Pura, Nai Sarak, Delhi-110006
Phone : 98994 23454, 98995 63454
E-mail : blueskybooksinternational@gmail.com

हिंदी व्याकरण भारती-6

1 भाषा, लिपि और व्याकरण

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. अपने मन के विचारों को प्रकट करने तथा दूसरों के विचारों को समझने के साधन को भाषा कहते हैं।
2. भाषा के दो प्रमुख रूप हैं – मौखिक और लिखित।
3. भाषा को प्रयोग केवल मनुष्य ही करते हैं। पशु-पक्षी द्वारा उच्चारित ध्वनियों को भाषा नहीं, बोलियाँ कहा जाता है।

सोचो और लिखो-

1. **मौखिक भाषा**–मुँह से बोलकर अपने विचारों को प्रकट करना तथा दूसरे व्यक्ति की सुनकर उसके विचारों से अवगत होने वाली भाषा मौखिक भाषा कहलाती है।
   लिखित भाषा–लिखकर दूसरों को अपने विचारों से अवगत कराना व पढ़कर दूसरों के विचारों से अवगत होना लिखित भाषा कहलाती है।
2. किसी राष्ट्र के अधिकांश लोग जिस भाषा को प्रयोग करते हैं, वह राष्ट्र की राष्ट्रभाषा कहलाती है, जबकि राष्ट्र के सरकारी काम-काज के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे राजभाषा कहते हैं।
3. मौखिक भाषा को लिखित रूप देने के लिए जिन चिह्नों को प्रयोग किया जाता है, उसे लिपि कहा जाता है।
4. भाषा को शुद्ध रूप से बोलने, लिखने और पढ़ने के लिए व्याकरण का प्रयोग किया जाता है।
5. व्याकरण के प्रमुख विभाग हैं-
   वर्ण-विचार–इसमें सभी वर्णों के आकार, उच्चारण, वर्गीकरण तथा उनके भेदों आदि पर विचार किया जाता है।
   शब्द-विचार–इसमें शब्दों के स्वरूप, भेद, उत्पत्ति तथा उनकी रचना संबंधी नियमों की जानकारी पर विचार किया जाता है।
   वाक्य-विचार–इसमें वाक्य के स्वरूप, संबंध, रचना तथा भेदों आदि पर विचार किया जाता है।

ख. 1. मातृभाषा 2. देवनागरी 3. पत्र-लेखन 4. हिंदी

ग. 1. ✔ 2. ✗ 3. ✔ 4. ✔ 5. ✗ 6. ✔

घ. 1. राष्ट्रभाषा – राष्ट्र के अधिकांश लोगों द्वारा बोली गई भाषा
2. मातृभाषा – परिवार में बच्चे द्वारा सबसे पहले सीखी गई भाषा

3. मौखिक भाषा – अपनी बात को बोलकर कहना या दूसरों की बात को सुनकर समझना।
4. लिखित भाषा – अपनी बात को लिखकर व्यक्त करना।
5. लिपि – मौखिक भाषा को लिखित रूप देने के लिए चिह्नों का प्रयोग करना।
6. व्याकरण – भाषा को शुद्ध रूप से लिखने की जानकारी देने वाला शास्त्र।

ड. 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा 3. मौखिक भाषा
4. लिखित भाषा 5. मौखिक भाषा 6. लिखित भाषा

रोचक कार्य

स्वयं करें।

2 वर्ण–विचार

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. भाषा में प्रयुक्त सबसे छोटी ध्वनि या चिह्न वर्ण कहलाता है।
2. वर्णों के व्यवस्थित व क्रमबद्ध समूह को रखने पर वर्णमाला बनती है।
3. वर्ण दो प्रकार के होते हैं – स्वर और व्यंजन।
4. जब स्वरों को व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखते हैं, तो स्वरों के स्थान पर स्वरों के लिए निश्चित चिह्नों का प्रयोग करते हैं। ये चिह्न ही स्वरों की मात्राएँ कहलाते हैं।

सोचो और लिखो–

1. **ह्रस्व स्वर** – जिन स्वरों का उच्चारण बहुत कम समय अर्थात् एक मात्रा काल में होता है, उन्हे ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये चार हैं–अ, इ, ऊ, ऋ।

   दीर्घ स्वर – जिन स्वरों का उच्चारण ह्रस्व स्वरों अर्थात् दो मात्रा काल में होता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये सात हैं – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
2. **अनुस्वार (ं)** – अनुस्वार का प्रयोग पंचम वर्ण के स्थान पर बिंदु के रूप में किया जाता है। इसका उच्चारण करते समय हवा केवल नाक से निकलती है।

   अनुनासिक (ँ) –अनुनासिक का प्रयोग चंद्रबिंदु के रूप में किया जाता है। इसका उच्चारण मुख व नासिका दोनों से होता है।
3. व्यंजन के तीन भेद होते हैं – स्पर्श व्यंजन, अंत:स्थ व्यंजन और ऊष्म व्यंजन।

ख. 1. संयुक्त व्यंजन 2. दोनों 3. अ 4. स्पर्श

ग. 1. ✔ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✗

घ. 1. रेफ़ 2. 25 3. संयुक्त, व्यंजन
4. विशिष्ट 5. वर्णमाला

ड. 1 विज्ञान – व् + इ + ज् + ञ + आ + न् + अ
2. समस्या – स् + अ + म् + अ + स् + य् + आ
3. संख्या – सं + अं + ख् + य् + आ

4. आनंद – आ + न् + अं + द् + अ
5. हिमालय – ह् + इ + म् + आ + ल् + अ + य + अ

च. 1. च्च – बच्चा सच्चा कच्चा उच्च
2. त्त – छत्ता भत्ता गत्ता खत्ता
3. म्म – चम्मच सम्मुचय उपसम्मुचय सम्मेलन
4. ल्ल – मोहल्ला हल्ला रसगुल्ला प्रफुल्लित

रोचक कार्य

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
					क वर्ग		क	ख	ग	घ	ङ.
	चवर्ग		च	छ	ज	झ	ञ				
					ट वर्ग		ट	ठ	ड	ढ	ण
	त वर्ग		त	थ	द	ध	न				
					प वर्ग		प	फ	ब	भ	म
	अंत:स्थ व्यंजन		य	र	ल	व					
					उष्म व्यंजन		श	ष	स	ह	
	संयुक्त व्यंजन		क्ष	त्र	ज्ञ	श्र					

3 शब्द–विचार

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं, लेकिन जब शब्दों को वाक्य में प्रयोग किया जाता है, तो शब्द पद बन जाते हैं।
2. शब्दों का वर्गीकरण रचना, उत्पत्ति, अर्थ व प्रयोग के आधार पर किया गया है।

सोचो और लिखो–

1. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के पाँच भेद होते है–तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी और संकर।
2. वे शब्द, जो परंपरा से किसी निश्चित अर्थ को प्रकट करते आ रहे हैं और जिनके सार्थक खंड नहीं किए जा सकते, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं।

   योगरूढ़ शब्द यौगिक व रूढ़ दोनों होते हैं। ये शब्द दो शब्दों के योग से बनते हैं, परंतु किसी निश्चित अर्थ के लिए रूढ़ होते हैं। इनके सार्थक खंड नहीं किए जा सकते हैं।
3. अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं–सार्थक शब्द और निरर्थक शब्द।

4. जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक व काल के अनुसार कुछ परिवर्तन आ जाता है, विकारी शब्द कहलाते हैं।

ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, कारक व काल के कारण कोई परिवर्तन नहीं आता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

ख. 1. स्थान 2. पुर्तगाली 3. चक्षु 4. तत्सम

ग. 1. तत्सम् 2. तत्सम् 3. विकारी 4. तद्भव 5. विलोम

घ.

रूढ़	**यौगिक**	**योगरूढ़**
चाँद, किताब	राजमहल, पुस्तकालय	दशानन, वीणापाणि
सूर्य, घर	विद्यालय, नीलकंठ	विद्यार्थी, लंबोदर
पेड़		पाठशाला, पीतांबर

ड. 1. मस्तक – माथा 2. रात्रि – रात

3. सर्प – साँप 4. स्वर्ण – सोना

5. अग्नि – आग 6. आम्र – आम

रोचक कार्य

देशज – थैला साबुन जूता चारपाई लोटा पगड़ी

विदेशी – चीनी आसमान डॉक्टर औलाद

4 संधि

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. दो वर्णों के परस्पर मेल से आया परिवर्तन संधि कहलाता है।
2. संधि से बने हुए शब्दों को पुनः अलग करने की प्रक्रिया संधि विच्छेद कहलाती है।

सोचो और लिखो–

1. संधि के प्रमुख तीन भेद होते हैं – स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि।
2. दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार स्वर संधि कहलाता है।

   किसी व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर उत्पन्न विकार व्यंजन संधि कहलाता है।
3. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं – दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण् संधि और अयादि संधि।

ख. 1. दीर्घ संधि 2. दीर्घ संधि 3. नयन 4. मनः + रंजन

ग. 1. न्यायालय 2. नरेश 3. राजेन्द्र 4. रेखांकित

घ. 1. अति + यंत 2. स्वः + आगत 3. गै + अक 4. निः + रस

रोचक कार्य

स्वयं करें।

5 संज्ञा

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. किसी भी वस्तु, व्यक्ति, गुण, भाव या स्थिति के नाम को संज्ञा कहते हैं।
2. संज्ञा के पाँच भेद होते हैं – व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, द्रव्यवाचक और समूहवाचक।

सोचो और लिखो–

1. जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

   जिस शब्द से किसी प्राणी, पदार्थ या समुदाय की पूरी जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
2. जिन शब्दों में नाप–तोल वाले पदार्थ या द्रव्य का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–ऊन, सोना, लकड़ी आदि।

   जिस शब्द से व्यक्तियों या किसी वस्तु के समूह अथवा समुदाय का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–परिवार, कक्षा, सोना, भीड़ इत्यादि।
3. भाववाचक संज्ञाओं की रचना जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण व अव्यय से होती है।

ख. 1. भाववाचक संज्ञा
2. भाववाचक संज्ञा
3. व्यक्तिवाचक संज्ञा
4. द्रव्यवाचक संज्ञा

ग. 1. आगरा 2. थकान 3. बारिश 4. आपा

घ. 1. पांडित्य – पंडित 2. पशुत्व – पशु
3. निजत्व – निजी 4. अहंकार – अहं

ङ. 1. पछताना – पछतावा 2. मूर्ख – मूर्खता
3. स्त्री – स्त्रीत्व 4. बच्चा – बचपन

रोचक कार्य

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
तस्वीरें, वृत्त, किरणों, सूर्य गर्मी, धूप	मानव, पशुओं पक्षियों, मनुष्यों	अस्तित्व

6 लिंग

अभ्यास

क. 1. शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति या स्त्री जाति के होने का पता चले, उसे लिंग कहते हैं।

2. उभयलिंगी शब्द पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग दोनों रूपों में प्रचलित है, यदि ये स्त्री के लिए प्रयुक्त होते हैं, तो स्त्रीलिंग और यदि पुरुष के लिए प्रयुक्त होते हैं, तो पुल्लिंग कहलाते हैं। जैसे–डॉक्टर, राजदूत, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आदि।

ख. 1. दोनों 2. सिर 3. चीता

ग. 1. नाग 2. ठकुराइन 3. लोटे 4. भाई 5. माली

घ.

1.	छड़ी	स्त्रीलिंग	2.	बंदर	पुल्लिंग
3.	हिरन	पुल्लिंग	4.	गायिका	स्त्रीलिंग
5.	टेलीफ़ोन	पुल्लिंग	6.	चिट्ठी	स्त्रीलिंग

ङ. 1. लेखिका निबंध लिख रही है। 2. लड़का नृत्य कर रहा है।

3. पिता शरबत बना रहे हैं। 4. आयुष्मति भव !

5. कुतिया भौंक रही है।

रोचक कार्य

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
प्रथमा	हिंद महासागर	हिंदी	कपड़ा
गंगा	कैलाश	मराठी	छिलका
यमुना	हीरा	खटाई	पाकिस्तान
देवनागरी	अप्रैल	नदी	बरगद
कृति	दूध	रोटी	पीपल

7 वचन

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक या एक से अधिक होने का पता चले, उसे वचन कहते हैं।
2. वचन दो प्रकार के होते हैं – एकवचन और बहुवचन।
3. शब्द के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ के एक से अधिक होने का पता चले, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे – नदियाँ, घोड़े, तितलियाँ आदि।

सोचो और लिखो–

1. चाचा, मामा, दादा, फूफा और भाई।
2. आदर का भाव प्रकट करने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।

ख. 1. दोनों 2. गुड़ियाँ 3. दोनों 4. दर्शन
5. एक से अधिक वस्तुओं का

ग. 1. **बच्चों** अपने **सामान** को साफ़ रखो।
2. **लड़को** ने अपने **कमरों** की सफ़ाई की।
3. दीपावली पर **बाज़ारों** में खूब सजावट होती है।
4. **गरमियों** में तालाबों का जल सूखने लगता है।
5. इन **कपड़ों** को धूप में सुखा लो।

घ.

1.	रोटियाँ	–	रोटी	2.	गधे	–	गधा
3.	चिड़ियाँ	–	चिड़िया	4.	रीतियाँ	–	रीति
5.	लोटे	–	लोटा	6.	रातें	–	रात

ङ.

1.	सड़क	–	सड़कें	2.	थाली	–	थालियाँ
3.	माला	–	मालाएँ	4.	तोता	–	तोते
5.	झोला	–	झोले	6.	लड़का	–	लड़के

रोचक कार्य

1.	वर्षा	हवा	जनता	आग	पानी
2.	हस्ताक्षर	बाल	प्राण	होश	दर्शन
3.	चाचा	ताऊ	मामा	फूफा	दादा

8 सर्वनाम

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।
2. हम सर्वनाम शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर करते हैं। इससे भाषा को रोचक एवं सरल बनाया जाता है।

सोचो और लिखो–

1. सर्वनाम के छः भेद हैं – पुरूषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक तथा निजवाचक।
2. ऐसे सर्वनाम शब्द, जो किसी पास अथवा दूर की वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
   ऐसे सर्वनाम शब्द, जो किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में निश्चित रूप से न बताएँ, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
3. ऐसे सर्वनाम शब्द, जो प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

ख. 1. मध्यम पुरुष 2. निश्चयवाचक 3. अनिश्चयवाचक
4. प्रश्नवाचक 5. अन्य पुरुष

ग. 1. क्या 2. वह 3. हमने 4. कोई
5. उस 6. किसने

घ.

	सर्वनाम	भेद का नाम
1.	उनसे	पुरुषवाचक सर्वनाम
2.	स्वयं	पुरुषवाचक सर्वनाम
3.	वह, अपने	पुरुषवाचक सर्वनाम, निजवाचक
4.	क्या	प्रश्नवाचक सर्वनाम
5.	जैसी, वैसी	संबंधवाचक सर्वनाम

ड. 1. वह सुंदर लड़की है। 2. तुम्हें किससे बात करनी है ?
3. आज खेल में मुझे बड़ा मज़ा आया। 4. किस-किसने काम कर लिया है ?
5. उसने अपने लिए कपड़े चुने।

रोचक कार्य

वह मनोज के साथ बाज़ार जा रहा था। उसने मनोज से कहा, चलो चलकर लस्सी पीते हैं। किंतु, मनोज ने जाने से साफ़ इंकार कर दिया। मनोज के द्वारा मना किए जाने पर उसने उससे कहा, ठहरो! मैं लस्सी पीकर आता हूँ। मनोज, उसका इंतज़ार करता रहा, किंतु वह लौटकर नहीं आया।

9 विशेषण

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
2. विशेषण शब्द जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं।
3. विशेषणों की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं।

सोचो और लिखो-

1. विशेषण के प्रमुख चार भेद हैं-गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक तथा सार्वनामिक विशेषण।
2. संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध करवाने वाले विशेषण शब्द संख्यावाचक विशेषण शब्द कहलाते हैं।

   वस्तुओं के माप-तोल या मात्रा का बोध कराने वाले विशेषण शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।
3. विशेषणों की तीन अवस्थाएँ हैं। मूलावस्था (जैसे-अधिक, कठोर, कोमल, गुरु आदि), उत्तरावस्था (अधिकतर, कठोरतर, कोमलतर, गुरुतर आदि) और उत्तमावस्था (अधिकतम, कठोरतम, कोमलतम, गुरुतम आदि)
4. विशेषण शब्दों की रचना संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया व अव्यय शब्दों से की जाती है।

ख. 1. निश्चित संख्यावाचक 2. भौगोलिक 3. सार्वनामिक विशेषण

ग. 1. हमारे घर में एक बड़ा बगीचा है। संख्यावाचक, गुणवाचक विशेषण
2. जल में एक सुनहरी मछली दिखाई दी। संख्यावाचक, गुणवाचक विशेषण
3. मेज़ पर बहुत-सी किताबें रखी हैं। अनिश्चितसंख्यावाचक विशेषण
4. प्यासे को थोड़ा पानी पिला दो। परिमाणवाचक विशेषण

घ. 1. कामचोर – कामचोर लड़का 2. रेशमी – रेशमी धागा
3. पिछला – पिछला पन्ना 4. गंभीर – गंभीर पुरुष
5. मासिक – मासिक आय 6. मुलायम – मुलायम गद्दा

ङ. 1. हमारे बगीचे में बहुत सुंदर फूल खिला है।
2. वह कक्षा का अत्यंत बुद्धिमान विद्यार्थी है।
3. ताजमहल विश्व की सबसे सुंदर इमारत है।
4. बर्फीली ठंडी हवा चल रही है।

रोचक कार्य

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
कठोर	कठोरतर	कठोरतम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
लघु	लघुतर	लघुतम

10 क्रिया

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. किसी कार्य का करना या होना क्रिया कहलाता है।
2. क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है।
3. धातुओं में 'ना' प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया का सामान्य रूप बनता है।

सोचो और लिखो-

1. कर्म के आधार पर क्रिया के प्रमुख दो भेद हैं- अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रिया।
2. ऐसी क्रियाएँ, जिनमें कर्त्ता व क्रिया तो होते हैं, परंतु कर्म नहीं होता, अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

   जिन क्रियाओं में क्रिया के व्यापार (कार्य) का फल कर्त्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है, वे सकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

ख. 1. द्विकर्मक 2. अकर्मक 3. लेकर आया है

ग. 1. लिख- लिखना 2. खा – खाना 3. पढ़ – पढ़ना
4. बैठ – बैठना 5. सुन – सुनना 6. हँस – हँसना

घ. 1. अकर्मक क्रिया 2. सकर्मक क्रिया 3. सकर्मक क्रिया
4. अकर्मक क्रिया 5. सकर्मक क्रिया

ङ. 1. पिताजी बेटे को चित्रकला सिखाते हैं। 2. माँ बेटी को पानी पिलाती हैं।
3. मालिक नौकरों को वेतन बाँटता है। 4. सुमेधा बच्चों को नृत्य सिखा रही है।
5. धोबी कपड़ों को पानी से धोता है।

रोचक कार्य

1. अकर्मक क्रिया – मोहन खेल रहा है।
   सुमेधा नाच रही है।
2. सकर्मक क्रिया – सोनल गाना गा रही है।
   चिड़िया डाल पर बैठी है।
3. एककर्मक क्रिया – लड़का निबंध लिखता है।
   माँ खाना पकाती हैं।
4. द्विकर्मक क्रिया – दादी बच्चों को कहानी सुनाती हैं।
   माता जी सुमन को खाना खिलाती हैं।

काल

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. क्रिया के जिस रूप में उसके होने के समय के बारे में पता चलता है, उसे काल कहते हैं।
2. काल के तीन भेद हैं– भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत् काल।

सोचो और लिखो–

1. भूतकाल से बीते हुए समय का बोध होता है।
   भविष्यत् काल से आने वाले समय का बोध होता है।
2. भूतकाल में छः भेद होते हैं–सामान्य भूत, आसन्न भूत, पूर्ण भूत, अपूर्ण भूत, संदिग्ध भूत और हेतुहेतुमद् भूत।
   क) सामान्य भूत – क्रिया के जिस रूप से कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध हो, उसे सामान्य भूत कहते हैं। जैसे – मोनू ने खाना खाया।
   ख) आसन्न भूत – क्रिया के जिस रूप से यह पता चले, कि कार्य अभी–अभी समाप्त हुआ है, उसे आसन्न भूत कहते हैं। जैसे – मैंने पढ़ाई की है।
   ग) पूर्णभूत – क्रिया के जिस रूप से कार्य के काफ़ी समय पहले पूर्ण होने का बोध हो, उसे पूर्ण भूत कहते हैं। जैसे – रिया ने राहुल को राखी बाँधी थी।
   घ) अपूर्ण भूत – क्रिया के जिस रूप से कार्य के बीते हुए समय में आरंभ होने का बोध हो, परंतु उसके पूरा होने का ज्ञान न हो, उसे अपूर्ण भूत कहते हैं। जैसे – शिक्षण पढ़ा रहे थे।
   ड.) संदिग्ध भूत – क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का बोध तो हो, परंतु क्रिया के होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध भूत कहते हैं। जैसे – माँ ने मेरा पत्र पढ़ लिया होगा।

च) हेतुहेतुमद् भूत-क्रिया के जिस रूप से यह पता चले, कि क्रिया भूतकाल में होनी थी, परंतु किसी कारण से नहीं हुई, उसे हेतुहेतुमद् भूत कहते हैं। जैसे - पत्र मिल जाता, तो मैं अवश्य आता।

ख. 1. वर्तमान काल 2. हेतुहेतुमद् भूत 3. आसन्न भूत

ग. 1. वर्तमान काल 2. वर्तमान काल 3. संदिग्ध भूत
4. पूर्ण भूत 5. भविष्यत् काल 6. वर्तमान काल
7. संदिग्ध भूत

घ. 1. यदि समय मिल जाता, मैं सुंदर कविता लिखती।
2. मैनें दो दिन पहले सुंदर कविता लिखी है। 3. मैं सुदंर कविता लिख रही थी।
4. मैंने सुंदर कविता लिखी होगी। 5. मैंने सुंदर कविता लिखी है।

रोचक कार्य

कंस देवकी व वासुदेव को कारागार में कैद करेगा। वह देवकी की सभी संतानों को मार डालेगा। उसे जैसे ही देवकी की आठवीं संतान के जन्म की जानकारी मिलेगी, उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहेगा। बालक के स्थान पर बालिका के जन्म का समाचार सुनकर भी वह बालिका का वध कर देगा। आकाशवाणी होगी – "तुझे मारने वाला गोकुल में पल रहा है।"

12 कारक

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जोड़ने वाले शब्दों को कारक कहते हैं।
2. कारक के तीन भेद हैं -

कर्त्ता कारक	-	माता जी ने मुझे पढ़ाया।
कर्म कारक	-	सब्ज़ी को अच्छी तरह पानी से धो लो।
करण कारक	-	मैंने रंग से डिज़ाइन बनाया है।
संप्रदान कारक	-	यह दान पेटी अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए है।
अपादान कारक	-	वह बीमारी से मुक्त हुआ।
संबंध कारक	-	सोनाक्षी की बहन डॉक्टर है।
अधिकरण कारक	-	अपने बैग में पैसे रख लो।
संबोधन कारक	-	हे सुनो! यह काम मत करो।

सोचो और लिखो-

1. किसी को आदेश देने, बुलाने या पुकारने में संबोधन कारक का प्रयोग होता है।
2. जहाँ संज्ञा या सर्वनाम से किसी अन्य संज्ञा या सर्वनाम का संबंध दिखाया जाए, वहाँ संबंध कारक होता है।

3. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की सहायता से क्रिया संपन्न होती है, उसे करण कारक कहते हैं। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने के भाव का बोध हो, वह अपादान कारक कहलाते हैं।

ख. 1. आठ 2. श्याम ने खाना खाया 3. करण
4. परसर्ग 5. करण

ग. 1. विभीषण रावण का भाई था। 2. दादा ने बच्चों को कहानियाँ सुनाई।
3. उसने कलम के द्वारा पत्र लिखा। 4. वह पेड़ से गिरा।
5. दुकानदार को ग्राहक ने पैसे दिए।

घ.

1.	पेड़ से पत्ता गिर गया।	अपादान कारक
2.	माँ ने खाना बनाया।	कर्त्ता कारक
3.	गिलास मेज़ पर रखा है।	अधिकरण कारक
4.	नीता की बहन रीता है।	संबंध कारक
5.	कक्षा में छात्र पढ़ते हैं।	अधिकरण कारक

रोचक कार्य

मथुरा **का** राजा कंस बहुत अत्याचारी था। उसे अपनी शक्ति **का** बहुत अहंकार था। उसने अनेक देवताओं **को** मथुरा **में** कैद कर रखा था। कंस श्री कृष्ण **से** बहुत नफ़रत करता था। उसने श्री कृष्ण **को** कई बार मरवाने **की** कोशिश की। सबने सलाह दी, कि वह श्री कृष्ण **से** माफ़ी माँग ले, परंतु उसने नहीं माँगी। अंत **में** श्री कृष्ण **ने** धर्म **की** रक्षा **के लिए** कंस **का** वध कर दिया। कंस **पर** श्री कृष्ण **की** यह जीत, वास्तव **में** अधर्म **पर** धर्म **की** जीत थी। श्री कृष्ण **की** याद **में** आज भी जन्माष्टमी उनके जन्म दिवस **के** रूप **में** मनाई जाती है।

13 अविकारी शब्द (अव्यय)

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. जिन शब्दों में काल, लिंग वचन के कारण परिवर्तन नहीं आता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।
2. अविकारी शब्द पाँच प्रकार के होते हैं - क्रियाविशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधबोधक, विस्मयादिबोधक और निपात।

सोचो और लिखो-

1. संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे - हाथी धीरे-धीरे चल रहा है।

   क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं - कालवाचक, स्थनवाचक, परिमाणवाचक व रीतिवाचक

   क) कालवाचक क्रियाविशेषण - क्रिया के करने या होने का बोध कराने वाले क्रिया विशेषण शब्द कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। जैसे - कल, परसों, जब, कब आदि।

ख) स्थानवाचक क्रियाविशेषण – क्रिया के करने या होने का स्थान बताने वाले क्रिया विशेषण शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। जैसे – इधर, भीतर, बाएँ, दाहिने आदि।

ग) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण – क्रिया के परिमाण या मात्रा का बोध कराने वाले क्रियाविशेषण शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। जैसे – तनिक, कुछ, प्रायः, लगभग आदि।

घ) रीतिवाचक क्रियाविशेषण – क्रिया करने या होने की रीति अथवा तरीके का बोध कराने वाले शब्द रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। जैसे – एकाएक, झटपट, शीघ्र, जल्दी, आदि।

2. क्रिया के परिणाम या मात्रा का बोध कराने वाले क्रियाविशेषण शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। जैसे– तनिक, कुछ, प्रायः आदि।

क्रिया करने या होने की रीति अथवा तरीके का बोध कराने वाले शब्द रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। जैसे – मुस्कुराकर, अचानक, एकाएक, सहसा आदि।

3. कई शब्द जैसे – बाहर, भीतर, पहले, बाद आदि का प्रयोग क्रियाविशेषण और संबंधबोधक अव्यय दोनों के रूप में होता है। जब इन शब्दों का प्रयोग क्रिया के साथ किया जाता है, तो ये क्रियाविशेषण बन जाते हैं। परंतु जब इनका प्रयोग संज्ञा अथवा सर्वनाम के साथ किया जाता है, तो ये संबंधबोधक बन जाते हैं।

जैसे – रमन बाहर खड़ा है। (क्रियाविशेषण)
रमन घर के बाहर खड़ा है। (संबंधबोधक)

क्रियाविशेषण के रूप में इनके साथ के, का, की, से आदि का प्रयोग नहीं होता है, जबकि संबंधबोधक में इनके साथ के, का, की, से आदि का प्रयोग होता है।

जैसे – कमल बाद में आया है। (क्रियाविशेषण)
कमल मनोज के बाद में आया है। (संबंधबोधक)

4. समुच्चयबोधक शब्दों के चार प्रमुख कार्य हैं–

क) दो शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ना
जैसे – अर्जुन और कर्ण दोनो वीर योद्धा थे।

ख) दो वाक्यों में विरोध बनाने का कार्य
जैसे – कमल मेहनती है, परंतु उसका भाई आलसी है।

ग) दो वाक्यों में कारण तथा परिणाम बनाने का कार्य
जैसे – मैं बीमार था, इसलिए कक्षा में उपस्थित नहीं हो सका।

घ) दो वाक्यों मे विकल्प बताने का कार्य।
जैसे – आप चाय लेंगे अथवा कॉफ़ी लेंगे।

ख. 1. स्थानवाचक क्रियाविशेषण 2. साधनवाचक संबंधबोधक
3. शब्दों को जोड़ रहा है 4. निपात

ग. 1. और 2. के नीचे 3. के पास 4. सहित

घ. 1. ऐसा भयंकर साँप मैंने कभी नहीं देखा था!
2. सर्वनाश हो गया! 3. कितना सुंदर लेख है!
4. अति सुंदर कलाकृति है! 5. चारों ओर दुर्गंध फैली है!

ङ. 1. गड्ढे से थोड़ा पीछे हटो। — परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
2. तुम्हारा भाई अभी गया है। — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
3. सभी बच्चे उस ओर खेलो। — स्थानवाचक क्रियाविशेषण
4. मेरे पिता जी कल आएँगे। — कालवाचक क्रियाविशेषण

रोचक कार्य

स्वयं करें।

14 पर्यायवाची शब्द

अभ्यास

क. 1. किसी शब्द का समान अर्थ या भाव बताने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।
2. पर्यायवाची शब्द को समानार्थक शब्द भी कहा जाता है, क्योंकि इनके अर्थ में समानता होते हुए भी सूक्ष्म अंतर होता है। इनके एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग नहीं किया जा सकता।

ख. 1. आसमान 2. माँ 3. पानी

ग.

1. सागर	–	रत्नाकर	सिंधु	कुंजर
2. आसमान	–	तिमिर	अंबर	गगन
3. पहाड़	–	नग	आँचल	अचल
4. संसार	–	अरण्य	जग	विश्व
5. भगवान	–	परमेश्वर	परमात्मा	भागीरथ

घ.

1. आनंद	:	हर्ष	उल्लास	खुशी
2. ईश्वर	:	भगवान	परमेश्वर	परमात्मा
3. कपड़ा	:	पट	वस्त्र	चीर
4. कमल	:	पंकज	सरोज	जल
5. बादल	:	घन	जलधर	जलद
6. आँख	:	नयन	नेत्र	चक्षु
7. अग्नि	:	आग	अनल	पावक

रोचक कार्य

स्वयं करें।

15 विलोम शब्द

अभ्यास

क. 1. उल्टा या विपरीत अर्थ बताने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।
2. विलोम शब्द के पाँच उदाहरण-

दुर्बल – सबल एक – अनेक

क्रिया – प्रतिक्रिया आदान – प्रदान

उन्नति – अवनति

ख. 1. अयोग्य 2. दानव 3. अंत 4. दास

ग.

1.	चंचल	स्थिर	2. उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
3.	कृत्रिम	प्राकृतिक	4. कृतज्ञ	कृतघ्न
5.	नश्वर	अनश्वर	6. निरक्षर	साक्षर
7.	आस्तिक	नास्तिक	8. अनुकूल	प्रतिकूल
9.	जटिल	सरल	10. उत्साह	अनुत्साह

घ. 1. हिमालय के शिखर पर चढ़ना सुगम है।

2. भारत दिनोदिन नवीन होता जा रहा है।
3. नए बिल का लोगों ने स्वागत किया।
4. मलेरिया के कारण चारों ओर हाहाकार मचा था।
5. थकान के कारण मुझ पर स्फूर्ति छाने लगी थी।

रोचक कार्य

राजा	x	रंक	वीर	x	कायर	प्राचीन	x	नवीन
अमृत	x	विष	चंचल	x	स्थिर	हर्ष	x	शोक
निर्मल	x	मलिन	पुरातन	x	नूतन	एक	x	अनेक
गुरु	x	लघु						

16 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

अभ्यास

क. 1. अनेक शब्दों के स्थान पर लिखा जाने वाला एक शब्द, 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' कहलाता है।

2. भाषा को प्रभावशाली बनाने व उसका सौंदर्य बढ़ाने के लिए, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

ख. 1. दुर्गम 2. कृतज्ञ 3. अमर 4. आस्तिक

ग. 1. कृतघ्न 2. ईर्ष्यालु 3. निराकार 4. नभचर

5. असमान

घ. 1. हिमालय पर चढ़ना बहुत दुर्गम है।
2. रोहन एक अल्पभाषी बालक है।
3. मैं उसका कृतज्ञ हूँ।
4. सुमन बहुत ही मितव्ययी है।
5. मैं उस घटना की प्रत्यक्ष साक्षी हूँ।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

17 अनेकार्थी शब्द

अभ्यास

क. 1. एक से अधिक अर्थ बताने वाले शब्दों को अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

2. हाँ, अनेकार्थी शब्द को पर्यायवाची शब्द कह सकते हैं।

ख. 1. कपास 2. वस्त्र 3. नतीजा 4. भौंरा

ग. 1. दाँत 2. गोद 3. लक्ष्मी 4. मोक्ष

घ.

1.	अर्क	–	सूर्य	दवाइयाँ
2.	उत्तर	–	जवाब	दिशा
3.	फल	–	नतीजा	पेड़ का फल (आम, केला, अंगूर आदि)
4.	पट	–	द्वार	कपड़ा

रोचक कार्य

स्वयं करें।

18 एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द

अभ्यास

क. 1. हिंदी शब्द में कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो सामान्य रूप में देखने पर समान अर्थ वाले प्रतीत होते हैं, परंतु वास्तव में उनके अर्थ में सूक्ष्म अंतर होता है। ऐसे शब्दों को एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द कहते हैं।

2. इनके अर्थों में सूक्ष्म भेद होता है।

ख. 1. निधन 2. परिणाम 3. तृप्ति

ग. 1. पत्नी 2. घमंड 3. अनुमति 4. पुत्र

5. हत्या

घ.

1. अमूल्य – मेरा बेटा अमूल्य है।
   बहुमूल्य – हमारी मित्रता बहुमूल्य है।
2. खेद – मुझे अपनी कथनी पर खेद है।
   शोक – मदर टेरेसा की मृत्यु से पूरा देश शोक में डूब गया था।
3. आवश्यक – पिताजी का अमरीका जाना आवश्यक है।
   अनिवार्य – मेरा परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

19 श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

अभ्यास

क. 1. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द पढ़ने और दिखने में समान तथा अर्थ की दृष्टि से भिन्न होते हैं।
2. इनकी वर्तनी और उच्चारण में बहुत कम अंतर होता है।

ख.

1.	गढ़	–	किला ✓	कील
2.	कीमत	–	मूल	मूल्य ✓
3.	घोड़ा	–	तरंग	तुरंग ✓
4.	आग	–	अनिल	अनल ✓
5.	भँवरा	–	अली	अलि ✓

ग. 1. उसने इत्र लगाकर वातावरण को सुगंधित कर दिया।
2. मैंने उसकी ओर घृणा से देखा।
3. उसका आचार-व्यवहार कुछ ठीक नहीं है।
4. अपने दोषों को दूर करने के लिए गृह शांति करवाओ।
5. उसने दीन-दुखियों को भोजन कराने का प्रण लिया है।

घ.

	शब्द	अर्थ	वाक्य
1.	कुल	वंश	रोहन अपने कुल का चिराग है।
	कूल	किनारा	कबूतर नदी के कूल पर बैठा है।
2.	ग्रह	नक्षत्र	उसके ग्रह अभी ठीक नहीं चल रहे हैं।
	गृह	घर	हम उसके गृह-प्रवेश समारोह में गए थे।
3.	नीर	जल	इस तालाब का नीर शुद्ध है।
	नीड़	घोंसला	सभी पक्षी अपने नीड़ में सो रहे हैं।
4.	शाम	संध्या	हमें शाम होने से पहले घर पहुँचना है।
	श्याम	काला	श्री कृष्ण श्याम-रंग के थे।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

20 उपसर्ग

अभ्यास

क. 1. मूल शब्दों के पहले जुड़कर, उनके अर्थ में परिवर्तन लाने वाले शब्द उपसर्ग कहलाते हैं।
2. उपसर्ग के चार प्रमुख भेद हैं – संस्कृत के उपसर्ग, हिंदी के उपसर्ग, उर्दू-फ़ारसी के उपसर्ग व संस्कृत के अव्यय।

ख. 1. अन 2. सम् 3. शब्द के पहले 4. नए

ग.

1.	अनु	+ राग	=	अनुराग	वि	+ राग	=	विराग
2.	बद	+ किस्मत	=	बदकिस्मत	खुश	+ किस्मत	=	खुशकिस्मत
3.	दुर्	+ गम	=	दुर्गम	सम्	+ गम	=	संगम

घ.

1.	कम	– कमज़ोर	कमसिन		2.	अनु	– अनुचर	अनुमान
3.	वि	– विदेश	विपक्ष		4.	पर	– परहित	परदादा

ड.

	शब्द		अर्थ	मूलशब्द		शब्द		अर्थ	मूलशब्द
1.	प्रकृति	–	प्र	कृति	2.	अन्याय	–	अ	न्याय
3.	उपकार	–	उप	कार	4.	प्रत्यक्ष	–	प्रत्	यक्ष
5.	संकल्प	–	सम्	कल्प	6.	अवतरण	–	अव	तरण

रोचक कार्य

स्वयं करें।

21 प्रत्यय

अभ्यास

क. 1. शब्दों के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाने वाले शब्दाशं प्रत्यय कहलाते हैं।

2. प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं –

कृत प्रत्यय – अक्कड़, आवा आदि तद्धित प्रत्यय – आ, आई, आदि

ख. 1. इयल 2. णीय 3. औना 4. ईय

ग.

	शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय		शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय
1.	पूजनीय	पूज	नीय	2.	भुलक्कड़	भुल	अक्कड़
3.	बचपन	बच	पन	4.	मरियल	मर	इयल
5.	बनावट	बन	आवट	6.	बुराई	बुर	आई

घ.

	शब्द	प्रत्यय	प्रत्ययुक्त		शब्द	प्रत्यय	प्रत्ययुक्त
1.	भूल	ना	भूलना	2.	जेठ	आनी	जेठानी
3.	बिका	आऊ	बिकाऊ	4.	लड़का	पन	लड़कपन
5.	कड़वा	हट	कड़वाहट	6.	समाज	इक	सामाजिक

ङ.

1.	तम	पुरुषोतम	उच्चतम	महानतम
2.	दान	पीकदान	कलमदान	महादान
3.	आना	सालाना	घराना	शर्माना
4.	इया	तकिया	बुढ़िया	घटिया
5.	त्व	अपनत्व	स्वामित्व	स्वतत्व
6.	इयल	नारियल	अड़ियल	सड़ियल
7.	आवट	लिखावट	सजावट	बनावट

रोचक कार्य

स्वयं करें।

22 समास

अभ्यास

क. सोचो और बताओ

1. परस्पर शब्दों को जोड़कर नया शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है।
2. समस्तपद को अलग-अलग करने की प्रक्रिया समास-विग्रह कहलाती है।
3. समास रचना के दो पद होते हैं - पहला पद पूर्वपद व दूसरा पद उत्तरपद कहलाता है।

सोचो और लिखो

1. समास के प्रमुख छः भेद होते हैं - अव्ययीभाव समास, ततपुरुष समास, कर्मधारय समास, द्विगु समास, द्वंद्व समास और बहुब्रीहि समास।
2. कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण व दूसरा पद विशेष्य होता है। बहुब्रीहि समास में दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं।

   जैसे - नीलकंठ — नीला है कंठ जो (कर्मधारय समास)

   नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव (बहुब्रीहि समास)

ख. 1. कर्मधारय 2. द्विगु समास 3. अव्ययीभाव
4. अव्ययीभाव 5. कर्मधारय

ग. 1. समास-विग्रह 2. संख्यावाची 3. बहुब्रीहि
4. प्रधान 5. अव्ययीभाव

घ.

	समस्तपद	समास-विग्रह	समास का नाम
1.	शताब्दी	सौ वर्षों का समूह	द्विगु समास
2.	दशानन	दस हैं आनन जिसके	बहुब्रीहि समास
3.	दशमुख	दस हैं मुख जिसके	बहुब्रीहि समास
4.	बातोंबात	बात ही बात में	अव्ययीभाव समास

ङ.

	समास-विग्रह	समस्तपद	समास का नाम
1.	घोड़ों की दौड़	घुड़ दौड़	तत्पुरुष समास
2.	पाँच तंत्रों का समूह	पंचतंत्र	द्विगु समास
3.	चार राहों का समाहार	चौराहा	द्विगु समास
4.	शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति	अव्ययीभाव समास
5.	हाथ ही हाथ में	हाथों हाथ	अव्ययीभाव समास
6.	पथ से भ्रष्ट	पथभ्रष्ट	तत्पुरुष समास

रोचक कार्य

स्वयं करें।

23 वाक्य–रचना

अभ्यास

क. 1. शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

2. शब्दों के व्याकरणिक नियमों के अनुसार निश्चित क्रम में रखने से वाक्यों का निर्माण होता है।

3. वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं।

ख. 1. उद्देश्य 2. विधेय 3. वाक्य 4. कर्त्ता के विशेषण

ग.

1.	रंग–बिरंगी होली का त्योहार	सब त्योहारों से निराला होता है।
2.	हिमालय	की ऊँची चोटियों पर बर्फ़ जमी रहती है।
3.	शत्रु सेना	का एक सैनिक झाड़ियों में छिपकर बैठ गया।
4.	रामचरितमानस	के रचयिता तुलसीदास जी महान कवि और राम भक्त थे।
5.	सपनों की दुनिया	अनोखी व निराली होती है।

घ. 1. मेरे भाई ने प्रथम पुरस्कार जीता है। 2. हमारी नौकरानी कल से नहीं आई।

3. आदरणीय प्रधानाचार्य अब भाषण देंगे। 4. सबसे सुंदर लड़की मेरी कक्षा में है।

5. महान वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु ने पेड़–पौधों के बारे में बताया।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

24 विराम–चिह्न

अभ्यास

क. 1. भाषा में लिखते समय रुकने का संकेत देने वाले चिह्न विराम–चिह्न कहलाते हैं। लिखते समय रूककर भावों को स्पष्ट करने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

2. प्रमुख विराम–चिह्न हैं – पूर्ण विराम, अल्प विराम, अर्धविराम, प्रश्नवाचक चिह्न, विस्मयादिबोधक चिह्न, उद्धरण चिह्न, योजक चिह्न, निर्देशक चिह्न तथा लाघव चिह्न

ख. 1. लाघव चिह्न 2. अर्धविराम 3. योजक चिह्न

4. प्रश्नवाचक 5. अल्पविराम

ग. 1. वहाँ कौन खड़ा है?

2. सुख–दु:ख को समान भाव से देखना चाहिए।

3. संज्ञा के तीन भेद होते हैं – जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक।

4. मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूँ।

5. शाबाश! मुझे तुमसे ऐसी ही आशा थी।

रोचक कार्य

बाबा भारती ने खड्गसिंह से कहा– "इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।" इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के चेहरे पर गड़ा दीं और पूछा– "बाबा जी इसमें आपको क्या डर है?"

25 अशुद्धि-शोधन

अभ्यास

क. 1. वाक्य में अशुद्धियाँ करने पर वाक्य की शुद्धता समाप्त हो जाती है तथा उनका प्रयोग पूर्ण रूप से नहीं किया जा सकता।

2. वाक्य में अशुद्धियाँ करने का मुख्य कारण अशुद्ध उच्चारण व व्याकरणिक नियमों की जानकारी का अभाव है।

ख.

1.	कार्यकर्म	कार्यक्रम ✓	कार्यकृम
2.	संसारिक	सांसारिक ✓	सासारिक
3.	ज्वल	उजवल	उज्ज्वल ✓
4.	प्रातकाल	प्रात:काल ✓	प्रार्त:काल
5.	दूसरा ✓	दुसरा	दोसरा
6.	अतिथि ✓	अतीथि	अतीथी

ग.

1.	प्रतिष्टा	प्रतिष्ठा	2.	स्वस्थ्य	स्वास्थ्य
3.	परिक्षा	परीक्षा	4.	सीढी	सीढ़ी
5.	छमा	क्षमा	6.	रूपया	रुपया
7.	त्यौहार	त्योहार	8.	आधीन	अधीन
9.	श्रीमति	श्रीमती	10.	शुरु	शुरू

घ. 1. वह आँठवीं में पढ़ता है। 2. मैंने काम किया।

3. तुम बहुत गुणवती स्त्री हो। 4. मैंने आपके कई बार दर्शन किए हैं।

5. भाग-भाग कर तो मेरी साँस फूल गई।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

26 मुहावरे एवं लाकोक्तियाँ

अभ्यास

क.

1.	दिखावा अधिक वास्तविकता कम	2.	लाभ ही लाभ
3.	प्यार करना	4.	कुछ गड़बड़ी

ख.

1.	लोहे के चने चबाना	बहुत कठिन एवं कठोर परिश्रम का कार्य करना
2.	छठी का दूध याद दिलाना	किसी को कष्ट में डालना
3.	छक्के छुड़ाना	बुरी तरह हराना
4.	अंग-अंग ढीला होना	बहुत थक जाना
5.	आग बबूला होना	बहुत गुस्सा होना
6.	रंग उड़ना	डर से चेहरे का तेज कम हो जाना

ग.

1.	न्याय होना	अंत भला तो सब भला
2.	जो पास हो, उसकी कीमत न जानना	घर की मुरगी दाल बराबर
3.	निरक्षर होना	काला अक्षर भैंस बराबर
4.	अचानक लाभ होना	अंधे के हाथ बटेर लगना
5.	भविष्य देखना	ख्याली पुलाव पकाना

घ.

1.	नाकों चने चबाना	शिवाजी की सेना ने अपने दुश्मनों को नाकों चने चबवाए।
2.	आँख मिलाना	रमेश मुझसे आँख मिलाकर बात नहीं कर सकता।
3.	कान भरना	दीपिका हमेशा मेरी माँ के कान भरती रहती है।
4.	गर्दन उठाना	सुरेश सभी से गर्दन उठाकर बात करता है।
5.	कलेजे का टुकड़ा	मैं मेरी माँ का कलेजे का टुकड़ा हूँ।
6.	परिश्रम अधिक फल कम	कविता परिश्रम तो अधिक करती है, परंतु उसे उसका फल नहीं मिलता।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

27 संवाद-लेखन

अभ्यास

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

28 डायरी-लेखन

अभ्यास

1. 25 जनवरी, 20....., सोमवार

रोज़ की तरह आज शाम को भी मैं अपने घर के पास बने पार्क में खेलने गई। वहाँ पर मेरी सहेली सोनिया भी आई थी। बहुत देर तक हम साथ खेलते रहे। उसके बाद हमने झूला झूलने की सोची। पार्क में एक ही झूला खाली था। सोनिया झूले पर पहले बैठना चाहती थी और मैं भी झूले पर पहले बैठना चाहती थी। इसी बात पर हम दोनों मे बहस होने लगी और वह मुझसे

नाराज़ होकर अपने घर चली गई। बाद में मुझे मेरी गलती पर अफ़सोस हुआ। कल मैं सोनिया से माफ़ी माँग लूँगी और कभी लड़ाई न करने का वादा करूँगी।

रायना

2. 6 जून, 20....., शनिवार

आज मेरी परीक्षा का परिणाम आया। परीक्षा में मेरे बहुत अच्छे अंक नहीं आए। मैंने परीक्षा के लिए कड़ी मेहनत भी नहीं की थी। मैं अपने अंक माता-पिता को नहीं बताना चाहता था। इसलिए घर आकर मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया। परंतु शाम को मेरे मित्र राजू की माता का फोन आया और उन्होंने माँ को सबकुछ बता दिया। मेरे अंक छिपाने के कारण मेरे माता-पिता मुझसे बहुत नाराज़ हो गए है और मुझे बहुत डाँटा। मैंने निश्चय किया है, कि आज से मैं अपने माता-पिता से कुछ भी नहीं छिपाऊँगा। आज की यह घटना मुझे हमेशा याद रहेगी।

अजय

3. 14 नवंबर 20....., रविवार

आज 14 नवंबर है। आज के दिन हमारे देश में बालदिवस मनाया जाता है। इसी अवसर पर हमारे विद्यालय की तरफ़ से हमें चिड़ियाघर की सैर पर ले जाया गया। हम सभी बच्चे बहुत उत्सुक थे। मैं और मेरे सभी दोस्त घर से खाने-पीने की बहुत-सी चीजें साथ लेकर गए थे। वहाँ पर हमने बहुत से जानवर और पक्षी देखे। मुझे सबसे ज्यादा सफ़ेद मोर पंसद आया। वह दिखने में बहुत ही सुदंर था। वह पंख फैलाकर नाच रहा था। वहाँ पर हमने हाथी और अन्य जानवर भी देखे। हम सभी को वहाँ पर बहुत मज़ा आया।

समर्थ

4. 15 अगस्त, 20....., शनिवार

आज स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हमारे विद्यालय में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। हम सभी ने किसी न किसी नाटक में भाग लिया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बड़े-बड़े झूले भी लगवाए गए थे। मैंने मेरे मित्रों के साथ बहुत-से झूले झूले। हम सभी ने एक साथ बहुत मस्ती की। आज का दिन मेरे लिए बहुत ही मनोरंजक था।

अर्पिता

5. 6 अगस्त, 20....., सोमवार

आज सुबह मैं देर से उठा था। इसी कारण मुझे विद्यालय के लिए तैयार होने में देरी हो गई। मेरी स्कूल बस भी निकल चुकी थी। मुझे विद्यालय पँहुचने में बहुत देरी हो गई। विद्यालय पहुँचकर जब मैं अंदर जाने लगा, तो चौकीदार ने अंदर जाने से मुझे मना कर दिया। तभी वहाँ पर मेरे कक्षा अध्यापक आए और उन्होंने मुझे सज़ा देने के लिए मुझे विद्यालय से घर वापस भेज दिया। मुझे घर वापिस आना पड़ा। घर आते आते मैं बहुत थक गया। घर पहुँचकर माँ ने मुझे डाँटा और फिर समझाया कि विद्यालय देर से जाना अच्छी बात नहीं। अब से मैं प्रातः जल्दी उठकर विद्यालय समय पर पहुँचूँगा।

अमर

6 20 जून, 20....., रविवार

आज मेरे माता-पिता मेरे लिए नई साइकिल लेकर आए। वह साइकिल बहुत ही सुंदर है। मैं

उस साइकिल को चलाने के लिए बहुत उत्सुक था। परंतु मुझे साइकिल चलानी नहीं आती। पिताजी ने साइकिल चलाने में मेरी मदद की, परंतु कुछ ही दूर जाकर मैं साइकिल संभाल नहीं सका और गिर गया। ज़ोर से गिरने के कारण मेरे पैर में चोट लग गई। पिताजी ने मेरी चोट में तुरंत दवा लगाकर पट्टी बाँध दी। परंतु मुझे चोट में बहुत दर्द हो रहा है। आगे से साइकिल चलाते समय मैं ध्यान रखूँगा, कि मुझे फिर से चोट न लगे।

सक्षम

7. 10 अक्टूबर, 20....., बुधवार

आज मेरे विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में मैंने भी भाग लिया था। मेरे प्रतियोगिता का शीर्षक था 'हिंदी भाषा का महत्त्व'। इस वाद-विवाद में मैं प्रथम स्थान पर आया। इस प्रतियोगिता में प्रथम आने पर मुझे एक मैडल और 10 हज़ार का चैक मिला है। मेरे माता-पिता भी आज मुझसे बहुत प्रसन्न हुए। भविष्य में मैं सभी प्रकार की प्रतियोगिताओं में भाग लेने की कोशिश करूँगी।

करुणा

पत्र-लेखन

अभ्यास

1. सेवा में,

प्रधानाचार्य जी

विद्या मंदिर

महरौली, नई दिल्ली।

विषय : शुल्क माफ़ी के लिए आवेदन पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है, कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा-6 में पढ़ता हूँ। मेरे पिताजी सरकारी विभाग के क्लर्क थे। वे अभी हाल में ही सेवानिवृत्त हुए हैं। अब उनको पाँच सदस्यों के परिवार का लालन-पोषण करने में कठिनाई हो रही है।

इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, कि मुझे पूर्ण शुल्क मुक्ति दीजिए, जिससे मैं अपनी शिक्षा को सुगमता पूर्वक जारी रख सकूँ। मैं हमेशा से एक अच्छा और अनुशासित छात्र रहा हूँ। मैं अपने स्कूल की क्रिकेट टीम का कप्तान भी हूँ। पिछले साल हमारी टीम ने दो पुरस्कार मेरे नेतृत्व में जीते थे। मेरे हित में निर्णय लेने के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

राम गोपाल

कक्षा VI ब

2. गृह संख्या–22
कास्टर टाउन, देवघर,
झारखंड।

प्रिय रवि।

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुआ कि तुम्हारा ग्रीष्मावकाश आरंभ हो गया है। इस बार ग्रीष्मावकाश आरंभ होते ही मेरे मन में एक शुभ विचार आया। यह विचार कि क्यों न तुम इस बार मेरे शहर आकर गर्मी की छुट्टियाँ व्यतीत करो। तुम तो जानते ही हो कि देवघर एक तीर्थ स्थान है। यहाँ श्रावण मास में एक विशाल मेला लगता है। यहाँ लोग द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक रावणेश्वर महादेव के दर्शन के लिए आते हैं। बड़ा भव्य और प्राचीन मंदिर है। यहाँ का नौलखा मंदिर भी काफी प्रसिद्ध है। यहाँ कई अन्य दर्शनीय स्थान भी हैं।
यदि तुम कुछ दिनों के लिए ही सही, यहाँ आ सको तो मुझे बहुत खुशी होगी। मेरे माता–पिता भी यही इच्छा रखते हैं। मैं तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा करूँगा।

तुम्हारा प्रिय मित्र
अनुरोध यादव

3. सेवा में,
थानाध्यक्ष,
पुलिस चौकी,
नई दिल्ली।

दिनांक : 12 सिंतम्बर 20.....

महोदय,

मैं इस पत्र के माध्यम से साकेत के आसपास के इलाके में हो रही चोरियों की ओर ध्यान दिलाना चाहती हूँ। यहाँ पर आए दिन कभी किसी के दरवाज़े टूट जाते हैं तो कभी ताले टूट जाते हैं। दिन दहाड़े चोर घरों में घुस जाते हैं और जमकर लूटपाट करते हैं।
बाज़ार में चलती हुई स्त्रियों के गले से चेन खींच ली जाती है। गली में खड़ी गाड़ियों के म्यूज़िक सिस्टम, स्कूटर की स्टेपनी आदि सभी कुछ चोरी होने लगा है। यदि कोई इन चोरों का विरोध करता है तो उसके साथ मार–पीट की जाती है और धमकाया जाता है। हमारे क्षेत्र में यह रोज़ की बात हो गई है। कृप्या यहाँ बढ़ते अपराधों की रोकथाम के लिए पुलिस जो केवल एक बार गश्त लगाती है, उसके द्वारा गश्त की संख्या कम से कम दिन में पाँच बार बढ़ा दिए जाए। तीन चार सिपाहियों की गश्त होने से शायद यह परेशानी कम हो जाए। दिन और रात में पुलिस की गाड़ी भी चक्कर लगाए। हमें आशा है कि आप हमारी परेशानी को समझेंगे और समुचित सुरक्षा प्रबंध करेंगे। अत्यन्त आभार के साथ धन्यवाद।

भवदीय
अ. ब. स.
मोहल्ला समिति,
दिल्ली।

4. बी – 333
नई दिल्ली
दिनांक – 12 अगस्त 20.....
प्रिय अनुज
आज हमारी कक्षा में अध्यापक महोदय ने समय के महत्त्व पर बात की। मैंने स्वयं इस विषय पर पहले कभी गंभीरता से नहीं सोचा था। परंतु आज अध्यापक महोदय ने मुझे इसके महत्त्व का ज्ञान कराया। उनसे पता चला कि हर व्यक्ति को समय की कीमत समझनी चाहिए। समय पर किया गया कार्य मनुष्य के जीवन को सही दिशा निर्देश देता है। समय के महत्त्व को समझने वाला व्यक्ति समय का सही सदुपयोग करता है। इस तरह से वह अपना कार्य समय पर करता है तथा अपने अन्य कार्यों के लिए समय निकाल पाता है और लक्ष्य तक शीघ्रता से पहुँच पाता है।

तुम्हारा भाई
रंजन

5. सेवा में,
महाप्रबंधक महोदय,
दिल्ली विद्युत बोर्ड,
नई दिल्ली।

विषय : बिजली की शिकायत करने हेतु पत्र।

महोदय,

निवेदन है, कि मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र हनुमान रोड में व्यास बिजली-संकट की ओर दिलाना चाहता हूँ। बिजली नहीं होने के कारण हमें भारी संकट का सामना करना पड़ रहा है। इस समय हमारे विद्यालय में परीक्षाएँ चल रही हैं। परीक्षा की तैयारियों के लिए हमें रात-दिन पढ़ाई करनी पड़ती है। परन्तु हमारे इलाके में तो जैसे बिजली आँख-मिचौली का खेल खेलती रहती है। बिजली कब तक रहती है, यह कहना कठिन होता है। कभी-कभी तो बिजली पूरा-पूरा दिन ही नहीं रहती हैं। यदि आती भी है, तो मुश्किल से एक-दो घंटे तक ही उसके दर्शन उपलब्ध हो पाते हैं। इस प्रकार बार-बार बिजली नहीं होने से हमें पढ़ाई करने में बड़ी असुविधा होती है। हमने इस समस्या की तरफ अधिकारियों का ध्यान दिलाने की बहुत कोशिश की, परंतु किसी के कान पर जूँ तक नहीं रेंगी।
आपसे निवेदन है, कि परीक्षा के दिनों में बिजली की नियमित ढंग से सप्लाई दे। बिजली काटना यदि ज़रूरी है, तो उसके जाने का समय ऐसा निश्चित करें, जिससे सभी विद्यार्थी बिना किसी असुविधा के अपनी पढ़ाई कर सकें।
आपके इस सहयोग के लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित
भवदीय,
कोमल गुप्ता

30 अनुच्छेद–लेखन

अभ्यास

1. शिक्षा के उद्देश्य

आज की प्रतिस्पर्धा की दुनिया में शिक्षा का बड़ा महत्त्व है, आज के समय में शिक्षा अच्छी नौकरी और पद हासिल करने का एक माध्यम बन चुका है। शिक्षा का सही उद्देश्य व्यक्ति के आगे बढ़ने के लिए रास्ते का निर्माण करना है, हमारी शिक्षा का स्तर ही हमें बौद्धिक और मानसिक स्तर से मज़बूत बनाने का कार्य करता है। आज के समय में प्रत्येक विद्यार्थी अपने जीवन में कुछ अच्छा करने का सपना देखता है, माता–पिता भी अपने बच्चों को डॉक्टर या इंजीनियर बनाना चाहते हैं। उनका एक ही ज़रिया होता है, उद्देश्यपूर्ण व गुणवत्ता युक्त शिक्षा। ऐसा नहीं कि डॉक्टर, इंजीनियर या अध्यापक बनने वाले ही विद्यार्थी शिक्षा अर्जित करते हैं, बल्कि अन्य क्षेत्र जैसे खेल, संगीत, फिल्म किसी भी क्षेत्र में जाने वाला विद्यार्थी निरंतर शिक्षा अर्जित करने की कोशिश करता है। यही शिक्षा उन्हें अपने प्रोफ़ेशन को बेहतर ढंग से करने का आत्मविश्वास पैदा करती है। देशभर में लगभग सभी राज्यों के अपने शिक्षा बोर्ड हैं, जो विशेष लक्ष्य के साथ राज्य के सभी विद्यार्थी को शिक्षा प्रदान करते हैं। अंत में इतना ही कहना उचित होगा, 'सब पढ़ें, सब बढ़ें।'

2. भारतीय किसान

त्याग और तपस्या का दूसरा नाम है किसान। एक भारतीय किसान का जीवन बहुत कठिन होता है। वह जीवनभर मिट्टी से सोना उत्पन्न करने की तपस्या करता है। तपती धूप, कड़ाके की ठंड तथा मूसलाधार बारिश भी उसकी इस साधना को तोड़ नहीं पाते। हमारे देश की लगभग 70 प्रतिशत आबादी आज भी गाँवों में निवास करती है, जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। भारतीय किसान देशभर को अन्न, फल, साग–सब्ज़ी आदि दे रहा है, लेकिन बदले में उसे उसका पारिश्रमिक तक नहीं मिल पा रहा है। किसान का जीवन बहुत कठिन है। वह बहुत मेहनत करके फ़सल उगाता है। हालांकि कृषि की नवीन तकनीकों ने किसान की बहुत मदद की है, पर इन उपलब्धियों का लाभ एक छोटा और निर्धन किसान नहीं उठा पाता है। लेकिन फिर भी वह कड़ी मेहनत करता है और एक किसान होने का कर्त्तव्य पूरा करता है।

3. व्यायाम का महत्त्व

मानव शरीर एक मशीन की तरह है। जिस तरह एक मशीन को काम में न लाने पर वह खराब हो जाती है, उसी तरह यदि शरीर का भी उचित संचालन न किया जाए, तो उसमें कई विकार आने लगते हैं। व्यायाम शरीर के संचालन का एक अच्छा तरीका है। यह शरीर को उचित दशा में रखने में मदद करता है। व्यायाम के लिए अनेक प्रकार की विधियाँ काम में लाई जाती हैं। कुछ लोग दौड़ लगाते हैं, तो कुछ दंड–बैठक करते हैं। बच्चे खेलकूद कर अपना व्यायाम करते हैं। बुज़ुर्ग सुबह–शाम टहलकर अपना व्यायाम करते हैं। साइकिल चलाना, तैरना, बाग–बगीचों में जाकर उछल–कूद करना आदि व्यायाम की अन्य विधियाँ है। नवयुवकों में

व्यायामशालाओं में जाकर व्यायाम करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। व्यायाम चाहे किसी भी प्रकार का हो, इससे हमें बहुत लाभ होता है। शरीर में ताज़गी आती है और वह सुगठित बन जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ व्यायाम अवश्य करना चाहिए।

4. राष्ट्रीय पक्षी मोर

मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। यह एक बड़ा पक्षी है एवं इसके आकर्षक रंगीन पंख काफ़ी लम्बे होते हैं। मोर के सर पर मुकुट जैसी खूबसूरत कलगी होती है। इसकी लम्बी गर्दन पर सुन्दर नीला मखमली रंग होता है। मोर नुकसानदायक कीट पंतगों को खाता है और इसलिए यह किसानों का अच्छा मित्र होता है। मोर शब्द पुल्लिंग है तथा स्त्रीलिंग को मोरनी कहते हैं। मोर का नृत्य बहुत प्रसिद्ध है। नृत्य के समय मोर अपने पंख फैला कर बहुत सुंदर व आकर्षित नृत्य करता है। मोर का शिकार व अन्य पक्षियों की तरह उन्हें कैद में रखना भारत में पूर्णतया प्रतिबंधित है। इसे भारतीय वन्य-जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत पूर्ण संरक्षण दिया गया है।

5. बाल दिवस

बाल दिवस 14 नवम्बर को मनाया है। यह भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन होता है, इसी को बाल दिवस के रूप में मनाते हैं। पं नेहरू को बच्चों से बहुत प्यार था और बच्चे उन्हें चाचा नेहरू पुकारते थे। बाल दिवस बच्चों का पर्व है और यह दिन बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण दिन होता है। इस दिन स्कूली बच्चे बहुत खुश दिखाई देते हैं। वे सजधज कर विद्यालय जाते हैं। विद्यालयों में बच्चों के विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। बच्चे चाचा नेहरू को प्रेम से स्मरण करते हैं। नृत्य, गान एवं नाटक आदि का आयोजन किया जाता है। बाल दिवस के अवसर पर केन्द्र तथा राज्य सरकार बच्चों के भविष्य के लिए कई कार्यक्रमों की घोषणा करती है।

6. विद्यालय में मेरा प्रथम दिन

मैं आठवीं कक्षा की विद्यार्थी हूँ। इसी वर्ष मैंने नए स्कूल में दाखिला लिया है। इस स्कूल का पहला दिन मुझे अच्छी तरह याद है। मेरे लिए यह बड़ा ही रोमांचक और यादगार दिन था। मैं एक दिन पहले से ही बहुत खुश और उत्तेजित थी। पिताजी मेरे लिए नया स्कूल बैग, पुस्तकें लाए थे और मेरे लिए नई यूनिफ़ार्म भी सिलवाई थी। माँ ने कुछ सीखें दी और पिताजी ने उत्साह भरे शब्दों के साथ मुझे स्कूल के लिए रवाना किया। स्कूल बस से मैं समय पर स्कूल पहुँच गई। प्रधानाचार्य जी ने नए विद्यार्थियों का स्वागत किया। उन्होंने प्यार से मेरी पीठ थपथपाई, सभी बच्चों के चेहरों पर मुस्कुराहट थी और कक्षा में भी उत्साह का वातावरण था। कक्षा में सभी विद्यार्थियों से उनके नाम आदि के बारे में जानकारी ली गई। मैंने मध्यावकाश में जाकर कैंटीन में कचौड़ियाँ भी खाईं। इसके बाद हम वापस अपनी - अपनी कक्षाओं में चले गए। फिर दो पीरियड के बाद खेल-कूद का पीरियड आया। मैंने खो-खो खेला यह मेरा पंसदीदा खेल है। छुटटी की घंटी बजने पर बच्चे उछलकूद करते हुए विद्यालय परिसर से बाहर आ गए। बाहर खड़ी स्कूल बस में बैठकर हम अपने-अपने घरों को आ गए। रास्ते में हम सब ढेर सारी बातें करते हुए घर आए।

7. आदर्श नागरिक

आदर्श नागरिक से तात्पर्य है – एक ऐसा देशवासी, जिसका व्यवहार देश तथा देशवासियों के हित में हो। नागरिक और देश एक-दूसरे से पूर्णरूप से जुड़े हैं। किसी देश के नागरिक ही उस देश का सम्मान घटाते या बढ़ाते हैं। आदर्श नागरिक वह है, जो अपने देश के सभी नियम – कानूनों का पूरी तरह से पालन करते हैं। पूरी तरह से कानून का पालन करने का तात्पर्य है, कि वह कानून को धोखा देने की कोशिश न करें। यदि कोई कानून उसकी निजी इच्छा के विरुद्ध हो, तो भी वह समाज की इच्छा का सम्मान करते हुए अपनी निजी इच्छा को रोके या फिर कानून के विरुद्ध जनमत खड़ा करके कानून को बदलवाए। कर्त्तव्य का पालन करने वाला नागरिक श्रेष्ठ होता है, साथ ही अधिकारों के प्रति सजग होना भी उसकी विशेषता होती है। इतिहास साक्षी है, कि महात्मा गांधी को उनकी इसी विशेषता ने महान बनाया था। यदि वे अन्याय के विरुद्ध खड़े न होते, तो आज भारत आज़ाद न होता। आदर्श नागरिक अपने गुण, धर्म शक्ति, बुद्धि का विकास करके राष्ट्र का गौरव बढ़ाता है। जहाँ दारासिंह जैसे पहलवान, लता-आशा जैसी गायिकाएँ, सचिन, सायना नेहवाल जैसे खिलाड़ी, मेघा पाटेकर जैसी समाजसेवी हो, उस देश का सम्मान अपने आप बढ़ जाता है। इसलिए हर नागरिक को चाहिए, कि की वह अपनी शक्ति और क्षमता को पहचानकर ऊँचाईयों की ओर ले जाए, जिससे वे देश का गौरव बन सके।

31 कहानी-लेखन

अभ्यास

1. डाकू अंगुलिमाल

बहुत पुरानी बात है, मगध राज्य में एक सोनापुर नाम का गाँव था। उस गाँव के लोग शाम होते ही अपने घरों में आ जाते थे और सुबह होने से पहले कोई भी घर के बाहर कदम नहीं रखता था। उसका कारण डाकू अंगुलिमाल था।

डाकू अंगुलिमाल मगध के जंगलों की गुफ़ा में रहता था। वह लोगों को लूटता था और जान से भी मार देता था। लोगों को डराने के लिए वह जिसे भी मारता, उसकी एक अंगुली काट लेता और उन अंगुलियों की माला बनाकर पहनता। इसलिए उसका नाम अंगुलिमाल पड़ा। गाँव के सभी लोग परेशान थे, कैसे इस डाकू के आतंक से छुटकारा मिले।

एक दिन गौतम बुद्ध उस गाँव में आये। गाँव के लोग उनकी आवभगत करने लगे। गौतम बुद्ध ने देखा, कि गाँव के लोगो में किसी बात को लेकर दहशत फैली है।

तब गौतम बुद्ध ने गाँव वालों से इसका कारण पूछा, 'ये सुनते ही गाँववालों ने डाकू अंगुलिमाल के आतंक का पूरा किस्सा उन्हें सुनाया।'

अगले ही दिन गौतम बुद्ध जंगल की तरफ निकल गए, गाँव वालों ने उन्हे बहुत रोका पर वो नहीं माने। बुद्ध को आते देख अंगुलिमाल तलवार लेकर खड़ा हो गया, पर बुद्ध उसकी गुफ़ा के सामने से निकल गए, उन्होने पलटकर भी नहीं देखा। अंगुलिमाल उनके पीछे दौड़ा, पर दिव्य प्रभाव के कारण वह बुद्ध को पकड़ नही पा रहा था।

थक हार कर उसने कहा, 'रुको।'

बुद्ध रुक गए और मुस्कुराकर बोले, 'मैं तो कब का रुक गया, पर तुम कब यह हिंसा रोकोगे?'

अंगुलिमाल ने कहा, 'संयासी तुम्हें मुझसे डर नही लगता। सारा मगध मुझसे डरता है। तुम्हारे पास जो भी माल है, वह निकाल दो, वरना जान से हाथ धो बैठोगे। मैं इस राज्य का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति हूँ।'

बुद्ध ज़रा भी नहीं घबराए और बोले, 'मैं यह कैसे मान लूँ, कि तुम ही इस राज्य के सबसे शक्तिशाली इन्सान हो। तुम्हे यह साबित करके दिखाना होगा।'

अंगुलिमाल बोला–'बताओ, कैसे साबित करना होगा?'

बुद्ध ने कहा, 'तुम उस पेड़ से दस पत्तियाँ तोड़कर लाओ।'

अंगुलिमाल ने कहा, 'बस इतनी सी बात, मैं तो पूरा पेड़ उखाड़ सकता हूँ।'

अंगुलिमाल ने दस पत्तियाँ तोड़कर ला दी।

बुद्ध ने कहा, 'अब इन पत्तियों को पेड़ पर लगा दो।'

अंगुलिमाल ने हैरान होकर कहा, 'टूटे पत्ते कहीं वापस लगते हैं क्या?'

तो बुद्ध बोले, 'जब तुम इतनी छोटी सी चीज़ को वापस नहीं जोड़ सकते, तो तुम सबसे शक्तिशाली कैसे हुए?

यदि तुम किसी चीज़ को जोड़ नही सकते, तो कम से कम उसे तोड़ो मत। यदि किसी को जीवन नहीं दे सकते, तो उसे मृत्यु देने का भी तुम्हें कोई अधिकार नहीं है।'

यह सुनकर अंगुलिमाल को अपनी गलती का एहसास हो गया और वह बुद्ध का शिष्य बन गया और वह उसी गाँव में रहकर लोगों की सेवा करने लगा। आगे चलकर यही अंगुलिमाल बहुत बड़ा संयासी बना और अहिंसक के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शिक्षा – इंसान कितना ही बुरा क्यों न हो, वह बदल सकता है।

2. घमंडी का सिर नीचा

एक समय की बात है, कि राजा कृष्ण देवराय के दरबार में एक सेनापति आया और कहने लगा महाराज नमस्कार! मैं महान हूँ। मैंने बहुत सारे युद्ध जीते हैं, बहुत सारे महान विजेताओं को धूल चटाई है।

मैं इस दुनिया का सबसे महान और सबसे ताकतवर व्यक्ति हूँ। मुझे सम्मान मिलना चाहिए, क्योंकि मैंने इस राज्य की बहुत सी मुसीबतों में सहायता की है। मैं अगर न होता, तो यह राज्य सुरक्षित न होता।

तब राजा कृष्ण देवराय ने उस सेनापति से कहा, कि तुम इतना घमण्ड क्यों कर रहे हो। तभी सेनापति बोला, कि नही महाराज मैं तो सिर्फ़ अपने अच्छे गुणों का बखान कर रहा हूँ, कि मुझे अपने इन अच्छे गुणों के लिए पुरस्कार मिलना चाहिए। तभी राजा ने उस सेनापति को अगले दिन आने को कहा। फिर महाराज कृष्ण देव ने अपने चतुर तेनालीराम को बुलवाया और पूरा वृतांत उन्हें सुनाया।

तब तेनालीराम ने अगले दिन उस सेनापति को राजसभा में बुलवाया। तेनालीराम ने उस सेनापति से कहा, कि महाराज जो मैं अपनी बंद आँखों से कर सकता हूँ, यह सेनापति खुली आँखों से भी नहीं कर सकता।

तभी तेनालीराम ने अपनी आँखें बंद करके पिसी हुई मिर्ची अपनी आँखों में फेंकी। आँखे बंद होने के कारण उनकी आँखों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा और जब मिर्ची से भरी हुई थाल उस सेनापति के आगे प्रस्तुत की गई, तो सेनापति घबरा गया और उसने राजा से अपने घमंड करने पर माफ़ी माँगी।

शिक्षा – हमें अपने आप पर घमंड नहीं करना चाहिए।

3. हंस और मूर्ख कछुआ

एक तालाब में एक कछुआ रहता था। उसी तालाब में दो हंस तैरने के लिए आते थे। हंस बहुत मिलनसार थे। कछुए और उनमें दोस्ती होते देर न लगी। हंसों को कछुए का धीमे-धीमे चलना और उसका भोलापन बहुत अच्छा लगा। हंस बहुत ज्ञानी भी थे। वे कछुए को अद्‌भुत बातें भी बताते। हंस तो दूर दूर तक घूम कर आते, इसलिए दूसरी जगह की अनोखी बातें कछुए को बताते। कछुआ मंत्रमुग्ध होकर उनकी बातें सुनता। बाकी तो सब ठीक था, पर कछुए को बीच में टोका-टाकी करने की बहुत आदत थी। अपने सज्जन स्वभाव के कारण हंस उसकी इस आदत को बुरा नहीं मानते थे। उन तीनों की घनिष्ठता बढ़ती गई। दिन गुज़रते गए।

कुछ समय के बाद सूखा पड़ने के कारण उस तालाब का पानी सूखने लगा, प्राणी मरने लगे।, मछलियाँ तो तड़प-तड़प कर मर गई। तालाब का पानी और तेज़ी से सूखने लगा। एक समय ऐसा भी आया, कि तालाब में सिर्फ कीचड़ रह गया। कछुआ बड़े सकंट में पड़ गया। जीवन मरण का प्रश्न खड़ा हो गया। यदि कछुआ वही पड़ा रहता तो उसका अंत निश्चित था। हंस अपने मित्र पर आए संकट का उपाय सोचने लगे। वे अपने मित्र कछुए को ढाँढस बँधाने का प्रयत्न करते और हिम्मत न हारने की सलाह देते। हंस केवल झूठा दिलासा नहीं दे रहे थे। वे दूर-दूर तक उड़कर समस्या का हल ढूँढते। एक दिन लौटकर हंसों ने कहा- "मित्र यहाँ से पचास कोस दूर एक झील है। उसमें काफ़ी पानी है, तुम वहाँ मज़े से रहोगे।" कछुआ रोनी आवाज़ में बोला- "पचास कोस दूर? इतनी दूर जाने के लिए मुझे महीनों लगेंगे। तब तक मैं मर जाऊँगा।"

कछुए की बात भी ठीक थी। हंसों ने अक्ल लड़ाई और एक तरीका सोच निकाला।

वे एक लकड़ी उठाकर लाए और बोले- "मित्र हम दोनो अपनी चोंच में इस लकड़ी के दोनो सिरे पकड़कर एक साथ उड़ेंगे। तुम इस लकड़ी को बीच से मुँह से थामे रहना। इस प्रकार हम तुम्हें उस झील तक पहुँचा देंगे और उसके बाद तुम्हे कोई चिंता नही रहेगी।"

उन्होंने चेतावनी दी, "पर याद रखना, उड़ान के दौरान अपना मुहँ न खोलना वरना, गिर पड़ोगे।" कछुए ने हामी में सिर हिला दिया। बस लकड़ी पकड़कर हंस उड़ चले। उनके बीच में लकड़ी मुँह में दबाए कछुआ भी था। वे एक कस्बे के ऊपर से उड़ रहे थे, कि नीचे खड़े लोगो ने आकाश में अद्‌भुत नज़ारा देखा। सब एक दूसरे को ऊपर आकाश का दृश्य दिखाने लगे। लोग दौड़-दौड़कर अपने छज्जों पर देखने लगे। खूब शोर मचा, कछुए की नज़र उन लोगो पर पड़ी। उसे आश्चर्य हुआ, कि उन्हें इतने लोग देख रहे हैं। वह अपने मित्रों की चेतावनी भूल गया और चिल्लाया, "देखो कितने लोग हमें देख रहे हैं।" मुँह के खुलते ही वह नीचे गिर पड़ा। नीचे उसकी हड्डी-पसली का भी पता नहीं लगा।

शिक्षा – हमें अधिक नहीं बोलना चाहिए।

4. राजकुमार और हंस

एक बालक सिद्धार्थ प्रात:काल घूमने के लिए बगीचे में गया। बगीचे में बहुत से पक्षी उछल-कूद कर रहे थे। कुछ समय पश्चात् उसका भाई देवदत्त भी शिकार के लिए बगीचे में गया। देवदत्त के बाण से आकाश में एक हंस घायल हो गया। घायल हंस भूमि पर गिर गया। सिद्धार्थ को उस घायल हंस पर दया आ गई और वह उसे कुटिया में ले गया। वहाँ उसका उपचार किया। देवदत्त अपने बाण से घायल हंस को लेने के लिए वहाँ आ गया और बोला, 'यह हंस मुझे दे दो, इसे मैंने तीर से मारा है।' सिद्धार्थ बोला, 'जीव को मारना पाप है, मैंने इसकी रक्षा की है। अत: यह मेरा है।' हंस को लेकर दोनों में बहस होने लगी और दोनों भाई न्याय के लिए राजा के पास पहुँचे। सिद्धार्थ ने हंस को गोदी में ले रखा था।

राजा ने दोनों की सारी बातें सुनी और फैसला करने में देर न लगी। राजा ने कहा, 'मारने वाले से बचाने वाले का अधिकार ज्यादा होता है।' अत: हंस राजकुमार सिद्धार्थ का है।

शिक्षा – जीवों पर सदैव दया भाव रखना चाहिए।

5. गुरु की परीक्षा

एक युवक शिष्य का शिक्षाकाल समाप्त होने वाला था। निकट भविष्य में वह भी किसी आश्रम का संचालन करेगा। आश्रम छोड़ने से पहले वह यह जान लेना चाहता था, कि वह अपने गुरु को चुनौती देने या परास्त करने में सक्षम है या नहीं?

वह एक छोटी सी चिड़िया को हाथ में भींचकर अपनी पीठ की ओर करके गुरु से पूछता है, 'गुरुदेव मेरे हाथ में एक चिड़िया है। क्या आप बता सकते हैं, कि वह जीवित है अथवा मृत है?' शिष्य का योजन इस प्रकार था, कि यदि उसके गुरु चिड़िया को मृत बताएँगे, तो वह अपना हाथ खोल देगा और चिड़िया को उड़ा देगा और यदि चिड़िया को जीवित बताएँगे तो वह चिड़िया की गर्दन दबाकर मार देगा। इस प्रकार किसी भी स्थिति में वह अपने को गुरु को गलत सिद्ध कर देगा। गुरु अपने शिष्य का प्रयोजन भली प्रकार से समझ चुके थे। इसलिए उन्होंने अपने शिष्य से कहा, कि पुत्र यह तो तुम पर ही निर्भर करता है।

शिष्य अपने गुरु के वचनों को समझ गया और लज्जित होकर माफ़ी माँगने लगा।

शिक्षा – गुरु हमेशा ही शिष्य से बुद्धिमान और शक्तिशाली होते हैं।

6. बंदर और मगरमच्छ

एक नदी के किनारे एक जामुन के पेड़ पर एक बंदर रहता था, जिसकी मित्रता उस नदी में रहने वाले मगरमच्छ के साथ हो गयी। वह बंदर उस मगरमच्छ को खाने के लिए जामुन भी देता था। एक दिन उस मगरमच्छ ने कुछ जामुन अपनी पत्नी को भी खिलाये। स्वादिष्ट जामुन खाने के बाद उसने यह सोचकर, कि रोजाना ऐसे मीठे फल खाने वाले का दिल भी बहुत मीठा होगा, अपने पति से उस बंदर का दिल लाने की माँग की। पत्नी के हाथों विवश हुए मगरमच्छ ने भी एक चाल चली, और बंदर से कहा कि उसकी भाभी उससे मिलना चाहती है, इसलिए वह उसकी पीठ पर बैठ जाए, ताकि सुरक्षित उसके घर पँहुच जाए। बंदर भी अपने मित्र की बात पर भरोसा कर, पेड़ से नदी में कूदा और उसकी पीठ पर सवार हो गया। जब वे नदी के बीचों बीच पहुचे, मगरमच्छ ने सोचा कि अब बंदर को सही बात बताने में कोई हानि

नहीं है, और उसने भेद खोल दिया, कि उसकी पत्नी उसका दिल खाना चाहती है। बंदर को धक्का तो लगा, लेकिन उसने अपना धैर्य नहीं खोया और तपाक से बोला, 'ओह, तुमने यह बात पहले क्यों नहीं बताई, क्योंकि मैंने तो अपना दिल जामुन की खोखल में सम्भाल कर रखा है। अब जल्दी से मुझे वापिस नदी के किनारे ले चलो, ताकि मैं अपना दिल लाकर अपनी भाभी को उपहार में देकर, उन्हें प्रसन्न कर सकूँ।' मूर्ख मगरमच्छ बंदर को जैसे ही नदी किनारे ले कर आया, बंदर ने ज़ोर से जामुन के पेड़ पर छलांग लगाई और क्रोध से भरकर बोला, 'अरे मूर्ख, दिल के बिना भी क्या कोई जीवित रह सकता है! जा आज से तेरी मेरी मित्रता समाप्त।'

शिक्षा – संकट के क्षणों में धैर्य रखना चाहिए, ताकि हम कठिन समय पर डट कर सामना कर सकें।

7. मेहनत की परीक्षा

एक छोटा लड़का टेलीफ़ोन बूथ पर गया, जो कि स्टोर के कैश काउटंर पर था वह लड़का टेलीफ़ोन के पास गया और उसने वहाँ से एक नंबर लगाया। उस टेलीफ़ोन बूथ के दुकान का मालिक उसे देख ही रहा था और उसकी बातें भी सुन रहा था। लड़का, 'आंटी, क्या आप मुझे आपके घर के मैदान की सफ़ाई करने का काम दे सकती हो?'

महिला (जो फ़ोन पर उस बच्चे से बात कर रही थी)– हमारे पास पहले से एक लड़का काम कर रहा है, जो मेरे मैदान की सफ़ाई कर रहा है। मैं उससे बहुत संतुष्ट हूँ, वह अपना काम अच्छे से कर रहा है।

लड़का, 'आंटी मैं मैदान की सफ़ाई और कटाई के साथ-साथ फ़र्श और सीढ़ियों को भी साफ़ कर दूँगा, वह भी मुफ्त में।'

महिला, 'नहीं, धन्यवाद।'

एक अच्छी सी मुस्कान के साथ ही उस लड़के ने फ़ोन रख दिया। ये सब स्टोर का मालिक सुन रहा था, इसलिए वह जल्दी से उस लड़के के पास गया।

स्टोर मालिक, 'मुझे तुम्हारा व्यवहार पसंद आया, मुझे तुम्हारी सकारात्मक सोच पंसद आई और मैं तुम्हे एक नौकरी देना चाहूँगा।'

लड़का, 'नहीं, धन्यवाद।'

स्टोर मालिक, 'लेकिन कुछ समय पहले तो तुम इसी के लिए उस महिला से प्रार्थना कर रहे थे।'

लड़का, 'नहीं सर, मैं तो बस अपने काम को जाँच कर रहा था, जो मैं पहले से कर रहा हूँ। मैं खुद उसी महिला के लिए मैदान की सफ़ाई का काम करता हूँ, जिस महिला से मैं अभी बात कर रहा था।'

शिक्षा – किसी भी काम को अपनी पूरी लगन और मेहनत से कीजिए, तभी दुनिया आप की तारीफ़ करेगी।

32 अपठित गद्यांश

अभ्यास

1. गद्यांश – 1

1. पुर्तगाली 2. केरल 3. प्राकृतिक सौंदर्य व मंदिरों के कारण
4. मदुरई में 5. दक्षिण

2. गद्यांश – 2

1. दोनों 2. झूरी की पत्नी का भाई 3. सूँघना
4. दिन-रात 5. गया ने उनसे अच्छा व्यवहार नहीं किया था
6. दोनो नाँद में साथ मुँह डालते व निकालते

3 गद्यांश – 3

1. हँसी द्वारा 2. खिलखिलाना 3. आयु को
4. कविता की पंक्ति 5. मूर्ख

4. गद्यांश – 4

1. विदेशी 2. फिनलैंडवासियों ने 3. ईसा से डेढ़ हज़ार साल पहले
4. संयुक्ताक्षर 5. लिपि का

हिंदी व्याकरण भारती-7

1 भाषा तथा व्याकरण

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. मन के भावों व विचारों के आदान-प्रदान के साधन को भाषा कहते हैं।
2. भाषा के प्रमुख दो रूप हैं – मौखिक और लिखित।
3. अपने परिवार के सदस्यों द्‌वारा बोली जाने वाली भाषा मातृभाषा कहलाती है।
4. छत्तीसगढ़ी, गढ़वाली और कुमाऊँनी।

सोचो और लिखो-

1. जब वक्ता बोलकर व श्रोता सुनकर अपने भावों का आदान-प्रदान करते हैं, तो भाषा मौखिक रूप में होती है।

   जब हम लिखकर अपने विचारों को व्यक्त करते हैं और पाठक पढ़कर उनसे अवगत होते हैं, तो यह भाषा का लिखित रूप होता है।
2. देश के अधिकतर लोगों द्‌वारा बोली जाने वाली भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है। भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है।

   राष्ट्रीय कार्यालयों में जो भाषा राज-काज के लिए प्रयोग की जाती है, उसे उस देश की राजभाषा कहते हैं। हिंदी को भारतीय संविधान द्‌वारा 14 सितंबर, 1949 को भारत की राजभाषा घोषित किया गया है।
3. भाषा में एकरूपता लाने के लिए भाषा का स्वीकृत रूप 'मानक भाषा' कहलाता है।
4. व्याकरण के प्रमुख तीन विभाग हैं- वर्ण-विचार, शब्द-विचार व वाक्य-विचार।

ख. 1. 14 सितंबर को 2. वाक्य-विचार 3. मातृभाषा
4. देवनागरी

ग. 1. **मौखिक भाषा** – समाचार सुनना, भाषण सुनना, वार्त्तालाप, वाद-विवाद प्रतियोगिता
2. **लिखित भाषा** – संस्मरण, जीवनी, कहानी, लेख

घ.

1. बंगाली	–	बांग्ला	2. पंजाबी	–	गुरुमुखी
3. गुजराती	–	गुजराती	4. संस्कृत	–	देवनागरी
5. उर्दू	–	अरबी-फ़ारसी	6. फ्रांसीसी	–	रोमन

रोचक कार्य

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

2 वर्ण-विचार

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. भाषा की वह सबसे छोटी इकाई, जिसके और खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।
2. वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।
3. वर्णों के प्रमुख दो भेद होते हैं - स्वर और व्यंजन
4. विसर्ग का उच्चारण 'ह' की भाँति होता है। इसका प्रयोग केवल तत्सम शब्दों में किया जाता है। जैसे- पुनः, अतः, प्रातः आदि।

सोचो और लिखो-

1. ह्रस्व स्वर मूल स्वर होते हैं। इनके उच्चारण में बहुत कम समय लगता है। ये कुल चार हैं - अ, इ, उ, ऋ।

   दीर्घ स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दोगुना समय लगता हैं। ये सात हैं - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
2. शिरोरेखा के ऊपर लगाई जाने वाली बिंदु को अनुस्वार कहते हैं व यह एक उच्चारण की मात्रा है।
3. स्वरों के लिए निश्चित किए गए चिह्न ही स्वरों की मात्राएँ कहलाते हैं। व्यंजनों के साथ लिखते समय स्वरों को मात्राओं के रूप में लिखा जाता है। 'अ' प्रत्येक व्यंजन में लगा होता है। इसलिए उसकी कोई मात्रा नहीं होती है।
4. जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास-वायु मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श करती हुई निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। 'क' से 'म' तक सभी स्पर्श व्यंजन हैं।

ख. 1. वर्ण 2. श् + र 3. तवर्ग 4. ढ

ग. 1. अल्पप्राण 2. संयुक्त व्यंजन 3. ह्रस्व स्वर
4. स्वरों 5. स्पर्श व्यंजन, अंतःस्थ व्यंजन

घ.

1.	खंड	तवर्ग का पंचम वर्ण (ण)
2.	मंचन	तवर्ग का पंचम वर्ण (न)
3.	व्यंजन	टवर्ग का पंचम वर्ण (न)
4.	पंडित	टवर्ग का पंचम वर्ण (ण)
5.	संयुक्त	पवर्ग का पंचम वर्ण (म)
6.	गंगा	कवर्ग का पंचम वर्ण (ङ)

रोचक कार्य

स्वयं करें।

3 शब्द-विचार

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. वर्णों के मेल से बने सार्थक ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं।
2. वर्णों के मेल से बने सार्थक ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं।
   व्याकरणिक नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द पद बन जाते हैं।
3. शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया गया है - उत्पत्ति के आधार पर, रचना के आधार पर, प्रयोग के आधार पर, प्रयोग के आधार पर और अर्थ के आधार पर।

सोचो और लिखो-

1. किसी निश्चित अर्थ का बोध कराने वाले ऐसे शब्द, जिनके खंड नहीं किए जा सकते, रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे-आदमी, घर, पशु, पेड़ आदि।
   दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दाशों के मेल से बनने वाले ऐसे शब्द, जिनके खंड किए जा सकते हैं व जिसके प्रत्येक खंड का एक निश्चित अर्थ होता है, यौगिक शब्द कहलाते हैं। जैसे-विद्यालय = विद्या + आलय।
   दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनने वाले ऐसे शब्द, जो अपने मूल अर्थ को छोड़कर किसी अन्य अर्थ के लिए रूढ़ होते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे - नीलकंठ = नील + कंठ = शिवजी।
2. संस्कृत के वे शब्द, जो थोड़े बदलाव के बाद हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। जबकि संस्कृत के वे शब्द, जो बिना किसी बदलाव के हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।
3. प्रयोग के आधार पर शब्द के दो भेद होते हैं - विकारी शब्द और अविकारी शब्द।
4. अर्थ के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं - एकार्थी शब्द, अनेकार्थी शब्द, पर्यायवाची शब्द और विलोम या विपरीतार्थक शब्द।

ख. 1. शब्द 2. चीनी भाषा से 3. दुग्ध
4. संस्कृत से 5. योगरुढ़

ग. 1. **विकारी शब्द** - कुछ, अच्छा, तैरना, मात्र, तेज, प्रतिदिन, हमारा, चालाकी, बजाना
2. **अविकारी शब्द** - कुतुबमीनार, पीछे-पीछे, के बाद, और, अहा!, छि:-छि:, इसलिए, के सामने, सुंदर

घ. 1. तत्सम 2. सूक्ष्म 3. अर्थ 4. जापानी
5. यौगिक शब्द 6. देशज

ङ.

	तत्सम	तद्भव		तत्सम	तद्भव
1.	ज्येष्ठ	जेठ	2.	उष्ट्र	ऊँट
3.	धैर्य	धीरज	4.	भिक्षा	भीख
5.	अग्नि	आग	6.	स्वर्ण	सोना
7.	शून्य	कुछ नहीं	8.	आश्चर्य	अचरज

रोचक कार्य

फ़ारसी	अरबी	अंग्रेज़ी	पुर्तगाली	तुर्की
खूबसूरत	मतलब	स्कूल	अलमारी	तोप
बीमार	सुबह	टेलीफ़ोन	फीता	लाश
मुफ़्त	अख़बार	सर्कस	तौलिया	बंदूक
आदमी	कागज़	जेल	फालतू	बारूद
जल्दी		ड्राइवर	साबुन	कैंची
शादी				

संधि

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार 'संधि' कहलाता है।
2. जब हम संधि किए हुए शब्द को पुनः पहले वाली स्थिति में लाते हैं, तो उसे संधि-विच्छेद कहते हैं।
3. संधि मुख्यतः तीन प्रकार की होती है–स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि।

सोचो और लिखो–

1. दो स्वरों के मेल से उत्पन्न होने वाले विकार को स्वर संधि कहते हैं।
2. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं–दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण् संधि और अयादि संधि।
3. विसर्ग का किसी स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार विसर्ग संधि कहलाता है। जैसे– निः + भय = निर्भय।

   व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे– सत् + मार्ग = सन्मार्ग

ख. 1. महा + ईश 2. वार्षिक + उत्सव 3. सु + अच्छ
4. सू + अक्ति 5. शचि + इंद्र

ग.
1. वन + औषधि = वनौषधि
2. वार्ता + लाप = वार्तालाप
3. तथा + एव = तथैव
4. वि + आकुल = व्याकुल
5. शुभ + आरंभ = शुभारंभ
6. गुरु + उपदेश = गुरुपदेश
7. शिक्षा + अर्थी = शिक्षार्थी
8. परम + ओज = परमोज
9. अति + अंत = अत्यंत
10. हरि + इच्छा = हरिच्छा

घ.
1. उच्चारण = उच्च + आरण
2. नरेश = नर + ईश
3. रजनीश = रजनी + ईश
4. महर्षि = महा + ऋषि
5. अधिकांश = अधिक + अंश
6. दयानंद = दया + आनंद

7.	नारीच्छा	=	नारी	+	इच्छा	8.	गंगोर्मि	=	गंगा	+ ऊर्मि
9.	सूक्ति	=	सु	+	उक्ति	10.	भूर्ध्व	=	भू	+ अर्ध्व

रोचक कार्य

	शब्द		संधि-विच्छेद				भेद
1.	जलौषधि	=	जल	+	औषधि	=	वृद्धि संधि
2.	महेश्वर	=	महा	+	ईश्वर	=	गुण संधि
3.	रजनीश	=	रजनी	+	ईश	=	दीर्घ संधि
4.	राजर्षि	=	राजा	+	ऋषि	=	गुण संधि
5.	मतैक्य	=	मतः	+	उक्य	=	विसर्ग संधि
6.	धर्मात्मा	=	धर्म	+	आत्मा	=	दीर्घ संधि
7.	अत्यंत	=	अतः	+	यंत	=	विसर्ग संधि
8.	निश्चल	=	निः	+	छल	=	विसर्ग संधि
9.	वधूर्मि	=	वधू	+	उर्मि	=	दीर्घ संधि
10.	महेंद्र	=	महा	+	इंद्र	=	दीर्घ संधि

5 संज्ञा

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
2. संज्ञा के तीन भेद होते हैं - व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा।
3. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया व अव्यय शब्दों के अंत में प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है।

सोचो और लिखो-

1. ऐसे संज्ञा शब्द, जो किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं, वे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।
2. ऐसे संज्ञा शब्द, जो किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान का विशिष्ट नाम न बताकर उनकी संपूर्ण जाति का बोध कराते हैं, वे जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।
3. ऐसे संज्ञा शब्द, जो किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराते हैं, वे द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे - सोना, लोहा, पेट्रोल, चाँदी, घी, तेल आदि। इनकी गणना करना संभव नही होता, इसलिए हम इनका प्रयोग सदैव एकवचन में करते हैं।

   ऐसे संज्ञा शब्द, जो किसी समूह या समुदाय के लिए प्रयोग किए जाते हैं, वे समूहवाचक संज्ञा कहलाते है। जैसे-भीड़, सेना, गुच्छा आदि।

ख. 1. जातिवाचक 2. व्यक्तिवाचक 3. भाववाचक
4. भाववाचक 5. भाववाचक

ग. 1. छूट 2. भूल 3. मित्रता
4. टकराव 5. वीरता

घ.

1.	कठोरता	कठोर	2.	भय	भय
3.	लंबाई	लंबा	4.	खटास	खट्टा
5.	कड़वाहट	कड़वा	6.	एकता	एक
7.	स्वास्थ्य	स्वस्थ	8.	कृत्रिमता	कृत्रिम

ङ.

1.	<u>निर्धनता</u> मनुष्य को कमज़ोर बना देती है।	भाववाचक संज्ञा
2.	<u>भारत</u> के सैनिक वीरता से लड़ते हैं।	व्यक्तिवाचक संज्ञा
3.	<u>ताजमहल</u> प्रसिद्ध इमारत है।	व्यक्तिवाचक संज्ञा
4.	नए बजट में सीएनजी के दाम में <u>बढ़ोतरी</u> हुई है।	भाववाचक संज्ञा
5.	<u>जवानी</u> के दिन तो भुलाए नहीं भूलते।	भाववाचक संज्ञा

रोचक कार्य

स्वयं करें।

6 लिंग

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. स्त्री या पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द लिंग कहलाते हैं।
2. लिंग के दो भेद होते हैं – स्त्रीलिंग व पुल्लिंग।
3. स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।
4. पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिंग कहलाते हैं।

सोचो और लिखो–

1. हिंदी में लिंग पहचान के नियमों को निर्धारित किया गया है, ताकि लिंगों को परिवर्तन करते समय अशुद्धियाँ न हो।
2. कौआ, उल्लू, खटमल, चीता, गीदड़, मगरमच्छ, बिच्छू, मच्छर, गरुड़, बाज़, कछुआ, कीड़ा, गैंडा, खरगोश, भेड़िया आदि प्रायः पुल्लिंग होते हैं।
3. संतान, सुहागिन, नर्स, मैना, सती, सवारी, मकड़ी, मक्खी, दीमक, कोयल, चील, छिपकली, मछली, तितली, गिलहरी आदि के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं।

ख. 1. रानी 2. वर 3. कवयित्रियों 4. लुहारिन 5. माता

ग. 1 ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5 ✓

घ.

1. ग्वालिन दूध देकर चली गई।
2. साँप को देखकर शिकारी ज़ोर से भागा।
3. कालिदास महान रचनाकार थे।
4. कछुआ खरगोश के पीछे धीरे-धीरे चलने लगा।

ङ. 1. घी — आज मेरी माँ ने पाँच किलो घी खरीदा।
2. इलायची — इलायची ने खीर का स्वाद बढ़ा दिया।
3. सजावट — उसके घर की सजावट अच्छी थी।
4. मिनट — यह एक मिनट का ही काम था।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

7 वचन

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. शब्द के जिस रूप से उसके एक या एक से अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।
2. वचन के दो भेद होते हैं – एकवचन और बहुवचन।
3. संख्या में एक होने का बोध कराने वाले शब्द को एकवचन कहते हैं।
4. संख्या में एक से अधिक का बोध कराने वाले शब्द को बहुवचन कहते हैं।

सोचो और लिखो–

1. वचन की पहचान दो प्रकार से की जाती है–
संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण द्वारा और क्रिया शब्दों द्वारा।
2. वर्षा, सच, घी, सहायता, बालू, आकाश, जनता, पानी, व्यथा जैसे शब्द सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं। कुछ अन्य संज्ञाएँ जैसे–पाप, घृणा, मँहगाई, चीनी, चाँदी, पराजय, प्रेम आदि भी सदैव एकवचन में प्रयुक्त होती हैं।
3. दर्शन, हस्ताक्षर, बाल, प्राण, होश, आँसू, लोग, दाम आदि शब्द सदा बहुवचन में प्रयोग किए जाते हैं।
4. मुनि, डाकू, आदमी, फ़ौज और जग।

ख. 1. बहुवचन 2. सत्य 3. बाल
4. जनता 5. पक्षीवृंद

ग. 1. नारियों, पुरुषों 2. गाँव, कपड़े 3. बच्चे, परीक्षा
4. गरमी, हम 5. गलियों, कूड़ों

घ. **एकवचन** वर्षा, घी, सच, सहायता
बहुवचन हस्ताक्षर, बाल, प्रण, लोग

ङ.

1.	शिला	शिलाएँ	2.	मुनि	मुनिगण
3.	बहू	बहुएँ	4.	मक्खी	मक्खियाँ
5.	शाखा	शाखाएँ	6.	डिबिया	डिबियाँ

च. 1. बाँसुरीवाला मुरलियाँ लिए घूम रहा था।
2. तुम तो छोटी–छोटी बातें करते हो।

3. बालिकाओं ने सभा बुलाई।
4. सैनिक टुकड़ियों ने विद्रोह कर दिया।
5. सभी बच्चों को उनकी पसंद की पुस्तकें दे दो।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

सर्वनाम

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।
2. सर्वनाम के छः भेद होते हैं–पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम और निजवाचक सर्वनाम।
3. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं – उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष।
4. स्वयं, आप ही, अपने आप, खुद, स्वयं निजवाचक सर्वनाम होते हैं।

सोचो और लिखो–

1. वे सर्वनाम शब्द जो वक्ता (बोलने वाले), श्रोता (सुनने वाले) व किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।
2. वे सर्वनाम शब्द जो किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना की ओर संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–यह, ये, वह आदि।
   वे सर्वनाम शब्द, जो किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना की ओर संकेत न करें, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – कुछ, कोई, किसी आदि।
3. प्रश्नवाचक सर्वनामों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है।

ख. 1. संबंधवाचक 2. निश्चयवाचक 3. उत्तम पुरुषवाचक
4. अनिश्चयवाचक 5. उत्तम पुरुषवाचक

ग. 1 ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5 ✓ 6 ✗

घ.

1.	शाम के धुँधलके में <u>कोई</u> धीरे–धीरे चल रहा था।	अनिश्चयवाचक सर्वनाम
2.	सारी पुस्तकें <u>स्वयं</u> उठाकर रखूँगा।	निजवाचक सर्वनाम
3.	<u>किससे</u> बातें करते रहते हो ?	प्रश्नवाचक सर्वनाम
4.	धोबी <u>किसके</u> कपड़े धोता है ?	प्रश्नवाचक सर्वनाम
5.	जो <u>जैसा</u> करेगा, वह <u>वैसा</u> भरेगा।	संबंधवाचक सर्वनाम
6.	<u>आपसे</u> मिलकर बहुत खुशी हुई।	मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम
7.	<u>ये</u> कपड़े सही जगह रखो।	अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
8.	माँ बाज़ार से <u>कुछ</u> खाने को लेकर आना।	अनिश्चयवाचक सर्वनाम

ङ.

1.	मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम	तुम्हारा	आपको
2.	निश्चयवाचक सर्वनाम	यह	वह
3.	अनिश्चयवाचक सर्वनाम	ये	वे
4.	निजवाचक सर्वनाम	स्वयं	अपने-आप

रोचक कार्य

स्वयं करें।

9 विशेषण

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
2. जिन संज्ञा या सर्वनामों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।
3. विशेषण के चार प्रमुख भेद हैं - गुणवाचक, संख्यावाचक, परिणामवाचक तथा सार्वनामिक विशेषण।
4. विशेषण शब्दों की रचना संज्ञा, सर्वनाम व क्रिया शब्दों में प्रत्यय जोड़कर की जाती है।

सोचो और लिखो-

1. जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की माप-तोल संबंधी विशेषता का बोध करवाते हैं, परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

   संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध करवाने वाले विशेषण शब्दों को संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
2. सार्वनामिक विशेषण को संकेतवाचक विशेषण भी कहते हैं, क्योंकि ये संज्ञा के साथ आकर संज्ञा की ओर संकेत करते हैं।
3. विशेषणों की भी विशेषता बताने वाले शब्दों को प्रविशेषण कहते हैं।

   जैसे - यह **अत्यंत** होनहार युवती है।

   यह **बहुत** सुरीली आवाज़ है।
4. विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती हैं - मूलावस्था, उत्तरावस्था और उत्तमावस्था।

   मूलावस्था में किसी व्यक्ति के केवल गुण या दोष बताए जाते हैं, उनमें किसी प्रकार की कोई तुलना नहीं की जाती।

   उत्तरावस्था में दो व्यक्तियों या वस्तुओं के गुण या दोषों की परस्पर तुलना करके, किसी एक को दूसरे से श्रेष्ठ बताया जाता है।

   उत्तमावस्था में दो या दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं की परस्पर तुलना करके, किसी एक को सबसे उच्च या निम्न बताया जाता है।

ख. 1. सुखी 2. लड़ना 3. सुंदरतम 4. उत्तरावस्था

ग. 1. तेज़ 2. पाँच 3. अधिक 4. बीमार 5. ऐतिहासिक

घ. 1 आटा गूँथते समय <u>थोड़ा</u> नमक मिला लेना। अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
2. खाना खाते समय <u>ज़रा-सा</u> पानी पियो। अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
3. <u>दस ग्राम</u> सोने की एक चेन बना दो। निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
4. प्रतियोगिता में <u>कुछ</u> लोग ही सफ़ल हुए। अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
5. <u>बहुत-सी</u> पुस्तकें कमरे में बिखरी पड़ी हैं। अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

ङ. 1. सुगंधित – यह बगीचा बहुत ही सुगंधित है।
2. आधुनिक – दस आधुनिक युग में हम सभी को मिलकर साथ रहना चाहिए।
3. ईमानदार – वह बालक ईमानदार होने के साथ-साथ मेहनती भी है।
4. आकर्षक – उसका रूप बहुत ही आकर्षक है।
5. दरिद्र – वह दरिद्र परिवार से है।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

क्रिया

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं।
2. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।
3. संज्ञा या सर्वनाम के लिंग और वचन के कारण क्रिया के रूप में परिवर्तन आता है।
4. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं – सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया।
5. जिन सकर्मक क्रियाओं में एक ही कर्म होता है, उन्हें एककर्मक क्रिया कहते हैं। ऐसी सकर्मक क्रियाएँ जिनमें एक साथ दो-दो कर्म होते हैं, वे द्विकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

सोचो और लिखो-

1. जिन क्रियाओं में कर्म लगा होता है व क्रिया का फल कर्त्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं।
2. सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया के साथ क्या, किसे, किसको लगाकर प्रश्न करने पर यदि उचित उत्तर मिले, तो वह सकर्मक क्रिया होती है।
   जैसे – माली पौधों में पानी दे रहा हैं।
   इस वाक्य में सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए इस प्रकार प्रश्न किया जाएगा।
   माली किसको पानी दे रहा है? पौधों को अर्थात् क्रिया सकर्मक है।
3. रचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद होते हैं – सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया तथा पूर्वकलिक क्रिया।
4. नामधातु क्रियाओं का निर्माण संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण या अनुकरणवाची शब्दों में 'ना' प्रत्यय जोड़कर होता है।
   जैसे – लज्जा – लजाना अपना – अपनाना गरम – गरमाना

5. पूर्वकालिक क्रिया मूल धातु में कर अथवा करके लगाकर बनाई जाती है।

ख. 1. द्विकर्मक क्रिया 2. संयुक्त क्रिया 3 विशेषण से
4. दौड़कर 5. सामान्य क्रिया

ग. 1. करता 2. धोए 3. खेलते 4. आ रहे 5. बनाए

घ. 1. बड़-बड़ – बड़बड़ाना 2. हिन-हिन – हिनहिनाना
3. लालच – ललचाना 4. लज्जा – लजाना

ङ. 1. चल सकता 2. परिश्रम करता है 3. मिले
4. उदय होता है 5. पढ़ते हैं

च. 1. श्याम खाना खाता है। 2. पक्षी आसमान में उड़ता है।
3. शेर ज़ोर से दहाड़ता है। 4. रानी गीत गाती है।
5. मानव गेंद से खेलता है। 6. बानी अच्छा नाचती है।
7. तैराक पानी में तैरता है।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

11 काल

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. क्रिया के होने के समय का बोध करवाने वाले शब्द को काल कहते हैं।
2. काल के तीन भेद हैं – भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत् काल।

सोचो और लिखो-

1. क्रिया का वह रूप, जिससे किसी कार्य के बीते हुए समय में संपन्न होने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं।
2. क्रिया के जिस रूप से कार्य के चल रहे समय में होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं।
3. क्रिया के जिस रूप से कार्य के आने वाले समय में होने का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं।
4. क्रिया के जिस रूप से क्रिया के भूतकाल में ही पूर्ण होने का बोध हो, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

   क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में होने का बोध तो हो, परंतु यह पता न चले, कि क्रिया पूरी हुई है या नहीं, उसे अपूर्ण भूतकाल की क्रिया कहते हैं।
5. क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के होने की संभावना किसी दूसरे कार्य पर निर्भर हो, उसे हेतुहेतुमद् भूतकाल कहते हैं।

ख. 1. अपूर्ण भूतकाल 2. आसन्न भूतकाल 3. पूर्ण भूतकाल
4. हेतुहेतुमद् भूतकाल 5. भविष्यत् काल

ग. 1. विभु ने पुस्तक **पढ़ ली**।
2. मेरे मामा मुंबई **गए**।
3. हमने जंगल में सुंदर मोर **देखा था**।
4. अध्यापक कक्षाओं में **पढ़ा रहे थे**।
5. तुम्हारे पिता जी घर **पहुँच गए होंगे**।

घ. 1. अगर वर्षा होगी, तो हम भीग जाएँगे।
2. संभव था, गाड़ी लेट थी।
3. तुम तो सबको जानते ही होगे।
4. इंजीनियर घर का नक्शा तैयार कर रहा है।
5. सोनल आकाश के साथ बाज़ार गई थी।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

12 कारक

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया तथा वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है, उन्हें कारक कहते हैं।
2. कारक आठ प्रकार के होते हैं।
3. कर्त्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक तथा संबोधन कारक।

सोचो और लिखो–

1. कर्त्ता जिस काम को करे या फिर जिस पर क्रिया के व्यापार का फल पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं। कर्म कारक का विभक्ति-चिह्न 'को' है।
2. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने का भाव प्रकट हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान कारक का विभक्ति चिह्न 'से' है।
3.

कारक	**विभक्ति चिह्न**
कर्त्ता	ने
कर्म	को
करण	से, द्वारा, के द्वारा, के साथ
संप्रदान	को, के लिए
अपादान	से (अलग होने का भाव)
संबंध	का, के, की, रा, रे, री
अधिकरण	में, पर
संबोधन	हे! अरे!

ख. 1. अधिकरण कारक 2. संप्रदान कारक 3. करण कारक
4. अपादान कारक 5. संबंध कारक

ग. 1. कारक 2. किसी को कुछ देने 3. अलग
4. कर्त्ता 5. भूतकाल 6. परसर्ग

घ. 1. पेड़ पर पक्षियों के घोंसलों में अंडे थे।
2. महिलाओं के गले से चेन झपटने की घटनाएँ बढ़ रही हैं।
3. बच्चों के लिए कविताएँ व कहानियाँ लिखो।
4. मेरे पिता जी ने मेरे लिए मनीआर्डर भेजा है।
5. कल हमारी परीक्षा का परिणाम घोषित होगा।
6. वास्तव में मनोरंजन का उद्देश्य कार्य की थकान को मिटाना है।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

13 अविकारी शब्द (अव्यय)

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. अविकारी शब्द वे होते हैं, जिनमें लिंग, वचन, काल आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं आता।
2. कब, कहाँ, कैसे, के सामने, के समान, एवं, परंतु आदि अविकारी शब्द हैं।
3. क्रियाविशेषणों से हमें पता चलता है, कि क्रिया कब, कहाँ, कितनी व कैसे घटी।
4. वे शब्द, जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के साथ लगकर उनका संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से जोड़ते हैं, वे संबंधबोधक कहलाते हैं।
5. किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल प्रदान करने वाले शब्द 'निपात' कहलाते हैं।

सोचो और लिखो–

1. क्रिया विशेषण के चार भेद हैं – रीतिवाचक, स्थानवाचक, कालवाचक और परिमाणवाचक क्रियाविशेषण।
2. क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता बताता है, जबकि विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है।
3. क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता बताते हैं, जबकि संबंधबोधक दो संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का संबंध जोड़ने का काम करते हैं।
4. समानाधिकरण समुच्चयबोधक के चार कार्य हैं–

जोड़ने का कार्य	वह आया और शीघ्र चला गया।
विरोध प्रकट करना	वह सुंदर है, लेकिन अभिमानी भी।
विकल्पसूचक	तुम जल्दी चलो, अन्यथा पिताजी गुस्सा होंगे।
परिणामसूचक	वह देर से पहुँचा, अतः परीक्षा नहीं दे सका।

5. विस्मय, हर्ष, प्रशंसा, दु:ख आदि भावों का बोध करवाने वाले शब्द विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं। जैसे – अरे, वाह, शाबाश, हाय आदि।

6. विस्मयादिबोधक शब्दों की पहचान के लिए विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगाया जाता है।

ख. 1. निपात 2. हर्षसूचक 3. स्वीकृतिसूचक 4. क्रोधसूचक
5. संबंधबोधक

ग. 1. के बाहर 2. की तुलना 3. की तरह 4. की ओर
5. के आगे

घ.

1.	कल से ही मुझे <u>लगातार</u> चक्कर आ रहे हैं।	रीतिवाचक क्रियाविशेषण
2.	<u>थोड़ा</u> कम बोला करो।	परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
3.	उसकी तबीयत <u>अकस्मात्</u> बिगड़ गई।	रीतिवाचक क्रियाविशेषण
4.	परोपकार करने वाला <u>सदा</u> सुखी रहता है।	कालवाचक क्रियाविशेषण
5.	शांत खड़े बच्चे <u>अचानक</u> चिल्लाने लगे।	रीतिवाचक क्रियाविशेषण

ङ. 1. खाना ख़त्म हो चुका था, क्योंकि हम देर से पहुँचे थे।
2. राम और लक्ष्मण दशरथ के पुत्र थे। 3. वह गरीब है, परंतु ईमानदार है।
4. रोज़ स्कूल जाओ, अन्यथा पढ़ाई में पीछे रह जाओगे।
5. वह बहुत स्वार्थी है, इसलिए किसी की नहीं सुनता।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

14 पर्यायवाची शब्द

अभ्यास

क. 1. कामना 2. नारी 3. जल 4. पंकज 5. आग

ख. 1. पेड़, तरु, वृक्ष 2. फूल, पुष्प, सुमन
3. खग, पंछी, पक्षी 4. चाँद, चंद्र, चंद्रमा

ग. 1. चाँद 2. पशुराज 3. दुल्हन 4. ज़मीन 5. अमृत

घ. 1. माली ने अपनी स्त्री को बुरा भला कहा।
2. सभी वानरों ने मिलकर समुद्र पर पुल बाँधा।
3. सपेरे ने साँप को पिटारे में बंद कर दिया।
4. मुझे अपने आप पर घमंड है। 5. रावण की लंका सोने की थी।

रोचक कार्य

आँख	– नेत्र	जलाशय	– तालाब	राजा	– नरेश
पानी	– जल	देवता	– सुर	किनारा	– तट
कपड़ा	– वसन	बच्चा	– औलाद	उद्यान	– वाटिका
पक्षी	– विहग				

15 विलोम शब्द

अभ्यास

क. 1. विपरीत अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

2. विलोम शब्द निम्न प्रकार से बनते हैं।

- लिंग परिवर्तन के द्वारा — भाई–बहन
- भिन्न जातीय शब्द के द्वारा — अधम–उत्तम
- उपसर्ग की सहायता से — ईश्वर–अनीश्वर
- नज समास के पद बनाकर — नश्वर–अनश्वर

ख. 1. निराशा 2. आरंभ 3. स्फ़ूर्ति 4. से भिन्न होते है 5. परंपरागत

ग. 1. महँगे 2. धीरे 3. अनैतिक 4. स्वतंत्र 5. रंक 6. मौखिक

घ.

1.	अदृश्य	दृश्य	इंद्रधनुष कुछ ही देर में अदृश्य हो गया।
2.	अवनति	उन्नति	रमेश की अवनति देखकर मुझे बहुत दुःख होता हैं।
3.	आदान	प्रदान	समाचारों का आदान–प्रदान चलता ही रहता है।
4.	परतंत्र	स्वतंत्र	15 अगस्त 1947 से पहले हमारा देश परतंत्र था।
5.	नैतिक	अनैतिक	छोटे बालकों को नैतिक–अनैतिक की समझ नहीं होती है।
6.	मुमकिन	नामुमकिन	सुषमा ने नामुमकिन को मुमकिन कर दिया।
7.	साधारण	असाधारण	महात्मा बुद्ध कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

16 अनेकार्थक शब्द

अभ्यास

क. 1. भाग 2. अग्रभाग 3. ईश्वर 4. प्रयोजन 5. तालाब

ख.

1.	पक्ष	–	पक्षी	पंख	दल
2.	पूर्व	–	अतीतकाल	एक दिशा	पहले
3.	श्री	–	शोभा	कांति	संपत्ति
4.	हरि	–	हाथी	घोड़ा	वानर
5.	नग	–	नगीना	पर्वत	वृक्ष

ग. 1. परिवार 2. पक्षी 3. हथौड़ा 4. पक्षी 5. पर्दा

घ. 1. पक्ष →
- पक्षी – पक्षी आसमान में उड़ते हैं।
- दल – राम दूसरे दल का सेनापति है।

2. योग → उपाय – मेरे पास इस समस्या का उपाय नहीं है।
→ संयोग – कल ही हमारे मिलने का संयोग बना था।

3. वर्ण → जाति – वह ऊँची जाति से संबंध रखता है।
→ रंग – श्री कृष्ण जी का रंग साँवला था।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

17 एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द

अभ्यास

क. 1. बहुमूल्य 2. अस्त्र 3. वध 4. कष्ट 5. न्याय

ख. 1. वध 2. खेद 3. लालसा 4. अनिवार्य 5. भेंट

ग. 1. पाप – हमें पाप करने से बचना चाहिए।
अपराध – अपराध करने वालों को दंड अवश्य मिलता है।
2. अगम – हमारे लिए वह पथ अगम है।
दुर्गम – एक गरीब व्यक्ति के लिए दूसरे देश में जाना बहुत ही दुर्गम है।
3. पर्यटन – यह मंदिर एक पर्यटन स्थल है।
भ्रमण – राजा अपनी रानियों के साथ बाग में भ्रमण करते हैं।
4. बहुमूल्य – स्वामी विवेकानंद के विचार बहुमूल्य हैं।
अमूल्य – मेरा पुत्र अमूल्य है।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

18 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

अभ्यास

क. 1. कृतघ्न 2. दूरदर्शी 3. वाचाल 4. अनंत

ख. 1. रेखांकित 2. दुर्लभ 3. अनुपम 4. अतुलनीय 5. प्रत्यक्ष

ग. 1. दर्शनीय – देखने योग्य
2. दैनिक – प्रतिदिन होने वाला
3. अपठनीय – जो पढ़ने लायक न हो
4. आस्तिक – जो ईश्वर में विश्वास रखता हो
5. सहकर्मी – साथ काम करने वाला

घ. 1. तुम्हारा प्रेम अमूल्य है। 2. उपर्युक्त शब्दों का अर्थ बताओ।
3. ऐसी कोई बात मत कहो, जो निराधार हो 4. यह द्विसाप्ताहिक है।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

19 श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

अभ्यास

क. 1. एहसान 2. ऊपर कहा 3. वायु 4. उदासीनता
5. पर्वत

ख. 1. कूल 2. आय 3. दशा 4. किला
5. योग्य 6. आसमान 7. शौक 8. कोश

ग. 1. निराला की कृती अत्यंत सुंदर है। कृति
2. शीघ्र करो ! सभी चलने को उद्धत हैं। उद्यत
3. अली फूल-फूल पर मंडरा रहा था। अलि
4. पूजा में चढ़ाया जाने वाला जल अर्ध होता है। अर्घ्य
5. पक्षी अपने-अपने नीर में चहचहा रहे हैं। नीड़
6. राम ने धेनु पर बाण चढ़ाया व राजा जनक की प्रतिज्ञा को पूरा किया। धनु

रोचक कार्य

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

20 उपसर्ग

अभ्यास

क. 1. उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं, जो किसी शब्द के आगे लगकर नए शब्द का निर्माण करते हैं।
2. उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं - तत्सम् के उपसर्ग, हिंदी के उपसर्ग, उर्दू-फ़ारसी के उपसर्ग तथा उपसर्गों की भाँति प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय।

ख. 1. आरंभ में 2. कम 3. उल्टा 4. तत्सम शब्दों के साथ

ग.

1.	कु	–	कुकर्म	कुमार्ग	(कुमार)	कुदृष्टि
2.	अप	–	अपमान	अपरिपक्व	(अपकार)	अपयश
3.	स्व	–	स्वाधीनता	स्वजन	(स्वार्थ)	स्वागत
4.	परा	–	पराक्रम	पराधीन	परामर्श	(पराग)

घ.

1.	बद	बदनाम, बदकिस्मत	
2.	खुश	खुशहाल, खुशबू	
3.	निस्	निसंग, निशान	
4.	सत्	सत्धर्म, सत्प्रयास	
5.	निर्	निर्मम, निर्दोष	
6.	दु	दुकान, दुबला	

7. प्रति — प्रतिकूल, प्रतिध्वनि
8. भर — भरपेट, भरसक
9. अध — अधपका, अधखिला
10. अव — अवगुण, अवनति

ङ.

		उपसर्ग	मूल शब्द			उपसर्ग	मूल शब्द
1.	अवनति	अव	नति	2.	सम्मान	सम्	मान
3.	भरपूर	भर	पूर	4.	तत्पश्चात्	तत्	पश्चात्
5.	अधकचरा	अध	कचरा	6.	नालायक	ना	लायक

रोचक कार्य

स्वयं करें।

21 प्रत्यय

अभ्यास

क. 1. कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनका स्वतंत्र रूप में कोई अस्तित्व नहीं होता वे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया शब्द के पीछे लगकर नए सार्थक शब्दों का निर्माण करते हैं। ऐसे शब्दांश को प्रत्यय कहते हैं।

2. क्रिया की धातुओं के अंत में जुड़कर शब्द रचना करने वाले शब्द कृत प्रत्यय कहलाते हैं। संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण शब्दों के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण कराने वाले शब्द तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

ख 1. बच + पन — 2. सज + आवट — 3. अप + नत्व
4. आक — 5. औती

ग.

1.	ईला	रंगीला	सजीला	2.	अक्कड़	भुलक्कड़	घुमक्कड़
3.	आनी	देवरानी	भवानी	4.	पन	भोलापन	बचपन
5.	इया	खटिया	चुहिया	6.	वाई	हलवाई	बनवाई

घ.

	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय		नया शब्द
1.	अ	विज्ञान	इक	=	अवैज्ञानिक
2.	अ	शांत	इ	=	अशांति
3.	बहु	अभिमान	ई	=	बहु-अभिमानी
4.	अ	स्पष्ट	करण	=	अस्पष्टीकरण
5.	अन्	उत्साह	इत	=	अनुत्साहित

ङ.

		मूल शब्द	प्रत्यय			मूल शब्द	प्रत्यय
1.	मुस्कुराहट	मुस्कुराना	आहट	2.	देवरानी	देवर	आनी
3.	राखनहारा	राखन	हारा	4.	ईमानदार	ईमान	दार
5.	पढ़ाकू	पढ़	आकू	6.	लड़कपन	लड़का	पन
7.	पूजनीय	पूजन	ईय	8.	सुनवाई	सुन	वाई

रोचक कार्य

स्वयं करें।

22 समास

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. परस्पर संबंध रखने वाले शब्दों को संक्षिप्त करके, नया शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं।
2. समस्तपद के दो पद होते हैं। पहला पद – पूर्व पद और दूसरा पद – उत्तर पद।
3. समस्तपदों को अलग करने की प्रक्रिया समास विग्रह कहलाती है।

सोचो और लिखो-

1. समास के छः भेद होते हैं – अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, कर्मधारय समास, द्विगु समास, द्वंद्व समास और बहुब्रीहि समास।
2. अव्ययीभाव समास में पहला पद प्रधान होने के साथ-साथ अव्यय भी होता है, जिससे समस्तपद भी अव्यय बन जाते हैं।
3. तत्पुरुष समास में पहला पद प्रधान न होकर दूसरा पद प्रधान होता है। समस्तपद बनाते समय कारक-चिह्नों का लोप हो जाता है।
4. द्वंद्व समास में प्रयुक्त शब्द जोड़े के रूप में होते हैं। इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। ये दोनों पद परस्पर योजक चिह्न द्वारा जुड़े होते हैं। जबकि द्विगु समास का पूर्व पद संख्यावाचक होता है तथा संपूर्ण पद समूहवाचक होता है।
5. बहुब्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं। जबकि कर्मधारय समास में पूर्व पद व उत्तर पद में विशेषण – विशेष्य या उपमेय-उपमान का संबंध होता है।

ख. 1. कर्मधारय 2. द्वंद्व 3. द्विगु 4. अव्ययीभाव
5. अव्ययीभाव

ग.

	समास-विग्रह	**समस्तपद**	**समास का नाम**
1.	दाल और भात	दाल – भात	द्वंद्व समास
2.	पाप या पुण्य	पाप – पुण्य	द्वंद्व समास
3.	पाँच तंत्रों का समूह	पंचतंत्र	द्विगु समास
4.	भूख से मरा हुआ	भूखमरा	तत्पुरुष समास
5.	नीला है कंठ जो	नीलकंठ	बहुब्रीहि समास
6.	घन के समान श्याम	घनश्याम	कर्मधारय समास

घ.

	समस्तपद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
1.	प्रतिक्षण	प्रति क्षण	द्विगु समास
2.	आजीवन	जीवन भर	अव्ययीभाव समास
3.	हस्तलिखित	हाथों से लिखा हुआ	तत्पुरुष समास
4.	मुरलीधर	मुरली को रखने वाला	बहुब्रीहि समास

	समस्तपद	समास-विग्रह	समास का नाम
5.	कमलनयन	कमल नयन	कर्मधारय समास
6.	चतुर्भुज	चार हैं भुजाँए जिसकी	बहुब्रीहि समास

ङ. 1. छात्रों को विद्याधन का अर्जन करना चाहिए।
2. मैंने रातोंरात सारा घर साफ़ कर दिया।
3. बिहारी ने सप्तशती दोहे लिखे।
4. श्रीराम ने 14 वर्ष तक वनवास किया।
5. आज बहुत दिनों बाद हमने भरपेट खाना खाया।

च. 1. विष्णु सबके पालनहार हैं।
2. सुख और दु:ख जीवन के दो पहलू हैं।
3. बिना खटके उसकी बात मान लो।
4. इस बात की खबर कान ही कान में नहीं होनी चाहिए।
5. सात ऋषियों का समूह रात में चमकते हुए दिखाई देता है।
6. शिव जी तीनों लोकों के स्वामी हैं।

रोचक कार्य

तत्पुरुष	द्विगु	द्वंद्व	अव्ययीभाव
राजसभा	तिरंगा	साथ-साथ	यथाविधि
देवालय	त्रिफला	सुख-दु:ख	यथेचित
परीक्षा केन्द्र	नवरात्रा	माँ-बाप	बेखटके
माखन-चोर			प्रतिदिन

23 वाक्य-रचना

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. सार्थक शब्दों का ऐसा व्यवस्थित समूह, जो पूरा अर्थ प्रकट करे, वाक्य कहलाता है।
2. वाक्य में प्रयुक्त शब्द व्याकरणिक नियमों से बँधे हुए होते हैं, जिसके कारण उन्हें पद कहा जाता है।
3. वाक्य के प्रमुख दो भाग होते हैं - उद्देश्य और विधेय।

सोचो और लिखो-

1. वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं। वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं।
2. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं - विधानवाचक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, निषेधवाचक वाक्य, संदेहवाचक वाक्य, संकेतवाचक वाक्य, आज्ञावाचक वाक्य, इच्छावाचक वाक्य, विस्मयादिवाचक वाक्य।

3. जिनमें एक प्रधान उपवाक्य व अन्य आश्रित अपवाक्य हों, उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं। जिन वाक्यों में दो या दो से अधिक स्वतंत्र समानाधिकरण वाक्य हों, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं।

ख. 1. संदेहवाचक 2. संयुक्त 3. इच्छावाचक 4. गुरुजी
5. विधानवाचक

ग. 1. संदेहवाचक वाक्य 2. संकेतवाचक वाक्य 3. आज्ञावाचक वाक्य
4. इच्छावाचक वाक्य 5. विस्मयादिवाचक वाक्य

घ. 1. **उद्देश्य** लेखक **विधेय** का काम मधुमक्खियों से मिलता है।
2. **उद्देश्य** सब **विधेय** चलकर पहले मेरे पास आओ।
3. **उद्देश्य** विद्यार्थियों **विधेय** में अनुशासनहीनता माता-पिता की ढिलाई के कारण है।
4. **उद्देश्य** हमने **विधेय** सड़क के किनारे पेड़ लगाए।
5. **उद्देश्य** प्राचीन भारत **विधेय** बहुत उन्नत था।

ङ. 1. रामचंद्र ने पिता की आज्ञा मान ली और फिर वन में चले गए।
2. बच्चों ने ब्रुश उठाया और चित्र में रंग भरा।
3. वह बहुत मेहनती थी, इसलिए प्रथम आई।
4. छत से छलाँग लगाई और वह भाग गया।
5. बारिश शुरू होते ही बच्चे वर्षा में भीगने लगे।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

24 विराम-चिह्न

अभ्यास

क. 1. भाषा में लिखते समय रुकने का संकेत देने वाले चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।
2. लिखते समय रुकने का संकेत देने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

ख. 1. प्रश्नवाचक 2. निर्देशक चिह्न 3. दोहरा उद्धरण चिह्न
4. अल्पविराम

ग. 1. राजू, मीना और सुमित मेरे मित्र हैं।
2. वाह! कितना सुंदर दृश्य है।
3. हम मेला देखने गए थे।
4. पं जवाहरलाल नेहरु को बच्चे बहुत प्रिय थे।
5. तुम्हें क्या चाहिए?
6. सही विकल्प चुनो -
(क) राम (ख) सीता (ग) लक्ष्मण
7. तिलक ने कहा, "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।"
8. आसमान में काले बादल छाए; बिजली उमड़ी-घुमड़ी; घनघोर वर्षा शुरू हो गई।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

25 अशुद्धि-शोधन

अभ्यास

क. 1. अशुद्ध लेखन को शुद्ध करना अशुद्धि-शोधन कहलाता है।

2. अशुद्ध लेखन मूलत: अशुद्ध उच्चारण के कारण होता है।

3. अशुद्ध उच्चारण को सुधारकर वर्तनी की अशुद्धियाँ दूर की जा सकती हैं।

ख

1.	उज्ज्वल	उज्वल	उज्जवल ✓
2.	त्योहार ✓	त्यौहार	तयौहार
3.	आर्शीवाद	आशीर्वाद ✓	आशिर्वाद
4.	दवाई	दवाईयाँ	दवाइयाँ ✓
5.	कवियत्री	कवयित्री ✓	कवयित्रि

ग.

1.	क्योंकि	क्योंकि	2.	चिन्ह	चिह्न
3.	उपलक्ष	उपलक्ष्य	4.	त्यौहार	त्योहार
5.	रामायन	रामायण	6.	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप
7.	सुर्य	सूर्य	8.	आशीश	आशीष
9.	नीतिक	नैतिक	10.	प्रसंशा	प्रशंसा
11.	पैत्रिक	पौत्रिक	12.	संसारिक	सांसारिक

घ.

1. इसका अनेक भाषाओं में अनुवाद करो।
2. दही जम गई है।
3. लक्ष्मीबाई बहुत वीरांगना थीं।
4. मात्र हज़ार रुपए में क्या आएगा।
5. मेरे दादा जी आए हैं।
6. तुम्हें माँ ने बुलाया है।
7. पक्षी धरती पर चक्कर काटने लगे।
8. कुछ आदमियों को बुलाओ।
9. फूलों की एक माला दीजिए।
10. घर में मत खेलो।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

26 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

अभ्यास

क. 1. मुहावरे से अभिप्राय ऐसे शब्द समूह से है, जो अपने सामान्य अर्थ के स्थान पर किसी विशिष्ट अर्थ की अभिव्यक्ति करते हैं।

2. लोकोक्तियाँ लोगों द्वारा कही गई उक्तियाँ (बातें) होती हैं, जिन्हें कहावत कहते हैं।

3. भावों और विचारों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है।

4. भावों और विचारों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है, जबकि लोकोक्तियों का प्रयोग व्यंग्य करने, शिक्षा देने व चेतावनी देने के लिए भी किया जाता है।

ख. 1. खुशियाँ मनाना 2. मूर्खों में थोड़ा ज्ञानी 3. मूर्ख
4. बहुत शोर करना 5. बहुत तेज़ दौड़ना

ग. 1. कहाँ रहते हो? आजकल तो **ईद का चाँद हो गए हो**।
2. पुलिस को देखते ही चोर **नौ दो ग्यारह** हो गया।
3. बच्चों! चिड़िया के घोंसले को **तीन-तेरह** न करो।
4. इसे छोटा बच्चा मत समझो। इसके **बहुत पर निकले हुए** है।
5. मेरा घोड़ा तो **हवा में बातें** करता है।
6. शत्रु की बातों में आकर **उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया**।
7. तुमसे कितनी बार कहा है, मेरे काम में **टाँग अड़ाना** छोड़ दो।

घ. 1. घर का भेदी लंका ढाए। 2. चोर पर मोर
3. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए। 4. एक तीर से दो निशाने लगाना।
5. सोने पे सुहागा। 6. एक और एक ग्यारह।
7. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे। 8. काठ की हाँडी दूसरी बार नहीं चढ़ती।
9. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद 10. आम के आम गुठलियों के दाम

ङ. 1. रात में किसान घोड़े बेचकर सोने लगा।
2. घर का सामान बिखरा देखकर मेरा माथा ठनक गया।
3. भूख के मारे मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।
4. पढ़ाई करने के लिए बोलते ही रोहन अगर-मगर करने लगा।
5. पुस्तक न मिलने पर राजू ने आसमान सिर पर उठा लिया।
6. करण का काम होते ही उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया।
7. छोटू अपने घर में सबके गले का हार है।

रोचक कार्य

क.

1.	आँख	आँखों का तारा	आँखें चार होना
2.	नाक	नाक में दम करना	नाक कटना
3.	दाँत	दाँत खट्टे करना	दाँतों तले उँगली दबाना
4.	कान	कान भरना	कान खड़े होना
5.	मुँह	मुँह तोड़ जवाब देना	मुँह ताकना
6.	अँगूठा	अँगूठा दिखाना	अँगूठा छाप होना

ख. स्वयं करें।

27 अपठित गद्यांश

अभ्यास

1. गद्यांश – 1

1. चुनौती 2. मुकाबले के लिए तैयार होना 3. आजीवन
4. शक्ति 5. क्षणिक 6. महान है जो पुरुष

2. गद्यांश – 2

1. व्यायाम की 2. शिथिल 3. रोग है 4. विदेशी
5. समुच्चयबोधक

3 गद्यांश – 3

1. दोनों 2. गरदन 3. असमान था 4. संबंध कारक
5. द्वंद्व समास

4. गद्यांश – 4

1. भाव का 2. विनम्रता 3. दाता के मन में प्रवेश पाना
4. अंहकार का 5. विनम्रता

28 अपठित पद्यांश

अभ्यास

1. पद्यांश – 1

1. झाँसी की रानी की 2. बलिदान की 3. की मृत्यु हुई थी
4. मर्दानी 5. ता 6. दिव्य

2. पद्यांश – 2

1. बूंद 2. धरती से 3. ग्रीष्म ऋतु 4. हरी दूब की
5. संख्यावाचक 6. सकर्मक

3 पद्यांश – 3

1. गाते हैं 2. सरल 3. पूरा करके 4. आपदा
5. योजक चिह्न

4. पद्यांश – 4

1. चुनौती 2. सुधार 3. जब तक सफ़ल न हो
4. कार्य से होती है 5. दोनों

29 सूचना-लेखन

अभ्यास

1. **सरस्वती विद्या मंदिर**

सूचना

30 अगस्त 20.....

दर्शनीय स्थलों का भ्रमण

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है, कि हमारा विद्यालय कक्षा -6 और 7 को दिल्ली के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण का आयोजन कर रहा है। इस भ्रमण का शुल्क 150 ₹ प्रति विद्यार्थी है। भ्रमण के लिए जाने वाले इच्छुक विद्यार्थी अपना शुल्क 4 सितंबर को ऑडिटोरियम में जमा करवा दें। भ्रमण के लिए 5 सितंबर को सुबह 6 बजे स्कूल बस से रवाना होंगें।

रवि प्रकाश

(सांस्कृतिक विभाग)

अध्यक्ष

2. **डी॰ कॉन्वेंट स्कूल, नई दिल्ली**

सूचना

13 अप्रैल 20.....

खोया-पाया

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि प्रार्थना सभा के दौरान मेरी हिंदी की पुस्तक विद्यालय के प्रागंण में खो गई है। जिस किसी विद्यार्थी को मिले, वह कृपया कार्यालय में जमा करवाए।

महेंद्र

कक्षा - सात 'अ'

3. **जी॰ डी॰ गोयनका इंटरनेशनल स्कूल, वेसू, सूरत**

सूचना

26 जुलाई 20.....

वाद-विवाद प्रतियोगिता

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है, कि अन्त: विद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिता विद्यालय के सभागार में आयोजित है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए विद्यार्थियों के नाम आमंत्रित हैं।

दिनांक - 30 जुलाई 20.....

समय - प्रात: 10 बजे

स्थान - विद्यालय सभागार

विषय - वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी अपना नाम 30 जुलाई 20..... तक हिंदी साहित्य समिति के सचिव को दें।

हरिओम दूबे

सचिव

हिंदी साहित्य समिति

4. **हिमालय पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली**

सूचना

29 नवंबर 20.....

परीक्षा की नई तिथि

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है, कि 15 दिसंबर से आरंभ होने वाली परीक्षाओं की तिथियों को किसी कारणवश स्थगित कर दिया गया है। अपनी-अपनी कक्षा की परीक्षाओं की नई तिथि लेने के लिए सभी छात्र लाइब्रेरी में पँहुचे।

परीक्षा अधिकारी

रविंद्र श्रीवास्तव

30 संवाद-लेखन

अभ्यास

1. **डॉक्टर व रोगी के मध्य संवाद**

कुमार – नमस्ते, डॉक्टर साहब।

डॉक्टर – नमस्कार, तुम्हें क्या तकलीफ़ है?

कुमार – मुझे दो दिन से बुखार है।

डॉक्टर – आपका नाम क्या है?

कुमार – मेरा नाम कुमार है।

डॉक्टर – उम्र?

कुमार – पच्चीस वर्ष

डॉक्टर – यह थर्मामीटर मुँह में लगाओ।

कुमार – जी, डॉक्टर

डॉक्टर – घबराने की कोई बात नहीं है। यह तो साधारण बुखार है। आप पाँच दिन के लिए ये दवाई लेकर जाइए।

कुमार – ये दवाई कब और कैसे खानी है?

डॉक्टर – सवेरे, दोपहर और रात को भोजन के बाद एक-एक गोली खाइए।

कुमार – शुक्रिया, डॉक्टर साहब।

2. प्रधानाचार्य व छात्रा के मध्य संवाद

प्रधानाचार्य – रजनी तुम्हारा गृहकार्य कहाँ है?

रजनी – सर! मैं अपना गृहकार्य नहीं कर पाई।

प्रधानाचार्य – क्यों नहीं कर पाई?

रजनी – कल मेरे घर में एक कार्यक्रम था, जिसके कारण मैं अपना गृहकार्य नहीं कर पाई।

प्रधानाचार्य – इसका मतलब, तुम्हारे लिए पढ़ाई से ज़्यादा कार्यक्रम ज़रूरी है।

रजनी – मैं आपसे क्षमा माँगती हूँ, कि मैंने अपना गृहकार्य नहीं किया। परंतु आज के बाद आपको शिकायत का कोई मौका नहीं मिलेगा।

प्रधानाचार्य – ठीक है। मैं तुम्हें एक मौका दे रहा हूँ। कल अपना गृहकार्य पूरा करके लाना।

रजनी – जी सर, कल मैं अपना गृहकार्य पूरा करके लाऊँगी।

3. एक वृद्ध का पार्क में खेलती छोटी बच्ची से संवाद

वृद्ध – क्या खेल रही हो, बेटी?

बच्ची – मैं गेंद से खेल रही हूँ।

वृद्ध – तुम्हें गेंद से खेलना अच्छा लगता है?

बच्ची – हाँ मुझे गेंद से खेलना बहुत अच्छा लगता है।

वृद्ध – तुम्हें और क्या-क्या अच्छा लगता है?

बच्ची – मुझे झूला झूलना, अपनी सहेलियों के साथ खेलना अच्छा लगता है।

वृद्ध – क्या तुम अभी झूला झूलना चाहोगी?

बच्ची – जी हाँ।

वृद्ध – चलो मैं तुम्हें झूला झुलाता हूँ।

बच्ची – ठीक है चलिए।

4. गाड़ी के आने की सूचना पाने के लिए रेलवे कर्मचारी से संवाद

रेलवे कर्मचारी – बोलिए भाई साहब/सर/मैडम, आपको कहाँ का टिकट चाहिए?

ग्राहक – मुझे दिल्ली से आगरा जाना है।

रेलवे कर्मचारी – आपको कब जाना है?

ग्राहक – मुझे कल सुबह जाना है।

रेलवे कर्मचारी – आप ताज एक्सप्रेस से आगरा जा सकते हो?

ग्राहक – ताज एक्सप्रेस कितने बजे आएगी?

रेलवे कर्मचारी – ताज एक्सप्रेस शाम को पाँच बजे आएगी।

ग्राहक – ठीक है, ताज एक्सप्रेस की दो टिकटें दे दो।

रेलवे कर्मचारी – दो टिकटों के 400 रुपये हैं।

ग्राहक – यह लीजिए 400 रुपये।

रेलवे कर्मचारी – यह लीजिए आपकी दो टिकटें।
ग्राहक – शुक्रिया!

5. घर में आए अतिथि व बच्चे के मध्य संवाद

राकेश और ललिता – नमस्ते मारिया।
मारिया – नमस्ते, बच्चों! कैसे हो तुम दोनो?
राकेश और ललिता – हम सब ठीक हैं और तुम कैसी हो? तुम्हारी यात्रा कैसी रही?
मारिया – मैं भी ठीक हूँ। मेरी यात्रा लम्बी थी, मगर अच्छी रही।
राकेश – तुम लम्बी यात्रा से आई हो, तुम चाहे तो रिफ्रेश हो लो, तब तक ललिता गरमा–गरम चाय और कुछ और बना लेगी।
मारिया – हाँ यात्रा बहुत लंबी थी। मैं ज़रुर रिफ्रेश होना चाँहूगी।
राकेश – ललिता ज़रा मारिया को बाथरुम दिखा देना।
ललिता – मारिया आओ, मैं तुम्हें बाथरुम दिखा देती हूँ।
मारिया – धन्यवाद।

6. रास्ता पूछते हुए रिक्शेवाले से संवाद।

राहगीर – भाई साहब ज़रा सुनिए।
रिक्शेवाला – जी हाँ।
राहगीर – भाई साहब! गली नं. 4 किधर है।
रिक्शेवाला – आगे की दो गलियों को छोड़कर गली नं. 4 है।
राहगीर – यहाँ से दाएँ मुड़ना है या बाएँ।
रिक्शेवाला – आपको किसके घर जाना है।
राहगीर – मुझे श्रीमान वर्मा जी के यहाँ जाना है।
रिक्शेवाला – आप यहाँ से बाएँ मुड़ जाइए।
राहगीर – धन्यवाद।

7. कार की मरम्मत करवाते हुए मैकेनिक से संवाद

मालिक – भाई साहब, जरा मेरी गाड़ी देखना।
मैकेनिक – आपकी गाड़ी में क्या हुआ?
मालिक – मेरी गाड़ी की ब्रेक ठीक से काम नहीं कर रही है।
मैकेनिक – मैं चैक कर लेता हूँ।
मालिक – क्या दिक्कत है गाड़ी में?
मैकेनिक – भाई साहब आपकी गाड़ी की ब्रेक की तार पुरानी और ढीली हो गई है।
मालिक – ठीक है। इसे सही कर दीजिए।
मैकेनिक – ठीक है, लेकिन इसमें अभी समय लगेगा।
मालिक – कितना समय लगेगा?

मैकेनिक – कम से कम दो घंटे लगेंगे।
मालिक – ठीक है। मैं दो घंटे बाद आता हूँ।
मैकेनिक – ठीक है। तब तक मैं इसे ठीक कर देता हूँ।

31 विज्ञापन-लेखन

अभ्यास

स्वयं करें।

32 पत्र–लेखन

अभ्यास

1. सेवा में,
प्रधानाचार्य जी
डी ए वी स्कूल,
अम्बाला
श्रीमान जी,
निवेदन यह है, कि मेरे बड़े भाई का विवाह 23 जुलाई को है। बारात करनाल जाएगी। बारात में मेरे सभी घरवाले जाएँगे। उसमें मेरा जाना भी ज़रुरी है। इस कारण मैं तीन दिन तक विद्यालय नहीं आ पाऊँगा। इसलिए मुझे 23 जुलाई से लेकर 25 जुलाई तक का अवकाश प्रदान करें। आपकी अति कृपा होगी।
मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
रविन्द्र ठाकुर
कक्षा – 10वीं अ
रोल न – 21

2. 73 राजेन्द्र नगर
नई दिल्ली
दिनांक – 22 अगस्त 20.....

प्रिय सुबोध

आशा है, तुम सकुशल एवं आनंद से होगे। मैं भी यहाँ अपने परिवारजनों सहित कुशलपूर्वक हूँ। मैं दो दिन पूर्व ही नैनीताल का भ्रमण कर वापस लौटा हूँ।
नैनीताल एक पर्वतीय स्थल है। पर्यटन की दृष्टि से यह भारत के महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में से एक है। चारों ओर हरे-भरे पहाड़ों व सुंदर प्राकृतिक दृश्यों से घिरा यह स्थल, सभी का मन

मोह लेता है। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ की ठंडी हवाएँ सभी को ताज़गी पहुँचाती हैं। यहाँ की झील में नौका विहार का आनंद ही कुछ और है।

पहाड़ी मार्ग के किनारे गहरी सुंदर घाटियों का दृश्य अद्‌भुत लगता है। रास्ते में पहाड़ो से निकलकर बहते झरनों का दृश्य तो इतना मनमोहक लगता है, कि लोग मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। ऊँचाई पर एक जगह बादल हमारी बस की खिड़कियों से अंदर प्रवेश करने लगे। उस समय सचमुच ऐसा लग रहा था, जैसे हम स्वर्ग का सुख प्राप्त कर रहे हैं।

तुम्हारी छुट्टियाँ कैसी बीतीं, इसका उल्लेख अपने पत्र में अवश्य करना। अपने माता-पिता को मेरा सादर प्रणाम कहना।

सप्रेम,

तुम्हारा मित्र
रोहित

3. सेवा में,

श्री प्रधानाचार्य जी
राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय
दरियागंज, नई दिल्ली।

श्रीमान जी,

सविनय निवेदन यह है, कि हमने मयूर विहार में मकान बनवा लिया है और अब वहीं रहने लगे है। मयूर विहार से दरियागंज बहुत दूर पड़ता है। इसी कारण अब मैं वहीं के विद्यालय में अध्ययन करूँगा।

अत: मुझे विद्यालय छोड़ने का प्रमाण पत्र देने की कृपा करें, ताकि मेरा मयूर विहार के स्कूल में दाख़िला हो सके।

धन्यवाद सहित

आपका आज्ञाकारी शिष्य

हिमांशु
कक्षा 9 वीं ब
दिनांक 20, अगस्त .....

4. ई॰ पू॰ - 48 ए
भजनपुरा,
नई दिल्ली
दिनांक - 20 जुलाई 20.....

प्रिय मित्र रोहित,

तुम्हारा पत्र मिला पढ़कर बहुत खुशी हुई। तुमने अपने पत्र में मुझसे यह जानने की इच्छा की है कि मेरा छुट्टियों में क्या कार्यक्रम है। तुम्हें याद होगा, कि पिछली छुट्टियों में हम साथ-साथ गोवा घूमने गए थे। इस बार मैं चाहता हूँ कि हम दोनों कश्मीर चलें और वहीं पर अपनी

छुट्टियाँ बिताएँ। 'धरती का स्वर्ग' कहा जाने वाला कश्मीर हम अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखेंगे। वहाँ पर बर्फ़ के गोलों से खेलेंगे, झील में नौका विहार करेंगे, सुन्दर-सुन्दर स्थानों को देखेंगे, बर्फ़ से ढकी चोटियाँ निश्चय ही हमें आनन्दित करेंगी। इसके सौन्दर्य से मोहित होकर हम भी कह उठेंगे, कि यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है और कहीं नहीं।

आशा है तुम्हें कश्मीर जाने का मेरा इरादा पसन्द आएगा और जाने में कोई कठिनाई या आपत्ति नहीं होगी।

शेष कुशल

तुम्हारा मित्र

परमजीत

5. 73, राजेन्द्र नगर

नई दिल्ली

दिनांक - 22 अगस्त 20.....

आदरणीय भैया

सादर चरण स्पर्श

कामना है, आप कुशल-पूर्वक होंगे। हम सभी पिताजी की बीमारी से चिंतित हैं, तो आपको विस्तार से लिख रहा हूँ। कुछ दिनों पहले उन्हें बुखार आया था। चिकित्सक का परामर्श लेने पर ज्ञात हुआ, कि उन्हें मलेरिया है। तीन दिनों पश्चात् बुख़ार नियंत्रण में आ गया, उन्हें कमज़ोरी महसूस हो रही थी। परसों रात में उन्हें फिर बुख़ार आ गया। उन्होंने आयुर्वेदिक इलाज लेने की इच्छा व्यक्त की तो मैं वैद्यजी को घर ही ले आया। उन्होंने नाड़ी परीक्षण के बाद टाईफ़ाइड होने की आशंका जताई। उन्होंने शहर जाकर रक्त जाँच का भी निर्देश दिया। आपको पता है, कि गाँव में समस्त चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। इसके अलावा कल से मेरी अर्द्धवार्षिक परीक्षा प्रारम्भ हो रही है। अत: मैं पिताजी को शहर नहीं ले जा सकता। वे आपको याद भी कर रहे हैं। आपको अवकाश मिले, तो आप कृपया जल्दी से जल्दी आ जाइए, ताकि पिताजी को शहर के किसी गुणी चिकित्सक को दिखा सकें। माँ और दीदी भी बहुत चिंतित हैं, तो आप शीघ्र आ जायें।

आपका भाई

अभिजीत

6. सेवा में

खेल शिक्षक महोदय,

आदर्श विद्यालय राज नगर

विषय : खेलकूद की सुविधाएँ बढ़ाने हेतु आवेदन।

महोदय

सविनय निवेदन है, कि विद्यालय में खेलकूद का पीरियड होते हुए भी अनेक आवश्यक चीज़ें जैसे वालीबॉल का नेट, बैडमिंटन की शटल, कैरमबोर्ड, फुटबाल के गोल पोस्ट का नेट आदि उपलब्ध नहीं हैं, जिससे हम खेल-पीरियड का उपयोग नहीं कर पाते।

अत: निवेदन है, कि इन सभी चीजों की व्यवस्था यथाशीघ्र की जाए। हम आपके आभारी रहेंगे।

आपके आज्ञाकारी
कक्षा सातवीं के सभी छात्र

7. आर॰ के॰ पुरम,
नई दिल्ली।

दिनांक – 4 नवंबर 20.....

आदरणीय माता जी,

सादर प्रणाम!

बहुत दिनों से आपका पत्र नहीं आया। अत: मैं स्वयं ही पत्र लिख रहा हूँ। आशा करता हूँ, कि आप वहाँ कुशलतापूर्वक होंगे। माँ आगे का हाल समाचार यह है, कि सातवीं की परीक्षा अगले महीने से आरम्भ होने वाली है। मैं परीक्षा की तैयारी में ही लगा हूँ। इस वर्ष भी मैं प्रथम स्थान प्राप्त करूँ, मेरा यही प्रयास है।

मेरे विद्यालय का वातावरण बहुत अच्छा है। यहाँ आकर पता ही नहीं चला, कैसे एक वर्ष व्यतीत हो गया। मैं सुबह 5 बजे उठकर अपने मित्रों के साथ व्यायाम करता हूँ। 7 बजे तक नाश्ता करके विद्यालय चला जाता हूँ। 2 बजे विद्यालय से आकर भोजन करता हूँ। तत्पश्चात् 3 बजे अपना गृहकार्य करता हूँ। 5 बजे से 6 बजे तक अपने मित्रों के साथ खेलता हूँ। वहाँ से आने के बाद अपनी कहानियों की पुस्तक पढ़ता हूँ। फिर 9 बजे तक खाना खाकर सोने चला जाता हूँ। परंतु क्योंकि परिक्षाएँ नज़दीक ही हैं तो मैं 10 बजे तक परीक्षा की तैयारी करता हूँ।

यहाँ पर मुझे अपना सारा काम स्वयं ही करना पड़ता है, जिसके कारण मैं ज़िम्मेदार बन गया हूँ। अब पत्र समाप्त करता हूँ। घर में सबको मेरा प्रणाम कहना।

आपका पुत्र
अजय

अनुच्छेद-लेखन

अभ्यास

1. जीवन में अनुशासन का महत्त्व

अनुशासन का अर्थ है–शासन को मानना या शासन का अनुसरण करना। जब हम शासन को मानते हैं, तो हमारा जीवन व्यवस्थित हो जाता है। हमारे जीवन में एक तरह की नियमबद्धता आ जाती है। नियमबद्ध होकर कार्य करने में बहुत आनंद आता है। तब हर कार्य सरल हो जाता है। यही कारण है, कि विद्यालयों में अनुशासन को बनाकर रखने का प्रयास किया जाता है। सेना और पुलिसबलों में अनुशासन को बहुत महत्त्व दिया जाता है। इसी तरह परिवार और समाज में भी अनुशासन का होना आवश्यक होता है। अनुशासन से राष्ट्र की उन्नति होती है।

अनुशासित जीवन जीने वाले व्यक्ति को अनेक प्रकार से लाभ होता है। उसके अंदर साहस, धैर्य जैसे गुणों का विकास होता है। इसलिए हमें समाज, सरकार या अन्य किसी भी संस्था द्वारा बनाए गए अनुशासन को मानना चाहिए। अनुशासन तोड़ने वालों के साथ किसी भी प्रकार की सहानुभूति नहीं दिखानी चाहिए।

2. परोपकार

परोपकार को सबसे बड़ा धन माना जाता है। व्यास जी ने परोपकार को अट्ठारह पुराणों का निचोड़ बताया है। अपनी भलाई के बारे में तो हर कोई सोचता है, महान वही है जो दूसरों की भलाई सोचता है। वही बड़ा है, जो सारे संसार को खुश देखना चाहता है। अपने पड़ोसियों, अपने समाज को खुशहाल और प्रसन्न देखने वाला परोपकारी होता है। वह अपनी हित-चिंता के साथ-साथ दूसरों की हित-चिंता भी करता है। वह समाजपयोगी कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेता है। वह जन कल्याण के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने के लिए तैयार रहता है। परोपकार वह गुण है, जिसे अपनाकर व्यक्ति को मानसिक सुख एवं संतुष्टि प्राप्त होती है। समाज परोपकारी व्यक्ति को युगों-युगों तक याद रखता है। संसार उसकी जय-जयकार करता है। इसलिए हमे परोपकार के गुण को धारण करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

3. यदि मैं प्रधानाचार्य होता।

मुझे ज्ञात है, कि प्रधानाचार्य का पद बहुत महत्त्वपूर्ण तथा उत्तरदायित्वपूर्ण होता है। यदि मैं किसी विद्यालय का प्रधानाचार्य होता, तो उसकी उन्नति के लिए मैं दिन-रात एक कर देता। मेरे विद्यालय में अनुशासन का विशेष महत्त्व होता। इसके लिए मैं जीवन को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता। विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद भी अनिवार्य कर देता। जिससे न केवल उनका स्वास्थ्य ठीक रहता, बल्कि उनके मस्तिष्क का भी पूर्ण विकास होता। विद्यालय में नैतिक शिक्षा अनिवार्य कर देता, क्योंकि चरित्र ही सबसे उत्तम धन है। गरीब विद्यार्थियों की फ़ीस में कटौती करता तथा मेधावी छात्रों के लिए वजीफे का प्रबंध करता। छात्रों तथा अध्यापक वर्ग में अनुशासन तथा स्वच्छता को प्रोत्साहित करने के लिए मैं प्रत्येक कक्षा का एक बार निरीक्षण करने जाता। मेरे विद्यालय में कर्मचारी वर्ग एवं विद्यार्थीगण से मेरे पारस्परिक स्नेह और सौहार्द के सम्बंध होते। मैं पढ़ाई के अतिरिक्त बच्चों में वाद-विवाद, नाटक, गायन कला इत्यादि क्षेत्रों में विकास करने के प्रयत्न करता, मेरे विद्यालय में रेडक्रास, स्काउटस, एन॰ सी॰ सी॰ इत्यादि की सभी सुविधाएँ उपलब्ध होतीं, यदि मैं प्रधानाचार्य होता।

4. राष्ट्रमंडल खेल

एशली कपूर वे प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने सद्भावना को प्रोत्साहन देने और पूरे ब्रिटिश राज्य के अंदर अच्छे संबध बनाए रखने के लिए अखिल ब्रितानी खेल कार्यक्रम आयोजित करने के विचार को प्रस्तुत किया। वर्ष 1928 में कनाडा के एक प्रमुख एथलीट, बॉबी रॉबिन्सन को प्रथम राष्ट्र मंडल खेलों के आयोजन का भार सौंपा गया। ये खेल 1930 में हेमिल्टन शहर, ओंटेरियों कनाडा में आयोजित किए गए और इसमें 11 देशो के 400 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। तब से हर चार वर्ष में राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन किया जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इनका आयोजन नहीं किया गया था। इन खेलों के अनेक नाम हैं - जैसे ब्रिटिश एम्पायर गेम्स, फ्रेंडली गेम्स और ब्रिटिश कॉमनवेल्थ गेम्स। वर्ष 1978 से इन्हें सिर्फ़

कॉमनवेल्थ गेम्स या राष्ट्रमंडल खेल कहा जाता है। मूलरूप से इन खेलों में केवल एकल प्रतिस्पर्द्धात्मक खेल होते थे, 1998 में कुआलालमपुर में आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों में एक बड़ा बदलाव देखा गया, जब क्रिकेट, हॉकी और नेटबॉल जैसे खेलों के दलों ने पहली बार अपनी उपस्थिति दर्ज की। वर्ष 2001 में इन खेलों द्वारा मानवता, समानता और नियति की तीन मान्यताओं को अपनाया गया, जो राष्ट्रमंडल खेलों की मूल मान्यताएँ हैं। ये मान्यताएँ हज़ारों लोगों को प्रेरणा देती हैं और उन्हें आपस में जोड़ती हैं तथा राष्ट्रमंडल के अंदर खेलों को अपनाने का व्यापक अधिदेश प्रकट करती हैं।

5. मेरा प्रिय खिलाड़ी

महेन्द्र सिंह धोनी मेरा प्रिय खिलाड़ी है। धोनी क्रिकेट की दुनिया का प्रसिद्ध खिलाड़ी है। आरंभ में धोनी ने क्रिकेट की दुनिया में विकेट कीपर और बल्लेबाज़ के रूप में प्रवेश किया था। परंतु अपनी अच्छी विकेट कीपिंग तथा अच्छी बल्लेबाजी के चलते भारतीय टीम के कप्तान बन गए। धोनी ने क्रिकेट में अपनी भूमिका को अच्छी तरह से निभाया है। यही कारण है, कि वे भारतीय क्रिकेट प्रेमियों की पहली पंसद बन गए हैं। धोनी का जन्म 7 जुलाई, 1981 में राँची में हुआ था। इनके पिता का नाम पान सिंह धोनी तथा माँ का नाम देवकी देवी है। धोनी एक अच्छे फुटबॉल खिलाड़ी थे और उसी में अपना भविष्य तलाश रहे थे। परंतु उनके प्रशिक्षक ने उन्हें क्रिकेट की दुनिया में प्रवेश करवाया और वहाँ जाकर उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। धोनी को राजीव गाँधी खेल रत्न, भारत रत्न जैसे सम्मानित पुरस्कार भी मिल चुके हैं। मैं स्वयं धोनी जैसे बनना चाहता हूँ।

6. सत्संगति

जीवन में हमें हर समय किसी न किसी मित्र या साथी की आवश्यकता ज़रूर होती है। हमारे मित्र की अच्छाई-बुराई का प्रभाव हमारे ऊपर अवश्य पड़ता है। मित्र के बिना जीवन अधूरा है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं, कि हम अपनी मित्रता कुसंगत लोगों के साथ रखें। एक कुसंग संगति का मित्र विष के समान होता है और एक सत्संगति का मित्र औषधि। सत्संगति में रहकर हम चरित्रवान बन सकते हैं। अगर हम सत्संगति में रहते हैं, तो हम अपनी ज़िंदगी में कभी गलत रास्ता नहीं पकड़ेगे। एक सत्संगति वाला मित्र हमारा मार्गदर्शक होता है। आज कल सत्संगति पाना बहुत कठिन होता जा रहा है। हमें दोस्ती करते हुए यह नहीं सोचना चाहिए कि वह गरीब है या अमीर। हमें दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को समझकर ही उससे दोस्ती करनी चाहिए, क्योंकि हो सकता है, कि वह व्यक्ति अच्छे स्वभाव एवं चरित्र वाला न हो।

7. पुस्तकों का महत्त्व

पुस्तकें हमारी मित्र हैं। वे अपना अमृतकोष सदा हम पर न्योछावर करने को तैयार रहती हैं। पुस्तके प्रेरणा का भंडार होती हैं। उन्हें पढ़कर जीवन में कुछ महान काम करने की प्रेरणा मिलती है। महात्मा गाँधी को महान बनाने में गीता ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' पढ़कर कितने ही नौजवानों ने आज़ादी के आंदोलन में भाग लिया था। पुस्तकें ही आज की मानव सभ्यता के मूल में हैं। पुस्तकों के द्वारा एक पीढ़ी का ज्ञान दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते सारे युग में फैल जाता है। पुस्तकें किसी भी विचार, संस्कार या भावना के प्रचार का सबसे शक्तिशाली साधन है। तुलसीदास के 'रामचरितमानस' ने तथा व्यास रचित 'महाभारत' ने अपने युग को तथा आने वाले युगों को पूरी तरह प्रभावित किया।

पुस्तकें मानव के मनोरंजन में भी परम सहायक सिद्ध होती हैं। मनुष्य अपने एकांत क्षण को पुस्तकों के साथ बिता सकता है। कहा जाता है, 'पुस्तक एक जाग्रत देवता है। उनसे तत्काल वरदान प्राप्त किया जा सकता है।'

8. वृक्ष हमारे मित्र हैं

वृक्ष धरती पर हमारे परम मित्र हैं। बिना वृक्षों के हम जी नहीं सकते। हम वृक्षों को थोड़ी सी जगह और थोड़ा सा पानी देते हैं और वे हमें ज़िंदगी के साथ-साथ बहुत कुछ दे जाते हैं। वृक्षों से हमें बहुत लाभ होते हैं। सब से पहले वृक्षों से हमें स्वच्छ और अच्छी हवा मिलती है। वृक्ष हमें धूप में छाया देते हैं। पेड़-पौधों को देखने से हमें बहुत आंनद मिलता है। हरा रंग देखने से आँखो की रोशनी तेज़ होती है। रोज़ाना जिन फ़ल व सब्ज़ियों का सेवन हम करते हैं, वे हमें वृक्षों से ही प्राप्त होती हैं। यदि वृक्ष नहीं होते, तो हम यह खाद्य सामग्री प्राप्त नहीं कर पाते। लकड़ी, कागज़, फूल आदि ऐसी और भी वस्तुएँ हैं, जो हमें वृक्षों द्वारा प्राप्त होती हैं। वृक्षों के बिना जीवन की कल्पना करना भयभीत स्वप्न से कम नहीं है। अर्थात् यह कहना उचित है, कि वृक्ष हमारे मित्र हैं। वृक्ष से हमें जितनी भी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं, वे सब भगवान ने हमें इन वृक्षों के ज़रियें दी हैं। यह हमारा धर्म व कर्त्तव्य है, कि वृक्षों व पौधों को अधिक से अधिक उगाएँ और इनकी रक्षा करें।

9. मेरे सपनों का भारत

मैं अपने देश भारत को विश्व में अग्रणी राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर अंकित करना चाहता हूँ। यह तभी संभव है, जब देश का हर नागरिक अपने दायित्वों का निर्वाह भली-भाँति करेगा। लोग अपनी जिम्मेदारी को समझेंगे और भ्रष्टाचार से देश को मुक्त करेंगे। हमारे देश का विकास अवरोधित हो चुका है। इसका सर्वप्रमुख कारण देश में व्यापक भ्रष्टाचार है। यह हमारे देश की बुनियाद को ही खोखला कर रहा है। हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में या तो भ्रष्टाचार कर रहा है या उसका साक्षी बन रहा है। अत: यदि हम अपने देश को पुन: उसकी गरिमा दिलाना चाहते हैं और उसे वही 'सोने की चिड़िया' बनाना चाहते हैं, तो हमे अपने राष्ट्र में व्यापक तमाम बुराइयों को मिलजुल कर मिटाना होगा। अगर हमारा सहयोग रहा, तो वह दिन दूर नहीं, जब फिर से हमारा देश अमन चैन और खुशहाली की मिसाल होगा।

10. परीक्षा भवन का दृश्य

परीक्षा प्रारम्भ होने के निर्धारित समय से लगभग आधा घंटे पहले से ही सभी छात्र और छात्राएँ परीक्षा भवन पहुँचने लगते हैं। परीक्षा भवन के अंदर सभी छात्रों के चेहरे से बड़ी उत्सुकता झलकती है। सभी के मन में भावी प्रश्नपत्र की उत्कंठा रहती है। वे आपस में प्रश्नपत्र और उसी विषय के बारे में बातें करते हैं। परीक्षा प्रारम्भ होने के नियत समय से कुछ मिनट पूर्व परीक्षा भवन के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं। दरवाज़ा खुलते ही सभी छात्र अंदर जाते हैं। वे परीक्षा भवन में जाकर अपने बैठने के कमरे का पता लगाते हैं। बड़े से नोटिस बोर्ड में कमरों की सूची तथा उनमें बैठने वाले विद्यार्थियों के रोल नंबर लिखे होते हैं। अंत में विद्यार्थी साथ लाई हुई किताबें, और कॉपियों को कमरे से बाहर रख कर चले जाते हैं और कमरे में जाकर अपने नियत स्थान पर बैठकर ईश्वर का नाम याद करते हुए बड़ी बेसब्री से आने वाले प्रश्न-पत्र की प्रतीक्षा करते हैं। प्रश्न-पत्र के मिलने पर सभी छात्र प्रश्नों के उत्तर अपनी-अपनी उत्तर-पुस्तिका पर लिखना आरंभ कर देते हैं।

34 निबंध-लेखन

अभ्यास

1. मॉल का एक दृश्य

शॉपिंग मॉल आज के युग में लोगों के जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। शॉपिंग मॉल एक आदमी के मनोरंजन का एक स्त्रोत के रूप में इच्छाओं को प्रदान करते हैं। सप्ताहांत के दौरान लोगों को खरीदारी और शॉपिंग में मस्ती के लिए अपने परिवारों के साथ आते है। इन शॉपिंग मॉल में भारी मात्रा में भीड़ एकत्रित होती है।

बहुत से लोग शॉपिंग माल में सिर्फ विंडो शॉपिंग के लिए ही आते हैं। इन दिनों मॉल हर किसी के लिए मनोरंजन का एक अच्छा स्त्रोत बन गया है। मॉल में कई ब्रांडेड शोरुम होते हैं। शॉपिंग मॉल ने लोगों की खरीदारी को बहुत सुविधाजनक बना दिया है, क्योंकि वहाँ एक ही छत के नीचे सब कुछ मिलता है। मॉल में साफ़-सफ़ाई का भी बहुत ध्यान रखा जाता है। ये इतने बड़े होते हैं, कि वहाँ की साफ़-सफ़ाई के लिए बहुत से सफ़ाई कर्मचारियों को रखा जाता है। मॉल की बिल्डिंग बहुल विशाल व आकर्षक होती है, जिससे कि यह लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है और लोग आकर्षित होकर वहाँ जाते हैं। मॉल में जगह-जगह फूड-पाइंट व बड़े-बड़े रेस्टोरेंट भी होते हैं। बहुत से लोग सिर्फ़ कुछ खाने-पीने व घूमने के लिए ही आते हैं। आधुनिक समय में लोग छोटी-मोटी दुकान पर जाना पंसद नहीं करते हैं। वे हर काम के लिए मॉल जाना ही पंसद करते हैं। कुछ भी सामान हो, सब उन्हें मॉल में एक ही जगह से प्राप्त हो जाता है। चाहे कोई विदेशी ब्रांड ही क्यों न हो, सब उन्हें बहुत सरलता से प्राप्त हो जाता है। बच्चे, बड़े-बूढ़े सभी के मनोरंजन के लिए वहाँ कुछ न कुछ होता है। समय बिताने के लिए भी मॉल एक अच्छी जगह है। आजकल तो मॉल में सिनेमा हॉल भी खुल गए हैं। एक ही मॉल में फिल्म देखने के साथ-साथ खानपान और खरीदारी भी हो जाती है। इन शॉपिंग मॉल में अधिक से अधिक ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए खूबसूरती का निर्माण किया जाता है। आने वाले समय में सभी लोग केवल मॉल से ही खरीदारी करेंगे।

2. स्वच्छता-स्वास्थ्य की कुंजी है

स्वच्छता एक ऐसा कार्य नहीं है, जो हमें दबाव में करना चाहिए। यह एक अच्छी आदत और स्वस्थ तरीका है, हमारे अच्छे व स्वस्थ जीवन के लिए। अच्छे स्वास्थ्य के लिए सभी प्रकार की स्वच्छता बहुत ज़रूरी है, चाहे वह व्यक्तिगत हो, अपने आसपास की, पर्यावरण की, पालतू जानवरों की या काम करने की जगह(स्कूल, कॉलेज आदि) हो। हम सभी को जागरूक होना चाहिए, कि कैसे अपने प्रतिदिन के जीवन में स्वच्छता को बनाए रखना है। अपनी आदत में साफ़-सफ़ाई को शामिल करना बहुत आसान है। हमें स्वच्छता से कभी समझौता नहीं करना चाहिए। यह जीवन में पानी और खाने की तरह ही आवश्यक है। इसमें हमें बचपन से ही कुशल होना चाहिए।

अपने भविष्य को स्वस्थ बनाने के लिए हमें हमेशा स्वयं का और अपने आसपास के पर्यावरण का ख़्याल रखना चाहिए। हमें साबुन से नहाना, नाखूनों को काटना आदि कार्य रोज़ करना चाहिए। घर को कैसे स्वच्छ और शुद्ध बनाएँ यह हमें अपने माता-पिता से सीखना चाहिए। हमें अपने आसपास के वातावरण को साफ़ रखना चाहिए, ताकि किसी प्रकार की

बीमारियाँ न फैलें। खाने से पहले और खाने के बाद साबुन से हाथ धोने चाहिए। हमें पूरे दिन साफ़ और शुद्ध पानी पीना चाहिए, हमें रेड़ी-खोमचे के खाने से बचना चाहिए साथ ही ज़्यादा मसालेदार और तैयार पेय-पदार्थों से परहेज़ करना चाहिए।

शरीर के स्वस्थ रहने के लिए हर स्तर पर स्वच्छता आवश्यक है और इस तथ्य को हमारे महापुरुषों ने भी लगातार स्वीकारा है। जिन महात्मा गाँधी के जन्म दिवस पर स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया गया, उन्हीं महात्मा गाँधी स्वास्थ्य का नियम बताते हुए कहा है, 'मनुष्य जाति के लिए साधारणत: स्वास्थ्य का पहला नियम यह है कि मन चंगा तो शरीर भी चंगा है। निरोग शरीर में निर्विकार मन का वास होता है, यह एक स्वयं सिद्ध सत्य है। मन और शरीर के बीच अटूट संबंध है। अगर हमारा मन निर्विकार यानी निरोग हो, तो वह हर तरह से हिंसा से मुक्त हो जाए, फिर हमारे हाथों तंदुरूस्ती के नियमों का सहज भाव से पालन होने लगे और किसी तरह की खास कोशिश के बिना ही हमारा शरीर तंदुरुस्त रहने लगे।' अत: हम सभी को स्वच्छता का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए।

3. पूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ कलाम

डॉ अब्दुल कलाम का पूरा नाम अब्दुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम था। वे जनसाधारण में भारत के 'मिसाइल मैन' और जनता के राष्ट्रपति के रूप में प्रसिद्ध हैं। ब्रिटिश भारत (वर्तमान में तमिलनाडु का रामनाथपुरम् जिला) के तहत मद्रास प्रेसीडेंसी के रामनद जिले के रामेश्वरम् में 15 अक्टूबर 1931, को एक गरीब तमिल मुस्लिम परिवार में उनका जन्म हुआ था। वे एक महान वैज्ञानिक थे, जिन्होंने भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में 2002 से 2007 तक देश की सेवा की। राष्ट्रपति के अपने कार्यकाल को पूरा करने के बाद वे अपने नागरिक जीवन के लेखक, शिक्षा और लोक सेवा में लौट आए। अब्दुल कलाम ने इसरो और डीआरडीओ के विभिन्न मुख्य पदों पर अपनी सेवा प्रदान की और उसके बाद भारत के कैबिनेट मंत्रालय में भारत सरकार के मुख्य वैज्ञानिक देश के सर्वोच्च तीन नागरिक सम्मान (पदम् भूषण 1981, पदम् विभूषण 1990, भारत रत्न 1997) के साथ ही उन्हें कम से कम 30 विश्वविद्यालयों के द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया।

वे एक महान व्यक्तित्व के साथ ही साथ देश के युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत भी थे, जिन्होंने अचानक हृदयगति रूक जाने के कारण, 27 जुलाई 2015 को आईआईएम मेघालय में अपनी आखिरी साँसें लीं। वो शारीरिक रूप से भले ही हमारे बीच में मौजूद नहीं हों, लेकिन फिर भी उनके देश के लिए किये गये महान कार्य और योगदान हमेशा हमारे साथ रहेंगे। अपनी किताब 'भारत 2020 - नवनिर्माण की रूपरेखा' में उन्होंने भारत को एक विकसित देश बनाने के अपने सपने को उल्लेखित किया है।

4. मेरा प्रिय त्योहार

भारतवर्ष में वैसे तो पूरे वर्ष अनेक त्योहार मनाए जाते हैं, किंतु उनमें दिवाली का त्योहार मुझे बहुत पंसद है। दिवाली का त्योहार मेरा प्रिय त्योहार है। दिवाली हिंदुओं का प्रसिद्ध त्योहार है। दिवाली को दीपावली भी कहते हैं। दीपावली का अर्थ होता है, 'दीपों की माला या पंक्ति।' दीपावली एक महत्त्वपूर्ण और प्रसिद्ध उत्सव है जिसे हर साल देश और देश के बाहर विदेश में भी मनाया जाता है। इसे भगवान राम के चौदह साल के वनवास से अयोध्या वापसी के बाद और लंका के राजा रावण को पराजित करने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

भगवान राम की वापसी के बाद, भगवान राम के स्वागत के लिए सभी अयोध्यावासियों ने पूरे उत्साह से अपने घरों और रास्तों को सजाया। यह एक पावन हिंदु पर्व है, जिसे बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाया जाता है। इसे सिक्खों के छठवें गुरू श्री हरगोविंद जी की रिहाई की खुशी में भी मनाया जाता है।

दिवाली के कई दिनों पहले से ही बाज़ारों को दुल्हन की तरह शानदार तरीके से सजा दिया जाता है। दिवाली के अवसर पर लोग अपने घरों को भी सजाते हैं। रंग-रोगन भी करवाते हैं व कुछ लोग घरों की साफ़-सफ़ाई में लग जाते हैं। घरों में लाइटें आदि लगाते हैं, सभी घर लाइटों और दीयों से जगमगाते हैं। बच्चों के लिए यह दिन मानो नए कपड़े, खिलौने, पटाखों और उपहारों की सौगात लेकर आता है।

देवी लक्ष्मी की पूजा के बाद अतिशबाज़ी का दौर शुरू होता है। इस दिन लोग बुरी आदतों को छोड़कर, अच्छी आदतों को अपनाते हैं। भारत के कुछ शहरों में दिवाली को नये साल की शुरूआत माना जाता है, साथ ही व्यापारी लोग अपने नये बहीखातों की शुरूआत भी करते हैं। दिवाली सभी के लिए एक खास उत्सव है, क्योंकि यह लोगों के लिए खुशी और आशीर्वाद लेकर आता है। इससे बुराई पर अच्छाई की जीत के साथ ही नये सत्र की शुरूआत भी होती है।

5. प्रदूषण की समस्या

प्रदूषण की समस्या आज मानव समाज के सामने सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है। पिछले कुछ दशकों में प्रदूषण जिस तेज़ी से बढ़ा है, उसने भविष्य में जीवन के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगाना शुरू कर दिया है। संसार के सारे देश इससे होने वाली हानियों को लेकर चिंतित हैं। संसार भर के वैज्ञानिक आए दिन प्रदूषण से संबंधित रिपोर्ट प्रकाशित करते रहते हैं और आने वाले खतरे के प्रति हमें आगाह करते रहते हैं।

आज से कुछ दशकों पहले तक कोई प्रदूषण की समस्या को गंभीरता से नहीं लेता था। प्रकृति से संसाधनों को प्राप्त करना मनुष्य के लिए सामान्य बात थी। उस समय बहुत कम लोग ही यह सोच सके थे, कि संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग हानि भी पहुँचा सकता है। हम जितना भी प्रकृति से लेते, प्रकृति उतने संसाधन दोबारा पैदा कर देती। ऐसा लगता था, जैसे प्रकृति का भंडार असीमित है, कभी खत्म नहीं होगा। लेकिन जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ने लगी, प्रकृति संसाधनों का दोहन बढ़ता गया। वनों को काटा गया। अयस्कों के लिए ज़मीनों को खोदा गया। मशीनों ने इस काम में और तेज़ी ला दी। औद्योगिक क्रांति का प्रभाव लोगों को पर्यावरण पर दिखने लगा। जंगल खत्म होने लगे। उसके बदले बड़ी-बड़ी इमारतें, कल-कारखानें खुलने लगें। इससे प्रदूषण की समस्या हमारे सर पर आकर खड़ी हो गई।

आज प्रदूषण के कारण शहरों की हवा इतनी दूषित हो गई, कि मनुष्य के लिए सांस लेना मुश्किल हो गया है। गाड़ियों और कारखानों से निकलने वाला धुआँ हवा में ज़हर घोल रहा है। इससे तेज़ी से वायु प्रदूषण बढ़ रहा है। देश की राजधानी दिल्ली में तो प्रदूषण ने खतरे का निशान पार कर लिया है। कारखानों से निकलने वाला कचरा नदियों और नालों में बहा दिया जाता है। इससे होने वाले जल प्रदूषण के कारण लोगों के लिए अब पीने लायक पानी मिलना कठिन हो गया है। खेत में खाद के रूप में प्रयोग होने वाले रासायनिक खादों ने खेत को बंजर बनाना शुरू कर दिया है। इससे भूमि प्रदूषण की समस्या भी गंभीर हो गयी है। इस तरह प्रदूषण बढ़ रहा है, किंतु प्रदूषण दूर करने के लिए जिन वनों की ज़रूरत है, वे दिन-ब-दिन कम हो रहे हैं।

प्रदूषण के कारण धरती का तापमान बढ़ रहा है। ओज़ोन लेयर में कई छेद हो चुके हैं। नदियों और समुद्रों में जीव-जंतु मर रहे हैं। कई देशों का मौसम बदल रहा है। कहीं बेमौसम बरसात हो रही है, तो कहीं वर्षा नहीं हो रही। इससे खेती को बहुत नुकसान हो रहा है। ध्रुवों की बर्फ़ पिघल रही है, जिससे समुद्र के किनारे जो देश और शहर हैं, उनके डूबने का खतरा बढ़ रहा है। हिमालय के ग्लेशियर पिघल रहे हैं, जिससे गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों के लुप्त होने की संभावना आ गई है।

ऐसे गंभीर समय में यह आवश्यक हो गया है, कि संसार के सारे देश मिलकर प्रदूषण की इस समस्या पर लगाम लगाएँ। उद्योगों के लिए प्रकृति को नष्ट नहीं किया जा सकता। जब जीवन ही खतरे में पड़ रहा है, तो जीवन को आरामदायक बनाने वाले उद्योग क्या काम आँएगे। अभी हाल ही में (12 दिसम्बर 2015) संसार के 196 देश प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए फ्रांस की राजधानी पेरिस में इकट्ठे हुए थे। सबने मिलकर यह निश्चय किया है, कि धरती के तापमान को मौजूदा तापमान से दो डिग्री से ज़्यादा बढ़ने नहीं दिया जाएगा। देर से ही सही, पर यह सही दिशा में बढ़ाया हुआ कदम है। यदि इस पर वास्तव में अमल किया गया, तो पेरिस अधिवेशन मनुष्य जाति के लिए आशा की स्वर्णिम किरण साबित होगी। उम्मीद है, कि हम पर्यावरण की रक्षा के लिए सही कदम उठाएँगें और आने वाली पीढ़ी को प्रदूषण के दुष्परिणामों से बचाएँगें।

6. इंटरनेट की दुनिया

इंटरनेट के माध्यम से आम व्यक्ति का जीवन आसान हो गया है, क्योंकि इसके द्वारा हम घर के बाहर गये बिना ही अपना बिल जमा करना, फ़िल्म की टिकट बुक करना, व्यापारिक लेन-देन करना, सामान खरीदना आदि काम कर सकते हैं। अब यह हमारे जीवन का खास हिस्सा बन चुका है। हम कह सकते हैं, कि इसके बिना हमें अपने रोज़मर्रा के जीवन में तमाम मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। इसकी सुगमता और उपयोगिता की वजह से, यह हर जगह इस्तेमाल होता है, जैसे कार्यस्थल, स्कूल, कॉलेज, बैंक, शिक्षण संस्थान, प्रशिक्षण केन्द्रों, दुकानों, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, रेस्टोरेंट, मॉल और ख़ासतौर से हम सभी के घरों में, हर एक सदस्य के द्वारा अलग-अलग उद्देश्यों के लिये। जैसे ही हम अपने इंटरनेट सेवा प्रदाता को इसके कनेक्शन के लिए पैसे देते हैं, उसी समय से हम इसका प्रयोग दुनिया के किसी भी कोने की जानकारी पाने या अन्य कार्य के लिए कर सकते हैं। इंटरनेट के हमारे जीवन में प्रवेश के साथ ही हमारी दुनिया बड़े पैमाने पर बदल गई। कुछ सकारात्मक, तो कुछ नकारात्मक रूप में। ये विद्यार्थी, व्यापारी, सरकारी एजेंसी, शोध संस्थान आदि के लिये बहुत फ़ायदेमंद हैं। इससे विद्यार्थी अपनी पढ़ाई से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। व्यापारी एक जगह से ही अपनी गतिविधियों को अंजाम दे सकता है, इससे सरकारी एजेंसी अपने काम को समय पर पूरा कर सकती है तथा शोध संस्थान, शोध करने के साथ ही उत्कृष्ट परिणाम दे सकते हैं।

7. राष्ट्रीय एकता

भारत में, हर साल 19 नवंबर को एक बहुत महत्त्वपूर्ण सामाजिक कार्यक्रम के रूप में राष्ट्रीय एकीकरण दिवस को देखा जाता है। राष्ट्रीय एकीकरण के बारे में लोगों के बीच अधिक जागरूकता फैलाने के लिए 19 से 25 नवंबर तक राष्ट्रीय एकीकरण सप्ताह के रूप में वार्षिक तौर पर देखे जाने के लिए भारतीय सरकार द्वारा एक पूरे सप्ताह का कार्यक्रम भी लागू

किया गया है। भारत एक ऐसा देश है, जो अपनी विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, नस्ल, धर्मों, जातियों और पंथ के लिए जाना माना जाता है, लेकिन इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता है, कि यहाँ निवास कर रहे लोगों की सोच में विविधता के कारण यह अभी भी विकासशील देशों में आता है। यहाँ रह रहे लोग अपनी संस्कृति और धर्म के अनुसार अलग-अलग सोच रखते हैं, जो व्यक्तिगत और देश के विकास को रोकने का एक बड़ा कारण है।

भारत अपनी विविधता में एकता के लिए प्रसिद्ध है लेकिन यह सही नहीं है क्योंकि विकास के लिए दूसरों के विचारों को स्वीकार करने के लिये लोग तैयार नही हैं। यहाँ सभी मानते हैं कि उनका धर्म ही सबसे बेहतर है और जो भी वो करते हैं वही सबसे ठीक है। अपने खुद के फ़ायदे के लिए केवल खुद को अच्छा साबित करने के लिए यहाँ रह रहे हैं। विभिन्न नस्लों के लोग आपस में शारीरिक, भावनात्मक, बहस और चर्चा आदि के द्वारा लड़ते हैं। अपने देश के बारे में एक साथ होकर वे नहीं सोचते। वे कभी नहीं सोचते, कि हमारे देश का विकास केवल व्यक्तिगत वृद्धि और विकास के साथ ही संभव है।

8. सत्संगति का महत्त्व

मानव को समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए सत्संगति उतनी ही आवश्यक है, जितना जीवित रहने के लिए रोटी और कपड़ा। वह शैशवकाल से ही पेट भरने का प्रयत्न करता है।

तब से ही उसे अच्छी संगति मिलनी चाहिए, जिससे वह अपनी अवस्थानुसार अच्छे कार्यों को कर सके और बुरी संगति के भयानक पंजों से अपनी रक्षा कर सके। यदि वह ऐसा न कर सका, तो शीघ्र ही बुरा बन जाता है।

बुरे व्यक्ति का समाज में बिल्कुल भी आदर नहीं होता है। उसक थोड़ा-सा भी बुरा कर्म उसके जीवन के लिए त्रिशूल बन जाता है। फिर वह गले-सड़े फल के समान ही अपने जीवन का अंत कर डालता है। अत: प्रत्येक मानव को कुसंगति से बचना चाहिए।

उसे अच्छाई, बुराई, धर्म-अधर्म, ऊँच-नीच, सत्य-असत्य और पाप-पुण्यों में से ऐसे शस्त्र को पकड़ना चाहिए, जिसके बल पर वह अपना जीवन सार्थक बना सके।

इस निश्चय के उपरांत उसे अपने मार्ग पर अविचल गति से अग्रसर होना चाहिए। सत्संगति ही उसके सच्चे मार्ग को प्रदर्शित करती है। उस पर चलता हुआ मानव देवताओं की श्रेणी में पहुँच जाता है। इस मार्ग पर चलने वाले के सामने धर्म रोड़ा बनकर नहीं आता है। अत: उसे किसी प्रकार के प्रलोभनों से विचलित नहीं होना चाहिए।

कुसंगति तो काम, क्रोध, लोभ, मोह और बुद्धि भ्रष्ट करने वालों की जननी है। इसकी संतानें सत्संगति का अनुसरण करने वाले को अपने जाल में फँसाने का प्रयत्न करती हैं। महाबलि भीष्म, धनुर्धर द्रोण और महारथी शकुनि जैसे महापुरुष भी इसके मोह-जाल में फँस कर पथ विचलित हो गए थे। उनके आदर्शों का तुरंत ही हनन हो गया था।

अंतत: प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए, कि वह चंदन के वृक्ष के समान अटल रहे। जिस प्रकार से विषधर रात-दिन लिपटे रहने पर भी उसे विष से प्रभावित नहीं कर सकते, उसी प्रकार सत्संगति के पथ का कुसंगतिवाले कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते हैं।

सत्संगति कुंदन है, यह हमेशा कुंदन की भाँति चमकती हुई प्रतीत होती है। मानव को सज्जन पुरुष के सत्संग में ही रहकर अपनी जीवनरूपी नौका समाजरूपी सागर से पार लगानी चाहिए। तभी वह आदर को प्राप्त कर सकता है।

हिंदी व्याकरण भारती-8

1 भाषा तथा व्याकरण

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. मन के विचारों व भावों के आदान-प्रदान के एक माध्यम को भाषा कहते हैं।
2. संकेतों द्वारा कही जाने वाली बातों को सांकेतिक भाषा कहते हैं।
3. भाषा के दो प्रमुख रूप हैं - मौखिक और लिखित।
4. हिंदी भाषा भारत की संपर्क भाषा है, क्योंकि इस भाषा के द्वारा सभी भारतवासी परस्पर संपर्क में रहते हैं।
5. भाषा में एकरूपता लाने के लिए भाषा का मानक रूप निश्चित किया जाता है।

सोचो और लिखो-

1. भाषा को लिखने के लिए प्रत्येक वर्ण के लिए निर्धारित किए गए चिह्न को लिपि कहते हैं।
2. देवनागरी को वैज्ञानिक लिपि माना जाता है, क्योंकि इसमें लेखन व पठन में एकरूपता पाई जाती है। यह बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है।
3. वह भाषा जिसका प्रयोग सरकारी कार्यालयों में राजकीय कामकाज के लिए किया जाता है, वह देश की राजभाषा कहलाती है।

   वह भाषा जिसका प्रयोग राष्ट्र के अधिकांश निवासियों द्वारा किया जाता है, उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं।
4. 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस मनाया जाता है, क्योंकि 14 सितंबर 1949 को संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया था।
5. हिंदी राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि की राजभाषा है।
6. भाषा का क्षेत्रीय व अल्पविकसित रूप बोली कहलाता है। यह सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा है।

ख. 1. दोनों 2. मौखिक भाषा 3. अनुच्छेद 343
4. लोकप्रिय भाषा है 5. मौखिक भाषा

ग. 1. ✔ 2. ✓ 3. ✔ 4. ✗ 5. ✔ 6. ✔

घ. 1. भाष् 2. बांग्ला 3. उपभाषा
4. भाषा को शुद्ध रूप से प्रयोग की जानकारी देने वाला शास्त्र
5. 14 सितंबर 6. 22 7. देवनागरी 8. क्षेत्रीय व अल्पविकसित

ङ. 1. बोली 2. मौखिक भाषा 3. अंग्रेज़ी 4. देवनागरी
5. हिंदी 6. लिखित भाषा

रोचक कार्य

लिपि	**भाषा**	**बोली**
गुरुमुखी	हिंदी	बुंदेली
फ़ारसी	उड़िया	अवधी
रोमन	पंजाबी	मारवाड़ी
देवनागरी	रुसी	निमाड़ी
	असमी	मलयालम
		बाँगरू

- स्वयं करें।
- स्वयं करें।

2 वर्ण-विचार

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिसके और खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।
2. वर्णो का क्रमबद्ध व व्यवस्थित समूह वर्णमाला कहलाता है।
3. हिंदी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते है – स्वर व व्यंजन।
4. 'ऋ' का उच्चारण व्यंजन की भाँति होता है, परंतु 'ऋ' की मात्रा होने के कारण इसे स्वरों में गिना जाता है।

सोचो और लिखो-

1. अनुस्वार शिरोरेखा के ऊपर बिंदु (ं) के रूप में लगाया जाता है। इसका उच्चारण नाक से होता है। जैसे – अंक, गंगा आदि।
   अनुसासिक वर्ण के ऊपर चंद्र बिंदु के रूप में लिखा जाता है। इसका उच्चारण करते समय हवा मुख व नासिका दोनों से निकलती है। यदि शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा लगी हो, तो चंद्र बिदु के स्थान पर केवल बिंदु का प्रयोग किया जाता है। जैसे – चाँद, छाँव आदि।
2. स्वर के प्रमुख तीन भेद हैं – ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर और प्लुत स्वर।
3. जिन वर्णो का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली हवा, मुख के विभिन्न भागों कंठ, जिह्वा होंठ, तालु आदि का स्पर्श करती हुई बाहर निकलती है, वे स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं।
4. ड़, ढ़ अतिरिक्त व्यंजन हैं। इनका प्रयोग कभी भी शब्द के आरंभ में नहीं होता। इन्हें शब्द के मध्य या अंत में प्रयोग किया जाता है। जैसे – सड़क, पढ़ाई आदि।
5. जब 'र' स्वर रहित किसी व्यंजन से पूर्व आता है, तो वह उस व्यंजन के शीश पर (र्‍) रूप में लगता है। जैसे – सूर्य, कर्म, वर्ण आदि।
   जब 'र' स्वर रहित किसी व्यंजन के बाद आता है, तो वह उसी के नीचे (्र)रूप में लगता है। जैसे – प्रथम, क्रम आदि।

ट, ठ, ड, ढ के बाद आने पर 'र' इन्हीं व्यंजनों के नीचे (्) रूप में लगता है। जैसे – ट्रक, ड्रम आदि।

ख. 1. स्वर 2. श, ष, स, ह 3. वर्ण
4. तत्सम शब्दों में 5. ज़, फ़

ग. 1. ह्रस्व 2. प्लुत 3. आगत 4. कम
5. व्यंजनों 6. तालु 7. पंचम 8. तत्सम

घ.

1. ट, ठ, ड, ढ	मूर्धन्य	2. त, थ, द, ध	दंत्य
3. प, फ, ब, भ	ओष्ठ्य	4. क, ख, ग, घ	कंठ्य
5. च, छ, ज, झ	तालव्य	6. ण, न, म	नासिक्य
7. व, फ़	दंतौष्ठ्य	8. ड़, ढ़, र, ष	मूर्धन्य

ङ.
1. धोखा – ध् + ओ + ख् + आ
2. ग्यारह – ग् + य् + आ + र् + अ + ह् + अ
3. क्षुधा – क् + ष् + उ + ध् + आ
4. विश्वास – व् + इ + श् + व् + आ + स् + अ
5. क्षत्रिय – क् + ष् + अ + त् + र् + इ + य् + अ
6. प्रदर्शनी – प् + र् + अ + द् + अ + र + श + अ + न + ई
7. आहार – आ + ह् + आ + र् + अ
8. श्रेष्ठ – श् + र् + ए + ष् + ठ + अ

च.

1. त् + र् + आ + ण् + अ	त्राण
2. ट् + र् + ए + न् + अ	ट्रेन
3. अं + त् + अ + त् + अः	अंततः
4. म् + ऐ + द् + आ + न् + अ	मैदान
5. र् + अ + क् + ष् + अ + क् + अ	रक्षक
6. व् + इ + श् + व् + आ + स् + अ	विश्वास
7. म् + औ + ज् + अ	मौज
8. श् + र् + अ + म् + इ + क् + अ	श्रमिक

रोचक कार्य

- स्वयं करें।
- स्वयं करें।

3 शब्द-विचार

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनते हैं।

2. शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया जाता है – स्त्रोत के आधार पर, अर्थ के आधार पर, रचना के आधार पर और व्याकरणिक प्रयोग के आधार पर।
3. स्त्रोत के आधार पर शब्द के पाँच भेद होते हैं – तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द विदेशी शब्द और संकर शब्द।
4. देश की ग्रामीण लोकभाषाओं व बोलियों से हिंदी भाषा में अपनाए गए शब्द देशज शब्द कहलाते हैं।
5. सदियों तक विदेशी प्रभाव के कारण कुछ विदेशी भाषाओं के शब्द हिंदी भाषा में इस प्रकार घुल-मिल गए हैं, कि अब ये हिंदी भाषा के ही प्रतीत होते हैं। ऐसे शब्द विदेशी शब्द या आगत शब्द कहलाते हैं।

सोचो और लिखो-

1. हमेशा एक-सा अर्थ देने वाले शब्दों को एकार्थक शब्द कहते हैं।
2. पर्यायवाची शब्द समान अर्थ देते हैं, जबकि विलोम शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ देते हैं।
3. दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने ऐसे शब्द, जो किसी विशेष अर्थ के लिए रूढ़ होते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।
4. हिंदी भाषा के ऐसे शब्द, जो दो अलग-अलग भाषाओं से लिए गए शब्दों के मेल से बने हैं, उन्हें संकर शब्द कहते हैं।
5. सुनने में समान परंतु अर्थ व वर्तनी में भिन्नता वाले शब्द श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

ख. 1. पुर्तगाली 2. अनेकार्थक शब्द 3. चीनी
4. पर्यायवाची 5. सार्थक खंड नहीं होते

ग. 1. **विकारी शब्द** – जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक व काल के कारण परिवर्तन आता है, विकारी शब्द कहलाते हैं। संज्ञा, सर्वनाम क्रिया व विशेषण विकारी शब्द हैं।

अविकारी शब्द – जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक व काल के कारण परिवर्तन नहीं आता हैं, अविकारी शब्द कहलाते हैं। क्रियाविशेषण, संबंधबोधक समुच्चबोधक तथा विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द हैं।

2. **तत्सम शब्द** – संस्कृत भाषा के वे शब्द, जो बिना किसी परिवर्तन के हिंदी भाषा में ज्यों के त्यों अपनाए गए हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

तद्भव शब्द – वे शब्द जो मूलत: संस्कृत के हैं, किंतु उनमें कुछ परिवर्तन करके हिंदी भाषा में अपनाया गया है। तद्भव शब्द कहलाते हैं।

3. **योगरूढ़ शब्द** – दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने ऐसे शब्द, जो किसी विशेष अर्थ के लिए रूढ़ होते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

यौगिक शब्द – एक या एक से अधिक शब्दों के योग से बनने वाले शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं। इनके सार्थक खण्ड किए जा सकते हैं।

घ.

	तत्सम	**तद्भव**		**तत्सम**	**तद्भव**
1.	मयूर	नाचने	2.	घोड़े	गौशाला
3.	अश्रु	आँख	4.	सर्प	धीरे-धीरे
5.	अग्नि	सूरज			

ङ
1. माँग-पत्र = माँग (हिंदी) + पत्र (संस्कृत)
2. रिक्शाचालक = रिक्शा (जापानी) + चालक (हिंदी)
3. टिकटघर = टिकट (अंग्रेज़ी) + घर (हिंदी)
4. नुकसानदायक = नुकसान (फ़ारसी) + दायक (हिंदी)
5. बेडौल = बे (फ़ारसी) + डौल (हिंदी)
6. रेलयात्री = रेल (अंग्रेज़ी) + यात्री (हिंदी)

रोचक कार्य

यौगिक	**रूढ़**	**योगरूढ़**
हिमालय	पैर	सज्जन
विद्यार्थी	घर	दशानन
चतुर्भुज	हाथी	वीणापाणि
प्रधानमंत्री	दीपक	विषधर
रसोईघर		
पाठशाला		

4 संधि

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. वर्णों के पारस्परिक मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) संधि कहलाता है।
2. संधि के प्रमुख तीन भेद होते हैं - स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि।
3. स्वर संधि के प्रमुख पाँच भेद हैं - दीर्घ संधि, गुण संधि, यण् संधि, वृद्धि संधि, अयादि संधि।
4. दो स्वरों के परस्पर मेल से उसमें आया परिवर्तन या विकार स्वर संधि कहलाता है। किसी व्यंजन का स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार व्यंजन संधि कहलाता है।

सोचो और लिखो-

1. वर्णों के पारस्परिक मेल से उत्पन्न विकार को संधि कहते हैं, जबकि, जब संधि द्वारा मेल किए हुए वर्णों को संधि से पहले वाली अवस्था में अलग-अलग किया जाता है, तो उसे संधि-विच्छेद कहते हैं।
2. जब समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं, तो उसे दीर्घ संधि कहते हैं।
3. यदि अ तथा आ स्वरों के बाद दीर्घ या ह्रस्व इ, ई, उ, ऊ अथवा ऋ स्वर आते हैं, तब उनके स्थान पर क्रमशः ए, ओ तथा अर् हो जाता है। इसे गुण संधि कहते हैं।
4. विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार विसर्ग संधि कहलाता है।

ख. 1. दो शब्दों के 2. स्वर संधि 3. हितैषी 4. निश्छल

ग.
1. रमा + ईश = रमेश
2. नारी + ईश्वर = नारेश्वर
3. स्व + अधीन = स्वाधीन
4. प्रति + एक = प्रत्येक
5. गज + आनन = गजानन
6. रेखा + अंकित = रेखांकित

घ.

1.	गुरुपदेश	गुरु + उपदेश	2.	उपर्युक्त	उपरि + उक्त
3.	निर्बल	निर् + बल	4.	मनोविज्ञान	मनः + विज्ञान
5.	दिनांक	दिन + आंक	6.	विद्यालय	विद्या + आलय

रोचक कार्य

स्वयं करें।

5 संज्ञा

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, स्थान या भाव के नाम का बोध करवाने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।
2. संज्ञा के प्रमुख तीन भेद हैं – व्यक्तिवाचक, जातिवाचक व भाववाचक संज्ञा।
3. किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
4. किसी एक प्राणी, वस्तु व स्थान की संपूर्ण जाति का बोध कराने वाले शब्दों को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

सोचो और लिखो–

1. किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी या पदार्थ आदि के गुण, दोष, स्वभाव, अवस्था, दशा, व्यापार, भाव आदि का बोध कराने वाले शब्दों को भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
2. जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं – द्रव्यवाचक संज्ञा व समूहवाचक संज्ञा।
3. जब व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी विशेष व्यक्ति का बोध न करवाकर, उस व्यक्ति के गुण–दोषों से युक्त सभी व्यक्तियों का बोध करवाती है, तब वह जातिवाचक संज्ञा बन जाती है।
4. भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रिया तथा अव्यय शब्दों से होता है। जैसे – अतिथि – आतिथ्य, अपना – अपनापन, आलसी – आलस्य आदि।

ख. 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. दोनों 3. समूहवाचक संज्ञा 4. दोनों से

ग.

1.	बाल्यकाल में बच्चों को <u>लिखावट</u> पर विशेष ध्यान देना चाहिए।	भाववाचक संज्ञा
2.	<u>वर्षा ऋतु</u> में चारों ओर हरियाली रहती है।	व्यक्तिवाचक संज्ञा
3.	<u>डॉ. राजेंद्र प्रसाद</u> भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।	व्यक्तिवाचक संज्ञा
4.	शहर में ऊँची–ऊँची <u>इमारतें</u> हैं।	व्यक्तिवाचक संज्ञा

घ.

1.	ईमानदार	ईमानदारी	2.	मम	ममता
3.	चतुर	चतुराई	4.	अहं	अहंकार
5.	थकना	थकावट	6.	युवा	युवक

ङ. 1. रावणों को अपने बाहुबल पर घमंड था। 2. मौर्य बहुत वीर थे।
3. कर्ण बहुत प्रतापी राजा थे। 4. एकलव्य बहुत गुरुभक्त थे।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

6 लिंग

अभ्यास

क. 1. स्त्री या पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द लिंग कहलाते हैं।
2. स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

ख. 1. बिच्छू 2. मणि 3. स्त्रीलिंग 4. विदुषी 5. मकड़ी

ग. 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

घ. 1. घर में नौकर झाड़ू लगा रहा है।
2. नेता जी के आते ही सभा आरंभ हो गई।
3. मैराथन में भारत के धावकों ने जीत हासिल की।
4. हिरनी शिकारी को देखकर भाग रही थी।
5. कवि-सम्मेलन में बहुत से कवयित्रियों ने कविताएँ सुनाईं।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

7 वचन

अभ्यास

क. 1. शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक या अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।
वचन के दो भेद हैं – एकवचन और बहुवचन।
2. शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।
संज्ञा के जिस रूप से उसके संख्या में एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।
3. वचन की पहचान दो प्रकार से की जाती है – संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों से और वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से।
4. सम्मान या आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। अपना बड़प्पन प्रकट करने के लिए भी एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।

5. जाति, दल, परिवहन, सेना, वर्ग, गण आदि जैसे शब्दों का प्रयोग करते समय बहुवचन एकवचन का प्रयोग किया जाता है।

ख. 1. डाकुओं 2. मछलियों 3. रोटियाँ 4. लड़के

ग. 1. कथाओं 2. गरमी, छुट्टियों 3. रीतियों
4. युवा 5. धक्के

घ. 1. एकवचन 2. बहुवचन 3. एकवचन
4. एकवचन 5. एकवचन

रोचक कार्य

स्वयं करें।

8 सर्वनाम

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।
2. भाषा को रुचिपूर्ण और सरल रूप से लिखने या बोलने के लिए सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।
3. सर्वनाम के छः भेद होते हैं – पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक व निजवाचक सर्वनाम।

सोचो और लिखो–

1. जिन सर्वनामों का प्रयोग वक्ता (बोलने वाले), श्रोता (सुनने वाले) तथा किसी अन्य व्यक्ति के लिए किया जाता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।
2. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं – उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम और अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम।
3. किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करने वाले शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
4. कौन, किससे, किसे, किसको, किससे, किसके द्वारा, किसको, किसके लिए, किससे, किसका, किसकी, किसके, किसमें किस पर आदि प्रश्नवाचक सर्वनाम होते हैं व इनका प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है।
5. वाक्य में आए दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से संबंध बताने के लिए संबंधवाचक सर्वनाम का प्रयोग होता है।

ख. 1. मध्यम पुरुषवाचक 2. संबंधवाचक 3. निजवाचक
4. व्यक्ति के लिए

ग. 1. जैसा, वैसा 2. कुछ 3. यह 4. किसने 5. स्वयं

घ. 1. आदित्या अपने घर गई है। 2. किसी से यह बात मत कहना।
3. मुझे आज आना है। 4. मुझे इस बारे में सब पता है।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

9 विशेषण

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण होते हैं।
2. विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं।
3. विशेषण के प्रमुख चार भेद होते हैं – गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक व सर्वनामिक विशेषण।
4. विशेषण की प्रमुख तीन अवस्थाएँ हैं–मूलावस्था, उत्तरावस्था और उत्तमावस्था।

सोचो और लिखो–

1. जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम के गुण–दोष, आकार–प्रकार, रंग–रूप, स्वभाव–अवस्था, स्थिति–दशा व स्थान–स्वाद आदि विशेषताओं का बोध होता है, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।
2. परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं – निश्चित परिमाणवाचक विशेषण और अनिश्चित वाचक विशेषण।
3. सार्वनामिक विशेषणों में सर्वनाम किसी संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, इसलिए इन्हें संकेतवाचक विशेषण कहते हैं।
4. प्रविशेषण शब्द विशेषणों की भी विशेषता बताते हैं।
5. मूलावस्था में संज्ञा या सर्वनाम की किसी अन्य संज्ञा या सर्वनाम से तुलना नहीं की जाती, बल्कि उसकी विशेषता बताई जाती है। जबकि उत्तरावस्था में दो से अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों अथवा स्थानों की तुलना करके, किसी एक को सबसे अधिक या सबसे कम सिद्ध किया जाता है।

ख. 1. प्रविशेषण 2. मूलावस्था का 3. सार्वनामिक
4. सर्वनाम 5. परिमाणवाचक

ग.

1.	दीपावली (अशुभ) संस्कारों से मुक्ति दिलाती है।	गुणवाचक विशेषण
2.	व्यक्ति को उन्नति के (सर्वोच्च) शिखर पर पहुँचना चाहिए।	गुणवाचक विशेषण
3.	कर्म एक (सार्वभौमिक) सत्य है।	गुणवाचक विशेषण
4.	(अधिकांश) सरकारी विभागों में कंप्यूटरों का प्रयोग होता है।	संख्यावाचक विशेषण
5.	(परिश्रमी) व्यक्ति अनवरत कर्म करते हैं।	गुणवाचक विशेषण

घ.

1.	मानव	मानवीय	2.	नीति	नैतिक
3.	आदर	आदरणीय	4.	कल्पना	काल्पनिक
5.	इतिहास	ऐतिहासिक	6.	पड़ोस	पड़ोसी

ङ.

1.	स्वामी दयानंद ने चारों वेदों का अध्ययन किया।	संख्यावाचक विशेषण
2.	सरकार ने स्वतंत्रता के बाद बहुत–से विद्यालय खोले।	अनिश्चित परिणामवाचक विशेषण
3.	बच्चे की प्राथमिक पाठशाला घर होता है।	संख्यावाचक विशेषण

4. मनुष्य को जीवन में अनैतिक कर्म नहीं अपनाना चाहिए। — गुणवाचक विशेषण
5. करोड़ों व्यक्ति बेरोज़गारी से ग्रस्त हैं। — संख्यावाचक विशेषण

रोचक कार्य

स्वयं करें।

10 क्रिया

अभ्यास

क. 1. किसी काम के करने या होने का बोध कराने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं।

2. क्रिया शब्द विकारी होते हैं। इनके रूप में लिंग, वचन, कारक व काल के कारण परिवर्तन आता है।

3. अकर्मक क्रिया बिना कर्म के होती है। अकर्मक क्रिया का फल कर्त्ता पर पड़ता है। 'क्या' अथवा 'किसको' लगाकर प्रश्न करने पर यदि उत्तर न मिले, तो क्रिया अकर्मक होती है। सकर्मक क्रिया में कर्म होता है। सकर्मक क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है। 'क्या' अथवा 'किसको' लगाकर प्रश्न करने पर यदि उत्तर मिले, तो क्रिया सकर्मक होती है।

4. प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया में कर्त्ता स्वयं को कार्य करने की प्रेरणा देता है, जबकि द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया में कर्त्ता स्वयं कार्य न करके, किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

5. संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं-

संयुक्त क्रिया - दो या दो से अधिक धातुओं के मेल बनी क्रियाओं को संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे - मैंने नाश्ता कर लिया।

सहायक क्रिया - वाक्य में मुख्य क्रिया के साथ जुड़कर क्रिया के अर्थ में विशेषता लाने व क्रिया का काल बताने का कार्य करने वाली क्रिया सहायक क्रिया कहलाती है। जैसे - बच्चे विद्यालय से बाहर आ रहे है।

नामधातु क्रिया - संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण आदि शब्दों में 'ना' प्रत्यय जोड़कर बनाई गई क्रियाएँ नामधातु क्रिया कहलाती हैं। जैसे - अपना-अपना, गरम-गरमाना।

प्रेरणार्थक क्रिया - जब कर्त्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करें, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे - माँ बच्चे को खाना खिलाती हैं।

पूर्णकालिक क्रिया - मुख्य क्रिया से पहले आने वाली क्रिया पूर्णकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे - मैंने भागकर गाड़ी पकड़ी।

ख. 1. धातु 2. तैरना 3. संयुक्त क्रिया 4. पूर्वकालिक क्रिया

ग.

1.	फ़िल्म	फ़िल्माना	2.	गरम	गरमाना
3.	शर्म	शर्माना	4.	महक	महकाना
5.	हाथ	हथियाना	6.	भिन-भिन	भिन-भिनाना

घ. 1. संयुक्त क्रिया 2. सहायक क्रिया 3. पूर्वकालिक क्रिया
4. प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया 5. पूर्वकालिक क्रिया

ङ. 1. वरुण उठकर चल पड़ा। 2. वह दुकान बंद करके घर चला गया।
3. वह थककर सो गया। 4. तैराक ने तैरकर नदी पार की।

रोचक कार्य

सामान्य क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
लिखना	लिखना	लिखवाना
हँसना	हँसाना	हँसवाना
रोना	रुलाना	रुलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
लड़ना	लड़ाना	लड़वाना

11 काल तथा वाच्य

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. क्रिया के होने के समय का बोध करवाने वाला क्रिया रूप काल कहलाता हैं।
2. काल के तीन भेद हैं – भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्यत् काल।
3 भूतकाल के छः प्रमुख भेद हैं – सामान्य भूत, आसन्न भूत, अपूर्ण भूत, पूर्ण भूत, संदिग्ध भूत, हेतुहेतुमद् भूत।

सोचो और लिखो–

1. क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में सामान्य रूप से होने का पता चले, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं।
   क्रिया के जिस रूप से भविष्य में उसके होने की संभावना का पता चले, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं।
2. क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान में होने का सामान्य रूप से पता चले, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं।
   क्रिया के जिस रूप से पता चले कि क्रिया अभी चल रही है, समाप्त नहीं हुई; उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।
3. जब क्रिया सामान्य रूप से भूतकाल में होती है, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।
   जब क्रिया भूतकाल में बहुत समय पूर्व समाप्त हो चुकी हो, तो उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।
4. जहाँ क्रिया का कर्त्ता प्रधान होता है, वाक्य में प्रयोग की गई क्रिया कर्त्ता के लिंग व वचन के अनुसार होती है, वहाँ कर्तृवाच्य होता है।
   जहाँ क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पड़ता है व क्रिया के लिंग व वचन कर्त्ता के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार होते हैं, वहाँ कर्मवाच्य होता है।
5. जो क्रिया भूतकाल में हो सकती थी परंतु किसी कारण नहीं हो सकी, उसे हेतुहेतुमद् भूतकाल कहते हैं।

ख. 1. कर्तृवाच्य 2. संभाव्य भविष्यत् 3. भूतकाल
4. आसन्न भूत 5. भाववाच्य

ग. 1. भविष्यत् काल 2. कर्म 3. सामान्य भविष्यत् काल
4. संदिग्ध वर्तमान काल 5. भाववाच्य

घ. 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

ङ. 1. हेतुहेतुमद् भूतकाल 2. पूर्ण भूतकाल 3. संदिग्ध भूतकाल
4. अपूर्ण भूतकाल 5. संभाव्य भविष्यत् काल 6. संदिग्ध भूतकाल

च. 1. बच्चों द्वारा शोर नहीं किया जाता। 2. मैं चल नहीं पाती हूँ।
3. हर्षिता द्वारा दौड़ लगाई जाती है। 4. बच्चे द्वारा पत्र लिखा जा रहा है।
5. दादी हँसती हैं। 6. दुकानदार से माल बेचा जाता है।

रोचक कार्य

धातु	सामान्य भूत	सामान्य वर्तमान	सामान्य भविष्यत्
लिख	लिखा	लिखता	लिखेगा
पढ़	पढ़ा	पढ़ता	पढ़ेगा
दौड़	दौड़ा	दौड़ता	दौड़ेगा
सुन	सुना	सुनता	सुनेगा
चल	चला	चलता	चलेगा

✣ स्वयं करें।

12 कारक

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते हैं।
2. कारक से ही संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के साथ जाना जाता है। इन संबंधो को बनाने के लिए कुछ चिह्नों का प्रयोग करते हैं। ये चिह्न कारक-चिह्न कहलाते हैं।

सोचो और लिखो–

1. जिस शब्द रूप से क्रिया करने के साधन का पता चलता है, उसे करण कारक कहते हैं। जिस शब्द रूप से उसके अलग होने, डरने, ईर्ष्या, तुलना, शरमाने, आरंम्भ होने, सीखने या दूरी का अभाव हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।
2. जिस शब्द रूप पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। कर्त्ता जिसके लिए कोई क्रिया करता है अथवा जिसे कुछ देता है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं।

3. कारक के आठ भेद हैं। कारक व उनके विभक्ति चिह्न इस प्रकार हैं–

कारक	**विभक्ति चिह्न**
कर्त्ता कारक	ने
कर्म कारक	को
करण कारक	से, के द्वारा (साधन)
संप्रदान कारक	को, के लिए
अपादान कारक	से (पृथकता)
संबंध कारक	का, के, की, ना, ने, नी, रा, रे, री
अधिकरण कारक	में, पर
संबोधन कारक	हे! अरे!

ख. 1. कारक-चिह्न 2. संप्रदान कारक में 3. कर्म कारक
4. करण कारक 5. पर

ग. 1. पर 2. के 3. से 4. को 5. अरे

घ.

1.	मैंने पत्र के <u>द्वारा</u> उसे सूचित किया।	करण कारक
2.	<u>उनके लिए</u> भी कुछ खरीद लो।	संप्रदान कारक
3.	मेरे पिता जी रेल <u>से</u> जम्मू गए हैं।	करण कारक
4.	वे दोनों भाई-बहन हमारे विद्यालय <u>में</u> पढ़ते हैं।	अधिकरण कारक
5.	अंकिता पेंसिल <u>से</u> चित्र बनाती है।	करण कारक

ङ.

1.	अरे	अरे! तुम कहाँ जा रहे हो?
2.	के लिए	मैं पिताजी के लिए उपहार लाई हूँ।
3.	ने	राम ने सीता से विवाह किया।
4.	से	मैं ट्रेन से दिल्ली जा रहा हूँ।
5.	को	राजू को कुत्ते ने काट लिया।

रोचक कार्य

कारक	विभक्ति	पहचान का प्रश्न	उदाहरण
कर्त्ता	ने	कौन	तुम कौन हो?
कर्म	को	क्या, किसको	यह क्या है?
करण	से, के द्वारा	किससे	तुम किससे बात कर रहे हो?
संप्रदान	को, के लिए	किसके लिए, किसे	यह किसके लिए है?
अपादान	से	कहाँ	राम कहाँ से आ रहा है?
संबंध	का, के, की, ना, ने, नी, रा, रे, री	किसका, किसकी, किसको	यह पुस्तक किसकी है?
अधिकरण	में, पर	किसमे, किसपर, कब	तुम कब जा रहे हो?
संबोधन	हे! अरे!		अरे! यह क्या हुआ?

✣ एक समय था जब हमारे देश **में** वनों **की** कोई कमी नहीं थी। आबादी कम थी और बड़े-बड़े शहरों **में** विकास नहीं हुआ था। गाँव और बस्तियाँ अधिकतर जंगलों **के** किनारे बसे थे। ग्रामीण जीवन **में** वनों **का** विशिष्ट स्थान था। वन भारतीय जीवन **का** स्त्रोत थे। यह सुखद संस्मरण अब भूतकाल **की** बात हो गई है।

13 अविकारी शब्द (अव्यय)

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक, व काल के कारण कोई परिवर्तन नहीं आता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।
2. अविकारी शब्द पाँच हैं – क्रियाविशेषण, संबधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक व निपात।
3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण क्रिया के होने की रीति या ढंग का बोध कराती है।
4. समुच्चबोधक दो वाक्यों को शब्दो से जोड़ने का कार्य करती है। इसलिए जोड़ने का कार्य करने के कारण समुच्चयबोधक को योजक कहते हैं।
5. विस्मय, हर्ष, शोक घृणा, प्रशंसा आदि मनोभावों को व्यक्त करने वाले शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

सोचो और लिखो–

1. जिन शब्दों से क्रिया की विशेषता का पता चलता है, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं।
2. क्रिया के परिमाण या मात्रा का बोध कराने वाले क्रिया विशेषण को परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। परिमाणवाचक क्रियाविशेषण की पहचान के लिए क्रिया से पहले कितना शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए।

   क्रिया के होने की रीति या ढंग का बोध कराने वाले क्रियाविशेषण को रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। रीतिवाचक क्रिया विशेषण की पहचान के लिए कैसे, किस प्रकार शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए।
3. क्रियाविशेषण शब्दों की भाँति संबंधबोधक अव्यय भी काल, स्थान या दिशा का बोध कराते हैं। इसलिए इनका प्रयोग सदा कारकीय विभक्तियों के साथ होता है।
4. दो समान स्तर के शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों को जोड़ने वाले समुच्चबोधक शब्द समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं। मुख्य वाक्य के साथ एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों के जोड़ने वाले समुच्चयबोधक शब्द व्याधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं।
5. निपात का प्रयोग किसी शब्द के अर्थ पर विशेष बल देने के लिए किया जाता है।

ख. 1. हेतुबोधक 2. विकल्पक 3. मानो 4. परिमाण 5. पीछे

ग. 1. रीतिवाचक 2. विस्मयादिबोधक 3. कालवाचक
4. क्रियाविशेषण 5. समुच्चयबोधक

घ.

1.	ओले अभी <u>भी</u> गिर रहे हैं।	निपात
2.	तुम कम खाते हो, <u>इसीलिए</u> कमज़ोरी आ गई।	परिमाण समुच्चयबोधक
3.	हम <u>प्रतिदिन</u> टहलते हैं।	रीतिवाचक क्रियाविशेषण
4.	बच्चा <u>ज़ोर से</u> चिल्लाया।	रीतिवाचक क्रियाविशेषण
5.	<u>अधिक</u> बोलना अच्छा नहीं होता।	परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

ङ. 1. परीक्षा में कुछ समय है, पढ़ लो, अन्यथा तुम पछताते रह जाओगे।
2. मैं उसे हँसाने की कोशिश कर रहा था, क्योंकि वह बहुत उदास थी।
3. चाकू बहुत तेज़ है, इसलिए इसे धीरे से पकड़ो।
4. तुम बाहर जाओ और समाचार-पत्र उठाकर लाओ।
5. मैं बहुत तेज़ चला, फिर भी समय पर नहीं पहुँच सका।

च. 1. तो तुम्हारी बात तो काफ़ी निराली है।
2. भर पूरे देश भर में यह बात फैली हुई थी।
3. ही मैं ही बेवकूफ़ निकला।
4. सा मैंने विदेश जाने के लिए बहुत-सा धन एकत्रित किया।
5. मात्र मुझे मात्र पाँच मिनट चाहिए।

छ. 1. जियो ! आशीर्वादबोधक 2. छिः घृणाबोधक
3. ओ ! संबोधनबोधक 4. अरे ! संबोधनबोधक
5. ठीक ! स्वीकृतिबोधक 6. ओफ़् ! शोकबोधक

रोचक कार्य

- स्वयं करें।
- स्वयं करें।

14 पर्यायवाची शब्द

अभ्यास

क. 1. समान अर्थ प्रदान करने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।
2. इन शब्दों के मध्य बहुत सूक्ष्म अंतर होता है। इन शब्दों का प्रयोग वाक्य के भाव और संदर्भ के अनुसार होता है। इसलिए इन शब्दों को एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग नहीं किया जा सकता।

ख. 1. घोटक 2. अनिल 3. तरंगिणी 4. सखा

ग. 1. दास = नौकर सेवक 2. दिन = दिवस वार
3. धनुष = कमान शरासन 4. नदी = तरंगिणी सरिता
5. अतिथि = पाहुन मेहमान 6. कमल = पंकज जलज
7. आभूषण = गहना अलंकार 8. किरण = रोशनी प्रभा

घ. 1. कर सरकार ने सभी के लिए कर बढ़ा दिए।
2. पाणि जिस स्त्री का पाणिग्रहण हुआ हो, उसे विवाहिता कहते हैं।
3. अहंकार रावण बहुत ही अंहकारी था।
4. गर्व मुझे अपने देश पर गर्व है।
5. परिधान प्रत्येक देश का परिधान अलग-अलग होता है।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

15 विलोम शब्द

अभ्यास

क. 1. विपरीत अर्थ देने वाले शब्द को विलोम शब्द कहते हैं। इन्हें विपरीतार्थक शब्द भी कहते हैं।

2. विलोम शब्द लिखते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि तत्सम शब्दों का विलोम शब्द तत्सम व तद्भव शब्दों का विलोम तद्भव होता है।

ख. 1. शयन 2. परोक्ष 3. शुष्क 4. जटिल

ग. 1. प्राचीन 2. सृष्टि 3. सरल 4. नाश
5. क्षणिक

घ.

1.	उचित	अनुचित	2.	उत्थान	पतन
3.	घृणा	प्रेम	4.	प्रलय	सृष्टि
5.	अर्थ	अनर्थ	6.	उन्नति	अवन्नति

रोचक कार्य

स्वयं करें।

16 अनेकार्थक शब्द

अभ्यास

क. 1. एक से अधिक अर्थ रखने वाले शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

2. अनेकार्थी शब्द विभिन्न संदर्भों में प्रयुक्त होकर अलग-अलग अर्थ देते हैं। प्रसंग बदलने पर इनके अर्थ भी बदल जाते हैं।

ख. 1. गेहूँ 2. अक्षर 3. बाग 4. परिच्छेद
5. रथ 6. रस्सी

ग. 1. दूल्हे 2. नदी 3. बसंत 4. आशीर्वाद
5. मज़ा 6. भविष्य

घ.

1.	चीर	चीरना	पट्टी	वस्त्र
2.	दक्ष	चतुर	कुशल	प्रजापति
3.	पक्ष	पंख	सहायक	तरफ़
4.	आराम	बगीचा	सुख-चैन	किसी रोग का दूर होना
5.	कनक	सोना	गेहूँ	धतूरा
6.	रस	स्वाद	सार	आनंद
7.	श्यामा	राधा	स्त्री	यमुना

रोचक कार्य

स्वयं करें।

17 एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द

अभ्यास

क. 1. भ्रम 2. आदेश 3. आविष्कार

ख. 1. पुरस्कार अच्छे कार्य का इनाम
पारितोषिक प्रतियोगिता में जीतने पर दिया गया इनाम
2. भ्रमण घूमना-फिरना
पर्यटन घूमने की इच्छा से देश-विदेश में जाना
3. अनुरोध आग्रहपूर्वक विनती करना
प्रार्थना विनयपूर्वक निवेदन करना
4. अज्ञ मूर्ख, जिसे कुछ ज्ञान न हो
अनभिज्ञ जिसे किसी विशेष तथ्य की जानकारी न हो।

ग. 1. अभिमान 2. ग्रंथ 3. ईर्ष्या 4. अनिवार्य

घ. 1. श्रम मानसिक बोझ हल्का करने के लिए शारीरिक श्रम से बढ़कर और कोई उपाय नहीं है।
परिश्रम परिश्रम से ही सफ़लता मिलती है।
2. पुत्र राजू शर्माजी का पुत्र है।
बालक यह बालक बहुत चतुर है।
3. आज्ञा हमें बड़ों की आज्ञा माननी चाहिए।
आदेश न्यायालय ने पुलिस को आदेश दिया, कि वह चोर को तीन दिन में पकड़े।
4. अवस्था मेरी अवस्था अभी ठीक नहीं है।
आयु उसकी आयु बहुत कम है।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

18 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

अभ्यास

क. 1. अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त एक शब्द, 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' कहलाता है।
2. भाषा की संक्षिप्तता व गति लाने के लिए हम कई बार अनेक शब्दों के लिए एक शब्द अथवा वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग करते हैं। इसके प्रभाव से लेखन अधिक प्रभावकारी हो जाता है।

ख. 1. वाचाल 2. अनादि 3. अपराह्न 4. कुशाग्रबुद्धि

ग. 1. कामचोर 2. सुलभ 3. दूरदर्शी 4. अनश्वर

घ. 1. जो उपकार मानता हो। 2. जिसे प्राप्त करना कठिन हो।
3. जिसकी आयु लंबी हो। 4. किसी प्रसिद्ध कुल का व्यक्ति।
5. जो पंद्रह दिन में एक बार होता हो।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

19 श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

अभ्यास

क. 1. चिर 2. सुत 3. मूल्य 4. निर्जर 5. वदन

ख. 1. तप 2. अन्य 3. योग्य 4. लक्ष्य 5. मात्र

ग. 1. नीर पान 2. प्रसाद भगवान का भोग 3. जरा बुढ़ापा
नीड़ घोंसला प्रासाद महल ज़रा थोड़ा
4. ओर तरफ़ 5. तरंग लहर 6. ग्रह नक्षत्र
और अलावा/तथा तुरंग घोड़ा गृह घर

रोचक कार्य

स्वयं करें।

20 उपसर्ग

अभ्यास

क. 1. नकार + आत्मक 2. सम् + पूर्ण 3. पुनः + मिलन
4. अति + अधिक 5. दुष् + प्रभाव

ख. 1. इत्यादि इत्य 2. सहानुभूति सह् 3. निष्ठुर निस्
4. सद्वृत्ति सद् 5. प्रयत्न प्र 6. अनुशासन अनु
7. स्वाधीन स्व 8. असहयोग अ

ग. 1. निस निस्संदेह निस्संतान 2. भर भरपूर भरमार
3. प्र प्रभाव प्रहार 4. बिन बिनकहे बिनब्याहा
5. अप बुरा हीन 6. औ औज़ार औगुन
7. नि निहत्था निडर 8. कु कुदिन कुचाल

घ.	**उपसर्ग**	**शब्द**	**उपसर्गयुक्त शब्द**	**उपसर्ग**	**शब्द**	**उपसर्गयुक्त शब्द**
	प्रति	शोध	प्रतिशोध	वि	जय	विजय
	कु	चाल	कुचाल	कम	उम्र	कमउम्र
	सर	पंच	सरपंच			

रोचक कार्य

स्वयं करें।

21 प्रत्यय

अभ्यास

क. 1. शब्दों के अन्त में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं।

2. कृत प्रत्यय क्रिया के धातु रूप में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करता है, तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण व अव्यय के अंत में लगते हैं।

3. कृत प्रत्यय के पाँच प्रकार हैं – कर्तृवाचक, कर्मवाचक, करणवाचक, भाववाचक व क्रियावाचक।

तद्धित प्रत्यय आठ प्रकार के होते हैं–भाववाचक, कर्तृवाचक, संबंधवाचक, लघुतावाचक, क्रमवाचक, गुणवाचक, स्त्रीलिंगवाचक तथा बहुवचनवाचक।

ख. 1. भाववाचक 2. भिखारी 3. दर्शनीय

ग.

1.	ईय	प्रार्थनीय	दर्शनीय	2.	ईन	नमकीन	रंगीन
3.	आपा	मोटापा	बुढ़ापा	4.	आरी	भिखारी	पिचकारी
5.	आइन	गुरुआइन	पंडिताइन				

घ.

1.	पूजा	पूजनीय	पूजारी	पूजक
2.	सुंदर	सुंदरता	सुंदरी	सुंदरवन
3.	ग्राम	ग्रामीण	ग्रामवासी	ग्रामसभा
4.	उदार	उदारता	उदारपूर्ण	उदारपन
5.	चाल	चालाकी	चालक	चालू

ङ.

1.	रामचरण की पत्नी झगड़ालू स्वभाव की थी।	झगड़ा	आलू
2.	सुबह चारों ओर लालिमा फैल जाती है।	लाली	मा
3.	जनता की अवासीय समस्या बहुत बड़ी है।	आवास	ईय
4.	गरीबी का प्रमुख कारण महँगाई है।	मँहगा	ई
5.	हम शीघ्रता से आगे बढ़े।	शीघ्र	ता

रोचक कार्य

स्वयं करें।

22 समास

अभ्यास

क. सोचो और बताओ–

1. परस्पर संबध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
समस्तपद के दोनों पदों को अलग करके परिभाषित करने की प्रक्रिया समास–विग्रह कहलाती है।

2. समास की प्रक्रिया द्वारा बने पद समस्तपद कहलाते हैं।

सोचो और लिखो-

1. समास के प्रमुख छह भेद हैं-

समास के भेद	**उदाहरण**	
तत्पुरुष समास	धनहीन	धन से धन
कर्मधारय समास	मृगनयन	मृग के समान नयन
द्विगु समास	नवरात्र	नौ रात्रियों का समूह
अव्ययीभाव समास	भरपेट	पेट भरकर
द्वंद्व समास	चाय-कॉफी	चाय या कॉफी
बहुब्रीहि समास	त्रिलोचन	तीन हैं लोचन जिसके

2. द्विगु समास में पूर्व पद संख्यावाची व उत्तरपद विशेष्य होता है। दोनों पद मिलकर समूह का बोध करवाते हैं। इनमें उत्तर पद प्रधान होता है।
   द्वंद्व समास में दोनों ही पद प्रधान होते हैं तथा दोनों पद जोड़े के रूप में योजक चिह्न द्वारा जुड़े होते हैं। समास-विग्रह करते समय समुच्चयबोधक अव्ययों और 'एवं', 'तथा' आदि का प्रयोग होता है। समस्त पद बनाते समय इन समुच्चयबोधकों का लोप हो जाता है।
3. कर्मधारय समास में विशेषण - विशेष्य अथवा उपमेय-उपमान का संबंध होता है। इसमें उत्तर पद प्रधान होता है।
   बहुब्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद की ओर संकेत करते हैं व अन्य पद ही प्रधान होता है।

ख. 1. अव्ययीभाव 2. द्वंद्व 3. बहुब्रीहि 4. बहुब्रीहि
5. द्विगु 6. द्विगु 7. अव्ययीभाव

ग.

1.	पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट	तत्पुरुष समास
2.	महात्मा	महान आत्मा	कर्मधारय समास
3.	राजपुत्र	राजा का पुत्र	तत्पुरुष समास
4.	सत्यासत्य	सत्य या असत्य	द्वंद्व समास
5.	सद्धर्म	सत् है जो धर्म	कर्मधारय समास
6.	पंचवटी	पाँच वटों का समूह	द्विगु समास

घ.

	समस्तपद	**समास-भेद**		**समस्तपद**	**समास-भेद**
1.	पंच तंत्र	द्विगु समास	2.	संसार-सागर	तत्पुरुष समास
3.	चक्रपाणि	बहुब्रीहि समास	4.	दुरमती	कर्मधारय समास
5.	शुभागमन	कर्मधारय समास			

ङ.

1.	दशानन	द्विगु	दस आननों का समूह	बहुब्रीहि	दस हैं सिर जिसके-रावण
2.	चतुर्मुख	द्विगु	चार मुखों का समूह	बहुब्रीहि	चार मुख हैं जिसके
3.	त्रिनेत्र	द्विगु	तीन नेत्रों का समूह	बहुब्रीहि	तीन नेत्र हैं जिसके शिवजी

रोचक कार्य

स्वयं करें।

23 पद-परिचय

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. वाक्यों में प्रयुक्त शब्दों को पद कहते हैं।
2. वाक्यों में प्रयुक्त पदों का व्याकरणिक परिचय पद-परिचय कहलाता है।

सोचो और लिखो-

1. वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को पद कहा जाता है, क्योंकि जब शब्दों को वाक्य में प्रयोग किया जाता है, तो वह व्याकरणिक नियमों से बँध जाते हैं।
2. पद -परिचय में संज्ञा शब्द का परिचय भेद, लिंग, वचन, कारक व क्रिया के आधार पर किया जाता है।

ख. 1. संख्यावाचक विशेषण 2. संबंधबोधक 3. क्रिया 4. समुच्चयबोधक

ग. 1. संबंधबोधक 2. क्रिया 3. विशेषण

रोचक कार्य

स्वयं करें।

24 वाक्य-रचना

अभ्यास

क. सोचो और बताओ-

1. शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।
2. वाक्य बनाते समय ध्यान रखना चाहिए, कि वाक्य में प्रयुक्त सभी शब्द व्याकरण के नियमों के अनुसार सही क्रम में होने चाहिए।

सोचो और लिखो-

1. वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं। उददेश्य मुख्यतः कर्त्ता होता है।
   वाक्य में उददेश्य के बारे में जो कुछ बताया जाए उसे विधेय कहते हैं।
2. विधेय के विस्तार में क्रिया, क्रिया का पूरक, कर्म, कर्म का विस्तार, क्रियाविशेषण आदि सम्मिलित होते हैं।
3. संयुक्त वाक्यों में दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य समानाधिकरण समुच्चबोधकों (और, तथा, परंतु, किंतु, लेकिन, अथवा, या आदि) से जुड़े होते हैं।
   मिश्रित वाक्यों में एक प्रधान उपवाक्य व अन्य उस पर आश्रित उपवाक्य होते हैं।
4. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं - विधानवाचक वाक्य, निषेधवाचक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, आज्ञावाचक वाक्य, संदेहवाचक वाक्य, संकेतवाचक वाक्य, इच्छावाचक वाक्य और विस्मयादिवाचक वाक्य।

ख. 1. उद्देश्य 2. संयुक्त वाक्य 3. संदेहवाचक
4. विधानवाचक 5. आज्ञावाचक

ग. 1. सवेरा हुआ और किसान खेतों में पहुँच गए।
2. मैं अभिनेता बनना चाहता था, किंतु शिक्षक बन गया।
3. मोर नाच रहा है और मोरनी देख रही है।
4. शिक्षक कक्षा में आए और पढ़ाना शुरू किया।
5. आप शांत हो जाइए तथा चुपचाप बैठ जाइए।

घ.

	उद्देश्य	**विधेय**
1.	तीव्र गति से उड़ने वाले विमान	पर हम सवार हो गए।
2.	परिश्रम करने वाले विद्यार्थी	सदा सफ़ल होते हैं।
3.	हँसमुख बातूनी आदित्य	सबका प्यारा है।
4.	पेड़ पर बैठी चिड़िया	भूखी-प्यासी लग रही थी।

ङ. 1. इच्छावाचक वाक्य 2. संदेहवाचक वाक्य 3. आज्ञावाचक वाक्य
4. विधानवाचक वाक्य

रोचक कार्य

स्वयं करें।

25 विराम-चिह्न

अभ्यास

क. 1. लिखते समय अपने कथन को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।
2. उद्धरण चिह्न का प्रयोग किसी के उपनाम, रचना या पुस्तक के शीर्षक के साथ तथा किसी व्यक्ति की बात को ज्यों का त्यों रखने के लिए किया जाता है।
3. मनोभावों को प्रकट करने के लिए विस्मयादिबोधक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।
4. शब्द-युग्मों, पुनरुक्त शब्दों, सामासिक पदों तथा तुलनात्मक शब्दों के मध्य प्रयुक्त चिह्न योजक चिह्न कहलाता है। जैसे रात-दिन, सुख-दु:ख।
वाक्यों में उदाहरण देने या निर्देश देने के लिए निर्देशक चिह्न प्रयोग होता है। इसका प्रयोग संवाद-लेखन अथवा किसी के उद्घृत कथन को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। जैसे - संज्ञा के तीन भेद होते हैं- व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक।
5. वाक्यों के बीच में थोड़ी देर रुक कर अपनी बात स्पष्ट करने के लिए हम जिस चिह्न का प्रयोग करते है, उसे अल्पविराम कहते हैं। पूर्ण विराम से कम तथा अल्पविराम से अधिक देर रूकने के लिए लगाए जाने वाले चिह्न को अर्धविराम चिह्न कहते हैं।

ख. 1. विवरण चिह्न 2. इकहरा उद्धरण चिह्न 3. लाघव चिह्न
4. उद्धरण चिह्न

ग. 1. "पूरी सेना दो कदम आगे बढ़ गई!"
2. न्यायमंत्री ने आदेश दिया, "सैनिक! सम्राट अशोक को गिरफ़्तार कर लिया जाए।"
3. यह उत्पात किसने किया है?
4. वेद, पुराण, उपनिषद और गीता हमारे धर्मग्रंथ नहीं हैं।

घ. 1. हमें घर जल्दी पहुँचना है; घर भी जाना है।
2. ओह! हम यह मैच हार गए।
3. संज्ञा के तीन भेद है – व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक।
4. डा॰ शर्मा के पास हर बीमारी का इलाज है।
5. सीमा, रेखा और मोनिका अच्छे मित्र है।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

26 अलंकार

अभ्यास

क. 1. अलंकार काव्य के सौंदर्य को बढ़ाने वाले शोभा कारक तत्व हैं।
2 जिस प्रकार आभूषण हमारे शारीरिक सौंदर्य को बढ़ाते हैं, उसी प्रकार भाषा में अलंकार भाषिक सौंदर्य को बढ़ाकर शब्दों और अर्थों में चमत्कार उत्पन्न करते हैं।
3. जब काव्य में शब्दों के प्रयोग द्वारा चमत्कार उत्पन्न होता है, तो उसे शब्दालंकार कहते हैं। जब काव्य में अर्थ के द्वारा चमत्कार उत्पन्न होता है, तो उसे अर्थालंकार कहते हैं।
4. जहाँ किसी वर्ण की बार-बार आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

ख. 1. श्लेष अलंकार 2. अनुप्रास अलंकार 3. उत्प्रेक्षा अलंकार
4. यमक अलंकार

ग. 1. बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डुबों, तारा-घट ऊषा नगरी।
2. चिरजीवी जोरी जुरे क्यों न स्नेह गंभीर।
को घटि ये वृष भानुजा, वे हलधर के बीर।
3. जन रंजन मंजन दनुज मनुज रूप सुर भूप।
विश्व बदर इव धृत उदर जीवत सोवत सूप।
4. कनक-कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय,
वा खाये बौराय नर, वा पाये बौराय।

घ. 1. अनुप्रास अंलकार और उपमा अलंकार 2. अनुप्रास अलंकार
3. रूपक अलंकार 4. अनुप्रास अलंकार 5. उपमा अलंकार

रोचक कार्य

स्वयं करें।

27 अशुद्धि-शोधन

अभ्यास

क. 1. शुद्ध भाषा का ज्ञान न होने के कारण वाक्य में अशुद्धि हो सकती हैं।
2. अशुद्ध उच्चारण के कारण ही हम लिखने में भी अशुद्धियाँ करते हैं।
3. हम आपके घर चले जाएँगे।

ख.

1.	गृहीणी	गृहिणी ✓	गृहीणी
2.	पांच	पाच	पाँच ✓
3.	लड़ाई✓	लडाई	लड़ाइ
4.	स्वास्थ्य ✓	स्वास्थ	स्वासथ्य
5.	हाथिनी	हथिनी ✓	हथिनि

ग.

1.	रूपए रुपए	2.	कवियित्री कवयित्री	3.	मिठाईयाँ मिठाइयाँ
4.	व्यवहारिक व्यवहारिक	5.	महतव महत्तव	6.	श्रीमति श्रीमती
7.	प्राकृति प्रकृति	8.	मोहदय महोदय	9.	उज्जवल उज्जवल

घ. 1. सभी बड़ों को मेरा सादर प्रणाम।
2. दूसरों की आलोचना मत करो।
3. दीवार पर लिखकर उसे गंदा मत करो।
4. बर्षा में विष फैलाने वाले कीड़े होते हैं।

ङ. 1. तुम्हें हमसे क्या लेना-देना?
2. मुझे खाना चाहिए।
3. फूलों की एक माला दो।
4. माँ, आइए खाना खा लीजिए।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

28 मुहावरे व लोकोक्तियाँ

अभ्यास

क. 1. मुहावरे वाक्यांश होते हैं, जो सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ का बोध करवाते हैं।
2. मुहावरे वाक्यांश होते हैं।
मुहावरे अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ का बोध करवाते हैं।
मुहावरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता।
3. लोकोक्ति लोक अनुभव पर आधारित होती है।
4. मुहावरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता, परंतु लोकोक्ति का प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है।

ख.

1.	आसान कार्य	2.	मार डालना	3.	हर समय पढ़ने वाला
4.	तैयारी करना	5.	बहुत क्रोध करना		

ग.

1.	धोखा देना	2.	साफ़ इंकार करना	3.	बहाने बनाना
4.	भारी विपत्ति आना	5.	बहुत प्यारा		

घ. 1. पुरस्कार पाने पर वह लड़की फूलकर कुप्पा हो गई।
2. चोरी करने के अपराध में पकड़े जाने पर, उसका सिर शर्म से झुक गया।
3. खुशी का समाचार सुनकर उसके रोम-रोम हँस पड़े।
4. वह किसी की बात नहीं करता, वह तो अपनी खिचड़ी अलग पकाता है।
5. राम कौशल्या की आँखों का तारा थे।

ङ. 1 गलती तो मोहन की भी थी, एक हाथ से ताली नहीं बजती।
2. नाम तो रखा है सरस्वती पर पढ़ने-लिखने में बिल्कुल शून्य।
3. उन्हें नृत्य की महिमा के बारे में कुछ नहीं पता, बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।
4. एक बार पास हो जाने पर इतना मत इतराओ। यह तो चार दिन की चाँदनी है, फिर अँधेरी रात।
5. मेरे पास थोड़े ही पैसे थे, वे भी चोरी हो गए। कंगाली में आटा गीला हो गया।

च. 1. एक हाथ से ताली नहीं बजती। 2. जल में रहकर मगर से बैर।
3. भैंस के आगे बीन बजाना। 4. साँच को आँच नहीं।
5. ऊँची दुकान, फ़ीका पकवान।

रोचक कार्य

स्वयं करें।

29 अपठित गद्यांश

अभ्यास

1. गद्यांश - 1

1. बंगाली भाषा में 2. रवींद्रनाथ टैगोर 3. 27 दिसंबर 1911 को
4. जन-गण-मन 5. निश्चयवाचक सर्वनाम 6. 52 सैकेंड

2. गद्यांश - 2

1. लोकोक्ति 2. दूसरों को उपदेश देना 3. स्वयं पालन करना चाहिए
4. विधानवाचक 5. भी

3 गद्यांश - 3

1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से 2. गणितज्ञ 3. इस दिन सृष्टि की रचना हुई
4. गुडी पडवा 5. सूर्य + उदय 6. अंत

4. गद्यांश - 4

1. मध्यकाल में 2. आगे बढ़ रही हैं 3. विशेष सम्मान
4. स्थिति 5. योजन चिह्न

5. गद्यांश - 5

1. 1930 में 2. चार साल बाद 3. 1978 के बाद
4. संख्यावाचक विशेषण 5. कर्त्ता कारक

30 अपठित पद्यांश

अभ्यास

1. पद्यांश – 1

1. उत्प्रेक्षा 2. तन का काँपना 3. इत 4. अग्नि
5. समय का 6. प्रलय + अर्थ

2. पद्यांश – 2

1. बाल हठ का 2. मिट्टी के 3. निपात 4. द्वित्व
5. योजक चिह्न 6. तत्पुरुष

3 पद्यांश – 3

1. कर्मशील 2. अपने कार्यों से 3. निश्चयवाचक सर्वनाम
4. दूसरों 5. वर्तमान काल 6. बातें

4. पद्यांश – 4

1. अंग्रेज़ों के लिए 2. जोश 3. बीते दिन 4. विशेषण
5. सार्वनामिक विशेषण 6. बहादुरी

31 संवाद-लेखन

अभ्यास

1. गृहिणी व नौकरानी के मध्य संवाद

गृहिणी – मंजरी! यहाँ आओ। यह सब क्या है?
नौकरानी (मंजरी) – जी मालकिन बताइए।
गृहिणी – घर में कितनी गंदगी हो रखी है। तुम पूरा दिन क्या करती हो?
नौकरानी – मालकिन मैंने तो सफ़ाई की थी। शायद यह जगह रह गई होगी।
गृहिणी – ठीक है, अब साफ़ कर दो!
नौकरानी – जी मालकिन अभी कर देती हूँ। आगे से ऐसा नहीं होगा।
गृहिणी – कोई बात नहीं, लेकिन ध्यान से काम किया करो।
नौकरानी – जी मालकिन, मैं ध्यान रखूँगी।

2. ग्राहक व विक्रेता के मध्य संवाद

ग्राहक – मुझे एक कमीज़ खरीदनी है।
विक्रेता – आपको कैसी कमीज़ चाहिए?
ग्राहक – मुझे एक सूती कमीज़ चाहिए।
विक्रेता – यह देखिए, यह माल आज ही आया है।
ग्राहक – यह कितने का है?

विक्रेता – यह एक हज़ार रुपये का है।
ग्राहक – यह बहुत मँहगा है।
विक्रेता – यह कपड़ा बहुत अच्छा है। आप नौ सौ रुपये दे दीजिए।
ग्राहक – क्या आप क्रेडिट कार्ड स्वीकार करते हैं?
विक्रेता – जी करते है, लाइए मैं यह कमीज़ पैक कर देता हूँ, और बातइए आपको और क्या चाहिए?
ग्राहक – बस इतना ही, धन्यवाद।
विक्रेता – फिर आइएगा।
ग्राहक – ज़रूर।

3. बहुत दिनों बाद मिले दो दोस्तों के मध्य संवाद

राम – श्याम! तुम कैसे हो?
श्याम – मैं ठीक हूँ, तुम सुनाओ कैसे हो? क्या हो रहा है आजकल?
राम – मैं ठीक हूँ। आजकल मैं डाक टिकट इकट्ठी कर रहा हूँ।
श्याम – बढ़िया है। क्या तुम इसे एलबम में चिपकाओगे?
राम – हाँ मैंने टिकट के लिए अलग से एलबम बनाया है।
श्याम – अच्छा, तो फिर तुम्हारे पास ज़्यादातर सभी देशों के टिकट होंगे?
राम – हाँ, मेरे पास ज़्यादातर सभी देशों की टिकट हैं।
श्याम – तो क्या इनमें मँहगी टिकटें भी हैं?
राम – हाँ, इनमें कुछ काफ़ी मँहगी टिकटें भी हैं।
श्याम – परंतु टिकट संग्रह करने के क्या फायदे हैं?
राम – यह मेरा शौक है। यह मुझे भूगोल पढ़ने में भी मदद करती है।
श्याम – बहुत अच्छा।
राम – तुम्हारा क्या शौक है?
श्याम – मेरा शौक जंगली फूल संग्रह करना है।
राम – तुम उनसे क्या करते हो?
श्याम – मैं उन्हें कागज़ पर चिपकाता हूँ, फिर उनका नाम लिख देता हूँ।
राम – तुम्हारे शौक के क्या फायदे हैं?
श्याम – मेरा शौक मुझे वनस्पति विज्ञान में मदद करता है।
राम – तुमसे मिलकर अच्छा लगा। फिर मिलते हैं।
श्याम – मुझे भी। हम जल्दी ही मिलेगें।
राम – हाँ ज़रुर! अलविदा श्याम।
श्याम – अलविदा।

4. पिता व पुत्र के मध्य संवाद

पिता – बेटा अशोक, कैसे हो?
पुत्र – मैं ठीक हूँ पिताजी।

पिता – परीक्षा की तैयारी कैसी चल रही है?

पुत्र – अच्छी चल रही है। अब तो बस पूर्वालोकन चल रहा है।

पिता – बहुत अच्छी बात है। समझ कर सवाल हल करना।

पुत्र – जी पिताजी। मैंने गणित के सभी फॅार्मूले याद कर लिए हैं और सभी फॅार्मूलों के 10–10 सवाल भी हल कर लिए हैं।

पिता – बहुत अच्छा! सभी सामग्री पेन, पेंसिल और ज्यामिति बॉक्स तैयार कर लो।

पुत्र – जी पिताजी, मुझे जो सवाल आँएगे मैं पहले वही हल करूँगा और समय का ध्यान रखते हुए सब कुछ करूँगा।

पिता – हाँ समय का प्रबंध बहुत ज़रुरी है। मोबाइल का प्रयोग भी बंद कर दो, कुछ दिनों के लिए। यह तुम्हारी एकाग्रता के लिए बहुत ज़रूरी है।

पुत्र – ठीक है पिताजी! जैसा आप कहें।

पिता – अब सो जाओ। परीक्षा केन्द्र जाते समय प्रवेश पत्र भूलना मत।

पुत्र – जी पिताजी! शुभ रात्रि।

5. स्वच्छता अभियान पर अध्यापक व छात्रों के मध्य संवाद

अध्यापक – आजकल हमारे पर्यावरण की सबसे बड़ी समस्या क्या है?

विद्यार्थी – पर्यावरण का प्रदूषण आजकल की एक गंभीर समस्या है।

अध्यापक – इसका क्या कारण है?

विद्यार्थी – मानव द्वारा प्रकृति का अनुचित उपयोग।

अध्यापक – किस तरह से मनुष्य पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं?

विद्यार्थी – कार, बस, ट्रक, रेल व कारखानों का धुँआ वायु को प्रदूषित करता है। नदियों व अन्य जलाशयों में कूड़ा डालकर मनुष्य जल को प्रदूषित करता है। वह मिट्टी में अनुचित रसायनों को विलीन होने देता है, जिससे मिट्टी प्रदूषित होती है।

अध्यापक – विद्यार्थी इस प्रदूषण को रोकने में क्या सहायता कर सकते हैं?

विद्यार्थी – विद्यार्थी धुँआ उत्पन्न करने वाले वाहनों के स्थान पर स्कूल जाने के लिए साइकिल का उपयोग कर सकते हैं। सब जगह ख़ासतौर पर नदियों के जल में कूड़ा फेकनें की आदत छोड़कर प्रदूषण कम करने में सहायता कर सकते हैं। इसी प्रकार हम स्वच्छता अभियान में भी सहयोग दे सकते हैं।

अध्यापक – अवश्य! स्वच्छता अभियान द्वारा हम देश को स्वच्छ बनाने में अपना हाथ बँटा सकते हैं।

32 विज्ञापन–लेखन

अभ्यास

स्वयं करें।

34 पत्र–लेखन

अभ्यास

1. सेवा में

अध्यक्ष महोदय
दिल्ली नगर निगम
नई दिल्ली

महोदय,

मैं चिल्ला गाँव का निवासी हूँ। हमारी कॉलोनी से कहीं के लिए भी सीधी बस सेवा में नहीं है। हमें बस पकड़ने के लिए यहाँ से 2 किलोमीटर पैदल चलकर कोटला या फिर मयूर विहार फेस–1जाना पड़ता है। यहाँ से अनेक यात्री सुबह अपने अपने कार्यालय जाते हैं, बच्चे स्कूल जाते हैं। स्कूल भी मयूर विहार में है। प्रतिदिन सुबह–शाम इतनी दूर पैदल चलना कठिन है। इससे यहाँ के निवासियों को बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। शशि गार्डन के साथ ही लगी हुई कालोनी आचार्य निकेतन में भी बस सुविधा नहीं है। अत : आपसे निवेदन है, कि यहाँ से कोई नया बस रूट शुरू किया जाए। यदि नियमित बस रूट प्रारम्भ करना संभव न हो, तो सुबह–शाम कार्यालय के समय तो अतिरिक्त बस सेवा शीघ्र शुरू करवा दें।

भवदीय
अ ब स

2. क ख नगर
नई दिल्ली

दिनांक – 4 मार्च 20.....

प्रिय मित्र,

मैं तुम्हें यह पत्र स्वच्छता का महत्त्व बताने के लिए लिख रहा हूँ। स्वच्छता रखना ज़रूरी है, क्योंकि अगर हम स्वच्छ नहीं रहेंगे, तो कई तरह की बीमारियाँ हमारे आसपास फैलेंगी। जैसे कि मलेरिया, जो गंदे पानी से फैलता है और भी कई तरह के रोग फैलते हैं। इसलिए हमारे प्रधानमंत्री भी इस विषय पर काम कर रहें हैं। स्वच्छ भारत अभियान चलाया जा रहा है। अगर हम हमारे आसपास की जगहों को साफ़ रखेंगे, तो बीमारियाँ नहीं फैलेंगी और हम स्वच्छ भारत अभियान को सफ़ल बना पाएँगें।

तुम्हारा मित्र
रवि

3. सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
क ख ग विद्यालय
विकास नगर, नई दिल्ली
विषय : ठंडे पानी की उचित व्यवस्था कराने हेतु प्रार्थना–पत्र
महोदय,
निवेदन यह है, कि मैं कक्षा आठवीं अ का छात्र हूँ। यह गर्मी का मौसम चल रहा है। पानी के बिना रह पाना कठिन हो जाता है। हमारे विद्यालय में पिछले कई दिनों से गंदा पानी आ रहा है। यदि कभी साफ़ पानी आता भी है, तो वह इतना गर्म होता है, कि पिया नहीं जाता।
आपसे विनती है, कि शीघ्र पीने के लिए ठंडे तथा साफ़ पानी की व्यवस्था करें। आशा है, कि आप इस समस्या का जल्द से जल्द निवारण करेंगे।
सधन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य
रजनीश सिंह
कक्षा आठवीं अ

4. सेवा में
प्रधानाचार्य जी
राजकीय माध्यमिक विद्यालय
शाहगंज, आगरा
महोदय,
सविनय निवेदन है, कि मैं कक्षा पाँचवीं ब का छात्र हूँ। मेरे पिताजी काफ़ी दिनों से अस्वस्थ चल रहे हैं। पेंशन की अल्पराशि से दवा उपचार ही मुश्किल से चल पा रहा है। रोटी पानी के लिए माताजी सिलाई कर लेती हैं। परिवार के पाँच सदस्यों में इसके सिवा आय का कोई साधन नहीं है। हम तीन बहन–भाई विद्यार्थी हैं। कमर तोड़ महँगाई और अध्ययन की ओर रुचि ने आपसे निवेदन करने के लिए बाध्य कर दिया है।
मैं अभी तक सभी कक्षाओं में प्रथम आता रहा हूँ। खेल एवं निबंध प्रतियोगिताओं में भी कई पुरस्कार ले चुका हूँ। अत: आपसे प्रार्थना है, कि मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, मुझे छात्रवृत्ति प्रदान कर कृतार्थ करें। आपकी कृपादृष्टि मुझे इस दिशा में साहस प्रदान करेगी।
सधन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य
रमेश
कक्षा – पाँचवीं ब
रोल नंबर – 15

5. कीर्ति नगर
नई दिल्ली
दिनांक – 15 मई 20.....
प्रिय कमला,

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। तुम्हारी दादी जी की अकस्मात् मृत्यु की ख़बर पढ़कर अत्यंत दु:ख हुआ। तुम घर में सबसे बड़ी हो इसलिए धैर्य के साथ अपने परिवार के सदस्यों को सँभालना तुम्हारी ज़िम्मेदारी बनती है। तुम्हारी दादीजी बहुत स्नेही व दयालु स्वभाव की थीं। उनसे मुझे भी विशेष लगाव था। परंतु मृत्यु के आगे किसी का भी ज़ोर नहीं चलता। यह सब ईश्वर की इच्छानुसार होता है। हर व्यक्ति जो इस संसार में आया है, उसे एक न एक दिन तो जाना ही पड़ता है। कुछ लोग देर से जाते हैं। आगे तुम समझदार हो, पिताजी को इस दुखद परिस्थिति में धीरज देना। इस दु:ख के समय मेरा तुम्हारे पास होना बहुत आवश्यक था, लेकिन किसी कारणवश मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ। मैं छुटिटयों में तुमसे आकर मिलूँगी। सभी बड़ों को प्रणाम एवं छोटों को प्यार कहना।

तुम्हारी सखी
अरूणा

6. परीक्षा भवन
दिनांक – 18 दिसम्बर 20.....
पूज्य पिताजी
सादर चरण स्पर्श!

आपका प्यार भरा पत्र 24 दिसंबर को प्राप्त हुआ था। सभी समाचार ज्ञात हुए। पत्र का उत्तर शीघ्र न दे सका। कृपया क्षमा करें। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि इस बार परीक्षा में मैं प्रथम स्थान पर आया हूँ। मैनें सभी विषयों पर 97% अंक प्राप्त किए हैं। मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मैं पूरी कोशिश करूँगा, कि अगली परीक्षा में भी मैं इसी प्रकार से अंक लाऊँ। घर में सभी को मेरे अंको के बारे में बता दीजिएगा।

पूज्य माताजी को चरण स्पर्श और वर्तिका को शुभकामनाएँ।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
रोहन

35 अनुच्छेद-लेखन

अभ्यास

1. **शिक्षा का महत्त्व**

जीवन में आगे बढ़ने और सफ़लता प्राप्त करने के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है। यह आत्मविश्वास विकसित करती है और एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में मदद करती है।

स्कूली शिक्षा सभी के जीवन में महान भूमिका निभाती है। पूरे शिक्षा तंत्र को तीन भागों में बाँटा गया है, जैसे प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च माध्यमिक शिक्षा सभी शिक्षा के भाग अपना एक विशेष महत्त्व और लाभ रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा विद्यार्थियों को आधार प्रदान करती है, जो जीवनभर मदद करती है, माध्यमिक शिक्षा आगे की पढ़ाई का मार्ग है और उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरे जीवन में, भविष्य में आगे बढ़ने का। हमारी अच्छी और बुरी शिक्षा यह निर्धारित करती है, कि हम भविष्य में किस प्रकार के व्यक्ति बनेंगे।

2. शिष्टाचार

शिष्ट या सभ्य पुरुषों का आचरण शिष्टाचार कहलाता है। दूसरों के प्रति अच्छा व्यवहार, घर आने वाले का आदर करना, आवभगत करना बिना द्वेष ओर निःस्वार्थ भाव से किया गया सम्मान शिष्टाचार कहलाता है। शिष्टाचार से जीवन महान बनता है। हम लघुता से प्रभुता की ओर, संकीर्ण विचारों से उच्च विचारों की ओर, स्वार्थ से उदार भावों की ओर, अंहकार से नम्रता की ओर घृणा से प्रेम की ओर जाते हैं। शिष्टाचार का अकुंर बच्चे के हृदय में बचपन से बोया जाता है। छात्र जीवन में यह धीरे-धीरे विकास की ओर अग्रसर होता है। शिष्टाचार का पालन करने वाला व्यक्ति स्वच्छ निर्मल और दुर्गुणों से परे होता है। व्यक्ति की कार्यशैली भी उसमें शिष्टाचार के गुणों को उत्पन्न करती है। सामान्यतः शिष्टाचारी व्यक्ति अध्यात्म के मार्ग पर चलने वाला होता है।

3. मेरी प्रिय ऋतु

मेरी प्रिय ऋतु शरद ऋतु है। शरद या शीत ऋतु का आगमन वर्षा ऋतु के पश्चात् होता है। शीत ऋतु भारत की मुख्य ऋतुओं में से एक ऋतु है। शरद ऋतु नवंबर से लेकर फरवरी के बीच तक रहती है। शरद ऋतु अपने साथ त्यौहारों की बहार लेकर आती है। दीपावली, दशहरा, नवरात्र, दुर्गा पूजा, भईया दूज, क्रिसमस आदि इस ऋतु में आने वाले प्रमुख भारतीय त्योहार हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह ऋतु उत्तम होती हैं, क्योंकि इस ऋतु में पाचन शक्ति मज़बूत होती है। शरद ऋतु में दिन छोटे व रातें बड़ी हो जाती हैं। शरद ऋतु के माध्यम से पूरा भारत सर्दी के कारण ठिठुरने लगता है। लोग अपने-अपने घरों में ऊनी कपड़े व रजाई निकाल लेते हैं। सुबह-सवेरे कोहरे का आतंक छाया रहता है। रेल यात्रा और हवाई यात्राओं पर इसका खास असर दिखाई पड़ता है।

4. भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार से व्यक्ति सार्वजनिक संपत्ति, शक्ति और सत्ता का गलत इस्तेमाल अपनी आत्म संतुष्टि और निजी स्वार्थ की प्राप्ति के लिये करता है। इसमें सरकारी नियम कानूनों की धज्जियाँ उड़ाकर फ़ायदा पाने की कोशिश होती है। भ्रष्टाचार की जड़ें समाज में गहराई से व्याप्त हो चुकी हैं और लगातार फैल रही हैं। यह कैंसर जैसी बीमारी की तरह है, जो बिना इलाज के खत्म नहीं होगी। इसका एक सामान्य रूप पैसा और उपहार लेकर काम करना दिखाई देता है। कुछ लोग अपने फ़ायदे के लिए दूसरों के पैसे का गलत इस्तेमाल करते हैं। सरकारी और गैर-सरकारी कार्यालयों में काम करने वाले भ्रष्टाचार में लिप्त होते हैं और साथ ही अपनी छोटी सी पूर्ति के लिए किसी भी हद तक चले जाते हैं।

5. समाचार पत्रों की उपयोगिता

आजकल, बिना समाचार पत्र के जीवन की कल्पना करना कठिन है। यह वह पहली और

आवश्यक वस्तु है, जिसे सभी हर सुबह सबसे पहले देखते हैं। यह पूरे विश्व में हो रही घटनाओं के बारे में जानकारी देकर वर्तमान समय से जुड़े रखने में हमारी मदद करता है। यह हमें इस बात की जानकारी देता है कि समाज, देश-विदेश में क्या चल रहा हैं। समाचार पत्र विश्व के हर एक कोने से प्रत्येक सूचना, ख़बर व सभी के प्रमुख विचारों को लाता है। समाचार पत्र व्यापारियों, राजनीतिज्ञों, सामाजिक मुद्दों, बेरोज़गारों, खेल, अंतर्राष्ट्रीय समाचार, विज्ञान, शिक्षा, दवाइयों, अभिनेताओं, मेलो, त्योहारों, तकनीकों आदि की जानकारी देता है, यह हमारे ज्ञान कौशल और तकनीकी जागरूकता को बढ़ाने में मदद करता है।

6. आदर्श नेता

आज के नेताओं का चरित्र आदर्श के योग्य नहीं हैं। जब हम गुलाम भारत की बात करते हैं, तो हमारे आगे हज़ारों उदाहरण प्रस्तुत हो जाते हैं, जिन्होने देश को बहुत कुछ दिया है। जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, वल्लभ भाई पटेल इत्यादि ऐसे नेता हैं। मेरे आदर्श नेता सुभाष चंद्र बोस हैं। उनके जैसा बहादुर निडर, देश के प्रति समर्पित व्यक्ति शायद ही कोई दूसरा हो। वे जब तक जीवित रहे, देश के प्रति समर्पित रहे। उन्होंने देश की आज़ादी के लिए हर संभव प्रयास किए। उनके बारे में जब पढ़ता हूँ, तो मुझे गर्व होता है। वे बुद्धिमान ही नहीं बल्कि कुशल राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने अकेले ही एक सेना का निर्माण कर लिया था। यदि वे जीवित होते, तो भारत का भविष्य कुछ और ही होता।

7. प्राकृतिक आपदा

प्रकृति द्वारा जो आपदा आती है, वह बहुत ही भव्य होती है। इसका आकार बहुत बड़ा होता है। अनेक आपदाओं में से बाढ़ और भूकंप बहुत बार आते रहते हैं। हाल ही में चेन्नई में बाढ़ आई, जिसने दक्षिण भारत को अस्त-व्यस्त करके रख दिया। इसका प्रभाव मानव जीवन पर इस तरह पड़ता है, कि मानो जीवन रुक जाता है। ट्रेन, बस, वायुसेना, टेलीफ़ोन आदि बंद हो जाते हैं। सबसे भयानक होता है-टेलीफ़ोन सेवा का बंद होना, क्योंकि सूचनाएँ मिलना और देना बंद हो जाता है। किसी तरह सरकार की सहायता से बहुत लोगों की जानें बचाई जाती हैं। इन आपदाओं में कई लोगों की मृत्यु भी हो जाती है। इन सभी प्राकृतिक आपदाओं से हमें सीखना होगा, कि हम प्रकृति पर बिना कारण बोझ नहीं डाले। नहीं तो प्रकृति का असंतुलन मनुष्य पर बहुत भारी पड़ेगा। हमें प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के उपाय सोचने चाहिए। ऐसे कार्यों को नहीं करना चाहिए, जिससे प्रकृति गुस्से में आए और बड़ा सर्वनाश कर जाए।

8. भारतीय किसान

किसान को दुनिया का अन्नदाता कहा जाता है और किसान पर ही देश की आर्थिक व्यवस्था टिकी होती है। भारत को भी एक कृषि प्रधान देश कहा जाता है। भारत में ज़्यादातर किसान गाँवों में रहते है और खेती करते हैं। भारतीय किसान कड़ी मेहनत कर अपना जीवन निर्वाह करता है। किसान बड़ा ही सादा जीवन जीता है। वह अपना सारा समय अपनी खेती को देता है। भारतीय किसान सुबह से लेकर देर शाम तक खेतों में कड़ी मेहनत करता है और वह सदा अपने काम के प्रति ईमानदारी दिखाता है। वह समाज का सच्चा सेवक हैं। किसान के सुख में ही समाज का सुख हैं। वह समाज का सच्चा सुख है। इसके कल्याण में ही देश का कल्याण होगा। हम उम्मीद करते हैं, कि भविष्य में किसान भरपूर उन्नति करेगा और देश को उस पर गर्व है।

9. मेरे जीवन का लक्ष्य

मेरे जीवन का लक्ष्य एक डॉक्टर बनने का है। जब मैं डॉक्टर बन जाऊँगा, तब लोगों की बीमारियों का इलाज करूँगा। सबको तंदुरुस्त कर दूँगा। इससे सब खुश होंगे। मैं अपने परिवार को भी तंदुरूस्त और खुश रख सकूँगा। मैं ईमानदारी से लोगों की सेवा करूँगा। मैं एक अस्पताल बनाना चाहता हूँ। उसमें मैं अपनी डॉक्टर की टीम के साथ मिलकर लोगों के रोगों का इलाज करूँगा। मैं अपने देश और मुल्क की भी सहायता करूँगा। इससे अपने देश की भी सेवा कर सकूँगा।

36 निबंध-लेखन

अभ्यास

1. आदर्श विद्यार्थी

आदर्श विद्यार्थी वह है, जो ज्ञान और विद्या की प्राप्ति को जीवन का पहला आदर्श मानता है। जिसे विद्या की चाह नहीं, वह आदर्श विद्यार्थी नहीं हो सकता, यह विद्या ही है, जो मनुष्य को नम्र, सहनशील और गुणवान बनाती है। विद्या की प्राप्ति से ही विद्यार्थी आगे चलकर योग्य नागरिक बन पाता है।

आदर्श विद्यार्थी को अच्छी पुस्तकों से प्रेम होता है। वह पुस्तक में बताई गई सभी अच्छी बातों को ध्यान में रखता है और अपने जीवन में उतार लेता है। वह अच्छे गुणों को अपनाता है और बुराइयों से दूर रहता है। उसके मित्र भी अच्छे गुणों से युक्त होते हैं।

वह अपने गुरुजनों का सम्मान करता है। आदर्श विद्यार्थी अपने चरित्र को ऊँचा बनाने का प्रयास करता हैं, वह शिक्षकों तथा अभिभावकों की उचित सलाह को सुनकर उस पर अमल करता है।

आदर्श विद्यार्थी देश के भविष्य में मददगार साबित होते हैं। वे ही बड़े होकर डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षक, पत्रकार, आईएएस, आईपीएस, वकील और फ़ौज में उच्च अधिकारी आदि बनते हैं। वे देश की सेवा करते हैं और अपने देश व परिवार का नाम ऊँचा करते हैं। यदि किसी व्यक्ति का विद्यार्थी जीवन आदर्श न रहा हो, तो उसे आगे चलकर आदर्श नागरिक बनने में काफ़ी मुश्किल हो सकती है।

आदर्श विद्यार्थी को सीधा और सच्चा होना चाहिए। उसे आलस्य नहीं करना चाहिए। परिश्रमी और लगनशील होना चाहिए। पढ़ाई के अलावा खेल कूद व अन्य गतिविधियों में भी भाग लेना चाहिए। उसे विद्यालय में होने वाली सभी गतिविधियों में भाग लेकर, अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहिए। एक आदर्श विद्यार्थी अपने लक्ष्य को हमेशा ध्यान में रखता है।

2. दैव-दैव आलसी पुकारा

कुछ लोग यह समझते हैं, कि वही होगा जो मंज़ूरे ख़ुदा होगा और अकर्मण्य बन जाते हैं। ऐसे लोग भाग्यवाद में विश्वास करते हैं और प्रयत्न से कोसों दूर रह जाते हैं। केवल आलसी लोग ही हमेशा 'दैव-दैव' करते रहते हैं और कर्मशील लोग 'दैव-दैव आलसी पुकारा' कहकर उनका उपहास करते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफ़लता कठिन परिश्रम से ही मिलती है। अकर्मण्य व्यक्ति देश, जाति समाज और परिवार के लिए एक भार बन जाते हैं। जो लोग

दूसरों का मुँह ताकते रहते है, वे पराधीन है-दास हैं। जो 'अपना हाथ जगन्नाथ' का अनुसरण करते हैं, वे ही स्वावलंबी व्यक्ति बड़े से बड़ा काम कर गुज़रते हैं।

जो पुरुष उद्यमी होते हैं, स्वावलंबी होते है, वे शेर के समान होते हैं। लक्ष्मी उन्हीं का साथ देती है। 'जो भाग्य में होगा मिल जाएगा' - यह तो डरपोक लोग मानते हैं। जो परिश्रम करेगा उसका ही भाग्य बनेगा। पंडित जवाहरलाल नेहरू का सिहंनाद 'आराम हराम है' इसी तथ्य की प्रेरणा देता है।

इतिहास में ऐसे ही स्वावलंबी पुरुषों की कहानियाँ है, जो कर्मरत रहे और जीवन में महान सफ़लताओं को प्राप्त किया। सिंकदर महान विजय का स्वप्न लेकर यूनान से बाहर निकला और कई देशों को जीतता गया। यह क्या था? पुरुषार्थ, मेहनत, प्रयत्न और प्रयास।

3. मेरी पहली रेल यात्रा

रेल यात्रा सदैव एक अविस्मणीय अनुभव होता है। मैंने रेल से अनेक बार यात्रा की, किंतु इस बार रेल-यात्रा मुझे सदैव याद रहेगी। इस वर्ष ग्रीष्मवकाश में मैं भी अपने परिवार के साथ रेल-यात्रा द्वारा दिल्ली गया। जिस दिन हम सबको दिल्ली के लिए रवाना होना था, लखनऊ में घनघोर वर्षा हो रही थी। रेलवे स्टेशन तक किसी प्रकार पहुँचने का पता चला, कि ट्रेन दो घंटे देरी से चलेगी। बाहर घनघोर बारिश हो रही थी। हम सब ट्रेन की प्रतीक्षा के लिए प्रतीक्षालय पहुँचे। प्लेटफार्म पर हर तरफ़ यात्री तेज़ी से आते जाते दिख रहे थे। बीच-बीच में फेरीवाले की आवाज़ें सुनाई दे रही थी। ट्रेन की घोषणा जैसे ही होती थी। सभी शांतिपूर्वक सुनने लगते थे। ट्रेन आने पर हम सभी अपनी अपनी सीट पर बैठ गए। मेरे साथ मेरे माता-पिता और दादी थी। कुछ ही देर में ट्रेन स्टेशन से रवाना हो गई। मैं कौतूहलवश खिड़की के पास वाली सीट पर बैठा था। बारिश अभी भी चल रही थी। ट्रेन चलने के बाद कुछ देर तक तो शहरी आबादी दिख रही थी। लोग रिक्शे, साइकिल, इत्यादि से आते-जाते दिख रहे थे एवं बारिश से बचने का प्रयास कर रहे थे। कुछ देर पश्चात् खेत-खलिहान के दृश्य दिखने लगे। हरे-भरे खेत व बाग के दृश्य मन मोह रहे थे। जगह-जगह जल भराव के कारण तालाब-पोखर जैसी स्थिति बन गई थी। आम के बागों में वृक्षों पर आम के गुच्छे लटके दिख रहे थे, जिन्हें देखकर मुँह में पानी आ रहा था। ट्रेन चलती जा रही थी। बीच-बीच में छोटे स्टेशन निकलते दिख रहे थे, जिनमें ट्रेन रुकती नहीं थी। बड़े स्टेशन आने पर ट्रेन रुकती थी। स्टेशन पर 'चाय गरम', 'पान-बीड़ी-सिगरेट', 'पूड़ी-सब्जी' एवं 'गर्म समोसे' आदि की आवाज़ें सुनाई देने लगती थी। रेल यात्रा में बाहर का दृश्य बड़ा ही मनोहारी था। कभी गाँव के छोटे-छोटे घर एवं चारों ओर फल-सब्ज़ियों के बाग दिखाई देते, तो कभी खेतों के आस-पास गाय, बकरी इत्यादि के झुंड दिख जाते। आबादी भूमि से ट्रेन के गुजरने पर छोटे-छोटे बच्चे हाथ हिलाकर बाय-बाय करते दिख जाते। रास्ते में छोटी-छोटी नहरें व नदियाँ निकलती, तो पुल पर ट्रेन की गति धीमी हो जाती थी। यमुना नदी के पुल पर ट्रेन गुज़रने के समय का दृश्य तो अत्यंत रोमांचित करने वाला था। गर्मी के मौसम में सैंकड़ों लोग नदी में नहाते व तैरते दिखाई दे रहे थे। कुछ लोग छोटी-छोटी नावों में मछली पकड़ने का काँटा लिए बैठे थे। दिल्ली शहर यमुना नदी के किनारे बसा होने के कारण नदी के पुल से ही शहर के मकान व इमारतें दिखने लगती हैं। स्टेशन पहुँचने पर हमारे पारिवारिक मित्र हमारे स्वागत के लिए स्टेशन पर उपस्थित थे। हम लोग घर पहुँचे तथा अगले दिन से दिल्ली की ऐतिहासिक इमारतों व स्मारकों का भ्रमण किया।

4. किसी मैच का आँखों देखा हाल

20-20 विश्व कप क्रिकेट का पहला आयोजन था। विश्व की कुल 12 टीमों में से चार टीमें ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका एवं भारत सेमीफाईनल में पहुँची थी। आश्चर्यजनक ढंग से पाकिस्तान ने आस्ट्रेलिया को हराया और भारत ने दक्षिण अफ्रीका को। जब भारत पाकिस्तान जैसे दो आपस में प्रतिद्वंदी, लोकप्रिय व प्रसिद्ध टीमों के बीच फाइनल हो, तो वह बेहद रोचक हो ही जाता है। विश्व कप का यह फाइनल मैच दक्षिण अफ्रीका के वांडरर्स स्टेडियम में खेला गया था। 25 सितंबर 2008 की शाम को मैच आरंभ हुआ। टीमों के साथ साथ देशवासियों ने भी मैच देखने की तैयारी पहले ही कर ली थी। जैसा कि होता है, मानो भारत में समय ठहर गया। निर्दिष्ट समय आते ही सभी की नज़रें अपने अपने टीवी पर थी। वांडरर्स का स्टेडियम भी खचाखच भरा था।

भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फ़ैसला किया। गौतम गंभीर और यूसुफ़ पठान ने पारी की शुरुआत की। तय रणनीति से खेलते हुए भारत ने अपने 20 ओवर में स्कोर 158 रन तक पहुँचाया। जब भारतीय टीम को दर्शकों ने खेलते देखा, तो सब ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर उनका हौसला बढ़ा रहे थे। वहाँ एक-एक शॉट पर तालियों की गूंज से पूरा स्टेडियम हिल रहा था और यहाँ देश में टीवी के सामने बैठे लोग झूम रहे थे। अब दर्शक बहुत ही बेसब्री से भारत की गेंदबाज़ी, फील्डिंग और पाकिस्तान की बल्लेबाज़ी, यानि मैच का अंतिम पड़ाव देखना चाहते थे। दोनो टीमों ने काँटे का संघर्ष किया और निर्णय होने से पहले मैच एकदम चरमसीमा पर पहुँच गया। आखिरी गेंद तक मैंच बेहद रोचक बना रहा। अंत में भारत की ही जीत हुई। उसने पाकिस्तान को हराकर 20-20 ओवर का पहला क्रिकेट विश्व कप अपने नाम कर लिया। फिर क्या था, देश-विदेश में ढेर सारे पटाखे फूटने लगे। ऐसा लग रहा था, मानो दिवाली दो महीने पहले ही आ गई हो। खिलाड़ियों के साथ-साथ खेल-प्रेमी भी नाचे। खिलाड़ियों को बड़े-बड़े पुरस्कार मिले। भारत ने इतिहास रचा। क्रिकेट का मुकुट एक बार फिर एशिया के माथे पर सज गया।

5. जीवन में परिश्रम का महत्त्व

विश्व में कोई भी कार्य बिना परिश्रम के सफ़ल नहीं हो सकता। वस्तुतः परिश्रम ही सफ़लता की कुंजी है। जिस प्रकार सूरज अपने प्रकाश से अंधकार को दूर भगा देता है, ठीक उसी प्रकार परिश्रम से मानव जीवन सुखमय हो जाता है और परिश्रमी व्यक्ति का भविष्य उज्ज्वल हो जाता है।

कठिन परिश्रम किए बिना किसी की उन्नति नहीं हो सकती और ना ही किसी को सुख समृद्धि प्राप्त हो सकती। यदि सामने भोजन हो, तो उसे ग्रहण करने का परिश्रम किए बिना हम उसका स्वाद भला कैसे ले सकते हैं। परिश्रम के द्वारा कठिन से कठिन कार्य संपन्न करना संभव हो जाता है। सभ्यता के विकास की कथा का निचोड़ भी यही है, कि आज की विकसित मानव सभ्यता प्राचीन लोगों के परिश्रम का फल है। संसार के सब विकसित देशों की विकास यात्रा उनके देशवासियों के कठिन परिश्रम से सम्पन्न हुई है। विश्व के सफलतम व्यक्तियों की जीवनकथा का यही संदेश है, कि उन्होंने जीवन में हर चुनौती का डटकर सामना करते हुए अथक परिश्रम किया। आलस्य उनके पास भी नहीं भटकने पाता था। वे कभी किसी के भरोसे नहीं बैठे और अपने परिश्रम के द्वारा उन्होंने असंभव को भी संभव कर दिखाया।

खम ठोक ठेलता है, जब नर पर्वत के जाते पाँव उखड़ - राष्ट्रकवि की यह पंक्ति सचमुच यथार्थ का वर्णन करती है। श्रमशील मनुष्य के आगे पहाड़ भी नहीं ठहर पाते। कठिन

झंजावातों से गुज़रता हुआ सहनशील मानव अपना रास्ता ढूँढ लेता है। जिस व्यक्ति में कुछ विशेष प्रतिभा नहीं होती, वह भी केवल धैर्यपूर्वक कठिन परिश्रम करता हुआ अपने लक्ष्य को पा लेता है।

परिश्रमी हमेशा जीवन-युद्ध में विजयी होता है। परिश्रमी विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं और इसी प्रकार कठिन परिश्रम तथा लगन से कार्य करने वाला हर व्यक्ति चाहे वह मजदूर हो या नौकरी पेशा हो या व्यापारी ही क्यों नहीं हो अवश्य ही उद्देश्य में सफ़ल होता है। संसार के और देश के बड़े-बड़े उद्योगपतियों की जीवन-कथा से ज्ञात होता है, कि उनका औद्योगिक साम्राज्य खाक से लाख और फिर अरब और खरब में केवल उनके लगन और परिश्रम के चलते पहुँचा। अपने देश में टाटा, बिरला या धीरू भाई अम्बानी सब परिश्रम से ही बड़े बने।

सच्ची लगन और निरंतर परिश्रम से सफ़लता अवश्य मिलती है। भाग्य के भरोसे बैठने वाले जीवन की हर दौड़ में पिछड़ जाते हैं और परिश्रमी अपना जीवन धन्य करते तथा सफ़लता का आंनद प्राप्त करते हैं। गरीब का जीवन सुख-सुविधाओं के अभाव में ही बीत जाता है और वे अपनी गरीबी के चलते तरक्की का हर अवसर गंवा देते है।

व्यक्ति अपनी सुविधा सामर्थ्य तथा रूचि के अनुसार साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, व्यवसाय आदि कोई भी क्षेत्र चुने, परंतु सफ़लता के लिए लगन और कठिन परिश्रम आवश्यक है। कहावत है, कि मेहनत का फल मीठा होता है। आज सचिन हो, चाहे सानिया मिर्ज़ा या फिर राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ही क्यों न हो, सबने अपना-अपना स्थान कठिन परिश्रम करके बनाया है। परिश्रम के महत्त्व पर जितना भी लिखा जाए थोड़ा है।

6. बढ़ते प्रदूषण के दुष्परिणाम

प्रदूषण एक प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दा बन गया है, क्योंकि यह हर आयु वर्ग के लोगों और जानवरों के लिए स्वास्थ्य का खतरा है। हाल के वर्षों में प्रदूषण की दर बहुत तेज़ी से बढ़ रही है, क्योंकि औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थ सीधे मिटटी, हवा और पानी में मिश्रित हो रहे। हालांकि हमारे देश में इसे नियंत्रित करने के लिए पूरा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इसे गंभीरता से निपटाने की ज़रूरत है। अन्यथा हमारी आने वाली पीढ़ी बहुत ज़्यादा भुगतेगी।

प्रदूषण प्राकृतिक संसाधनों के प्रभाव के अनुसार कई श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। जैसे कि वायु प्रदूषण, भू प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि। प्रदूषण की समस्या इंसान के अधिक पैसा कमाने के स्वार्थ और कुछ अनावश्यक इच्छाओं को पूरा करने की वजह से बढ़ रही है। आधुनिक युग में जहाँ तकनीकी उन्नति को अधिक प्राथमिकता दी जाती है, वहाँ हर व्यक्ति जीवन का असली अनुशासन भूल गया है। उपर्युक्त प्रदूषणों के कारण मानव के स्वस्थ जीवन को खतरा पैदा हो गया है। खुली हवा में साँस लेने तक को तरस गया है। गंदे जल के कारण कई बीमारियाँ फ़सलों मे चली जाती हैं, जो मनुष्य के शरीर में पहुँच कर घातक बीमारियाँ पैदा करती हैं। भोपाल गैस कारखाने में रिसी गैस के कारण हज़ारों लोग मर गए, कितने ही अपंग हो गए। पर्यावरण प्रदूषण के कारण न समय पर वर्षा आती है, न सर्दी-गर्मी का चक्र ठीक से चलता है। सूखा बाढ़ ओला आदि प्राकृतिक प्रकोपों का कारण भी प्रदूषण ही है।

विभिन्न प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए चाहिए, कि अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएँ। हरियाली की मात्रा अधिक हो। सड़कों के किनारे घने वृक्ष हों। आबादी वाले क्षेत्र खुले हों, हवादार हों, हरियाली से ओत-प्रोत हो। कल-कारखानों को आबादी से दूर रखना चाहिए और उनसे निकले प्रदूषित मल को नष्ट करने के उपाय सोचने चाहिए।